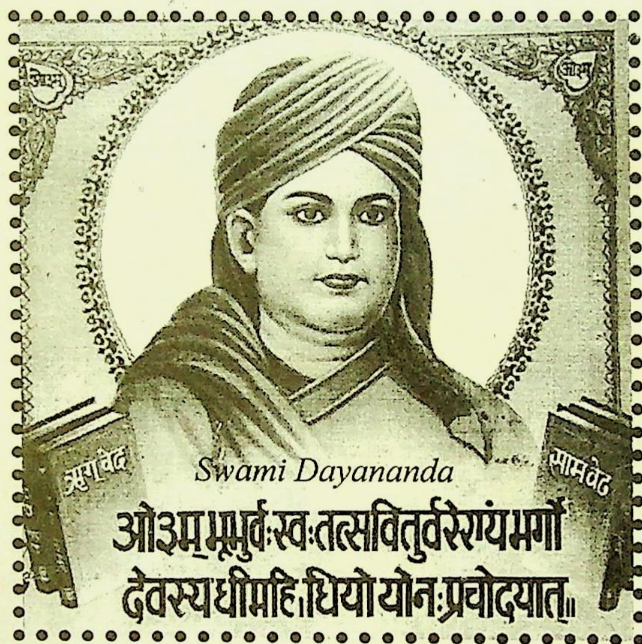
23

मोरिशस के आर्य सेवी

महर्षि दयानन्द सरस्वती



लेखक :

पं. धर्मवीर घूरा, शास्त्री, M.B.E., O.S.K.

प्रकाशक :

हिन्दी लेखक संघ

181364

15.1

~~शास्त्री - मो~~

प्रो० स्वतन्त्र कुमार
कुलपति
गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार

इन की मॉरीशस यात्रा
के दौरान सादर भेंट।
सभी विद्यार्थियों के लिए।
पं० सं० धवन
वाकवा
मारीशस
23/6/02

मेरी पत्नी सावित्री

को

प्रेम से समर्पित





15·1

दो शब्द शास्त्री मो

वचपन ही से मुझे तायाक आर्य समाज की प्राथमिक हिन्दी पाठशाला, रिव्येर-दे-जांगी हिन्दी प्रचारिणी सभा की पाठशाला, न्यू ग्रोव श्रीकृष्ण सहायक पाठशाला, सावान संगीत संघ की हिन्दी पाठशाला में और युवावस्था में बोबासें के प्रशिक्षण महाविद्यालय में छात्राध्यापक के रूप में ज्ञान प्राप्त करने का शुभावसर प्राप्त हुआ ।

युवा तथा क्रीड़ा मंत्री, माननीय दयानन्द बसन्तराय जी, पं. सुखदेव रामप्यार जी विद्यावाचस्पति, प्रो. रामप्रकाश एम.ए., डॉक्टर रामेश्वर ओरी जी पी.एछ.डी., श्री मोतीलाल बिदेशी जी, पं. सुंदर शर्मा, पं. र. कौलेशर और पं. शिवलगन बहोरन जी ने मुझे निशुल्क शिक्षा देकर तरक्की करने का मौका दिया, जिस के लिए मैं उन के प्रति कृतज्ञ हूँ ।

सन् १९५१ से लेख, कहानियाँ, कविताएँ, रूपक, प्रहसन आदि लिखने की रुचि जागृत हुई । मेरे लिए गौरव की बात यह है कि जनता, आर्योदय, समाजवाद, दिवाली-संदेश, नव जीवन, वर्त्तमान, अनुराग, दर्पण और बाल सखा आदि हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं ने मेरी रचनाओं को उचित स्थान देते हुए हमेशा से मेरा हौसला बढ़ाया, जिस के लिए उन संपादक महानुभावों के प्रति अपना आभार प्रगट कर रहा हूँ । स्थानीय प्रसारण-विभाग ने सन् १९५१ से ही मेरा जो आदर किया है, उस के लिए भी कृतज्ञता प्रगट करना उचित समझता हूँ । इस क्षेत्र में पं. उमाशंकर गिरजानन जी और श्री. परमानंद रामलखन जी, पं. भूमित्र शर्मा आर्यगा जी, जनाब अब्दुल सलाम अहमदी ने मेरा हौसला बढ़ाया ।

जब मैं ने सुना कि मोरिशस में २२ से २६ अगस्त तक १२वाँ सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन, आर्य सभा मोरिशस के तत्त्वावधान में होने जा रहा है तो एक छोटी सी रचना 'आर्य समाज' के बारे में प्रकाशित करने का विचार जागृत हुआ । उस पुस्तिका का पुनः प्रकाशन सत्यार्थ प्रकाश आगमन की शताब्दी पर भी किया जा रहा है ।

हिंदू जाति जिस रफ़तार मे पश्चिमी फैशन की ओर बढ़ रही है और समाज में जिस तरह व्यभिचार, मद्य- पान, भ्रष्टाचार आदि का अंधकार घना होता जा रहा है तथा जिस तेजी से हमारे नोजवान भारतीय संस्कृति से मुख मोड़ रहे हैं, उन्हें देखते हुए ऐसा महसूस करते हैं कि अब भी आर्य समाज को समाज कल्याण कार्य हेतु बहुत कुछ करना है । फिर भी मोरिशस के सभी समाजों ने जिस प्रकार हिन्दी भाषा का प्रचार किया है, उसी प्रकार से सामाजिक उत्थान करने में और सहयोग देने में भी संलग्न होना चाहिए ।

अतः जिन दिवंगत वीरों ने हिन्दू समाज के कार्यों को आगे बढ़ाया है, हम उन के प्रति भी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।

इसके अतिरिक्त जिन मित्रों ने यह लघु पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया है, उन के प्रति आभार प्रगट किये बिना नहीं रह सतका हूँ । साथ ही मेरे मित्र नारायणपत दसोई को धन्यवाद देने से नहीं भूल सकता, जिन्हों ने इस पुस्तक का मन से पुनः सम्पादन किया ।

अधिकांशतः इस पुस्तक में मेरे पूर्व में छपे लेख और कविताएँ हैं, जिन्हें कहीं नाम मात्र का हेर-फ़ेर करके अद्यतन किया गया है । पर शेष पहली बार इस कृति में स्थान पा रहे हैं ।

विनम्र सेवक

पं. धर्मवीर घूरा



Office of the President

STATE HOUSE, MAURITIUS

23rd June, 1998

Dear Sir,

I have the pleasure in enclosing herewith your invitation to the Presentation of Insignia Ceremony scheduled for Thursday 2nd July, 1998 at 16.00 hours at State House, Le Reduit. Invitations are also being sent to your guests for this occasion.

I should be grateful if you would be kind enough to arrive at 15.30 hours and to proceed to the Dinning-Room where the procedure will be explained to you by the Chief Marshal.

I enclose two small hooks on which the President will hang your award. Would you please have these sewn on the left-hand side of the coat you will be wearing, about six inches below the shouder; the hooks should be the same distance apart as on the card to which they are attached.

Yours faithfully,

(S. Hazareesing)
Secretary to the President

Pandit Dharamveer Ghura, M.B.E., O.S.K.
11, Pavé D'Amour Road,
La Caverne, Solferino,
Vacoas



Prime Minister
Republic of Mauritius

25 March, 1998

Dear Pandit Ghura,

It gives me great pleasure to congratulate you for the conferment upon you of the award of the ***Officer of the Order of the Star and Key of the Indian Ocean (O.S.K.)****, in recognition for your work, on the occasion of the 30th Independence Anniversary of Mauritius.*

I am sure that this award has been widely welcomed by your friends, relatives and well wishers.

Yours sincerely,

Dr N. Ramgoolam

Dr the Honourable Navinchandra Ramgoolam
Prime Minister

Pandit Dharamveer Ghura, M.B.E., O.S.K.
11, Route Pavé D'Amour
La Caverne, Solferino
Vacoas

Development Bank of Mauritius Ltd.

CHAUSSEE

PORT LOUIS

March 23, 1998

Pandit Dharamveer Ghura, M.B.E., O.S.K.
11, Pavé D'Amour Road,
La Caverne, Solferino,
Vacoas

Dear Pandit Dharamveerji

*Kindly accept our best wishes and congratulations on the conferment upon you of the award of **"Officer of the Order of the Star and Key of the Indian Ocean"** on the occasion of the 30th Anniversary of Independence.*

We are extremely happy about this conferment which you richly deserve. We take this opportunity to wish you and your family the best of everything in coming years.

With best wishes.

Yours sincerely

R.L. Prabhu
Managing Director

मोहित जी हैं महान्

श्री मोहनलाल जी मोहित हैं आर्य जगत् में शोभित
ये नहीं करते अत्याचार दूर कर रहे भ्रष्टाचार ।
वेदों का किया है प्रचार शुद्ध कर कितनों का विचार
विश्व भर की है यात्रा बढ़ाई निधियों की मात्रा ।
करवा रहे वेदों पर मंथन जिनके लिए दे रहे अपार धन
इसमें लगे दर्जनों विज्ञ जन चारों पहर होकर मगन ।
स्वामी स्वतन्त्रानन्द आये स्वामी सत्यप्रकाश दे गये
मोहित परिवार को आशीर्वाद देकर द्विवेदी कर गये गुणानुवाद ।
ध्यानमग्न हो करते काम जन कार्यों में मगन हरदम
निःशुल्क हैं आर्योदय के संपादक तैयार किये हैं कवि, लेखक ।
लिखा आर्यों का इतिहास जिसमें मारीशस का आभास
कैसे बने पूर्वज दास आज विश्व-संस्कृति के आस ।
आर्यरत्न भारत में भये आर्यभूषण मारीशस में भये
आर्यजन जिन की मना रहे नब्बेवीं क्यों न ईश दें उन्हें १००वीं ।
अतिथि बने कितने कुलपति शाबाशी दी और करोड़पति
कभी न बने अपार धन पर नादान न किया परिवार बल पर अभिमान ।
कैसे गावें पितामह जी के गुण हम गा रहा आर्यों का इतिहास हरदम
देश-विदेश में दिया लाखों दान विश्व हित किया जीवनदान ।

पंडित धरमवीर घूरा जी से परिचय

मैं पंडित धरमवीर घूरा जी को पिछले ४५ वर्षों से जानता हूँ । बात सन् १९४३ की है । मैं उन दिनों हिन्दी परिचय परीक्षा की तैयारी करता था । अपनी दर्ज़ी की नौकरी के साथ-साथ हिन्दी के उच्च स्तरीय अध्ययन में मेरी प्रगाढ़ लग्न थी । उन दिनों हिन्दी के शुद्ध पठन-पाठन के दो प्रमुख केद्र मोरिशस में थे । एक लोंग मौंटैन में स्थित श्रीमती सावित्री बिकारी घूरा हिन्दी प्रचारिणी सभा और दूसरा रिव्येर-दे-जाँगी - तायाक में । तायाक में सावान संगीत संघ नाम का एक संगठन चलता था । यह संघ संगीत के प्रचार के साथ-साथ हिन्दी के प्रचार-प्रसार का भी काम करता था । पूरे दक्षिण प्रांत के हिन्दी प्रेमी प्रति सप्ताह शनिवार तथा रविवार को हिन्दी का पाठ लेने के लिए तायाक जाया करते थे । शेष लोग हिन्दी प्रचारिणी जाते थे । तायाक में उस समय भाई डॉ. प्रेमचंद ओरी जी सभी परिचय तथा प्रथमा के छात्रों को पढ़ाते थे । उनके विद्यार्थियों में श्री रविशंकर कौलेशर, नरेश रागेन, रामसामी तुलसिया, लच्छुमया वितावाडू, जगदेव गुमानी, रामकरण तथा धरमवीर घूरा जी भी थे । मैं भी कभी-कभी वहाँ कुछ पूछ-ताछ करने जाया करता था । उसी अवसर पर सभी विद्यार्थियों के साथ धरमवीर घूरा जी से भी मुलाकात होती रहती थी । उस समय पं. घूरा को केवल एक विद्यार्थी के रूप में जानता था । परंतु उनका अच्छा परिचय मुझे १९५३ में माहेबर्ग के पास बोवालों नामक गाँव में हुआ था । बोवालों में आर्य समाज की एक हिन्दी पाठशाला चलती थी । और, स्वयं भाई लच्छुमया विकावादू जी वहाँ पढ़ाते थे ।

एक रविवार को उस पाठशाला का वार्षिक उत्सव था । अनेक गणमान्य अतिथि पधारे हुए थे । जैसे स्व. जयनारायण राय जी, स्व. श्रीनिवास जगदत्त जी, उमाशंकर गिरजानन जी और अनेक लोग । उस दिन के प्रोग्राम में पं. धरमवीर घूरा जी का एक भाषण था । विद्यार्थी के नाते मैं ने भी कंठस्थ किया हुआ था, एक लघु भाषण । विद्वानों के भाषणों के पश्चात् पं. धरमवीर घूरा जी का भाषण हुआ । उनका भाषण ओजस्वी और प्रभावशाली बन गया था । उस दिन मैं उन से भी बहुत प्रभावित हुआ था । वे परिचय परीक्षा देने के बाद प्रथमा में भी उत्तीर्ण हुए । फिर वे आर्य सभा द्वारा आयोजित सिद्धांत शास्त्री की परीक्षा में भी सफल हुए । अगर मैं भूल नहीं करता हूँ तो वे सन् १९५४ में सरकारी पाठशाला में हिन्दी के अध्यापक अपने अन्य साथियों के साथ नियुक्त हुए ।

जहाँ तक मैं ने पं. घूरा जी को जाना है, वहाँ तक उन में मैं ने हिन्दी भाषा के प्रति अटूट प्रेम पाया है । अध्यापक कार्य करते हुए वे सदा कुछ न कुछ लिखते रहते थे । हिन्दी के उत्सवों में उनकी माँग होती थी । लोग उनको सुनने के लिए ललायित होते थे, क्योंकि उनकी भाषण शैली सरल, समसामयिक तथा जोशीली होती थी । जहाँ कहीं भी संगीत प्रतियोगिता का आयोजन होता था, वे भी उस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में सदस्य होते थे ।

पं. घूरा जी भले ही अच्छे कवियों की श्रेणी में नहीं हैं, फिर भी उस समय जहाँ कहीं कोई मृत्यु या अन्य उत्सव होते थे अवसरानुसार एक छोटी कविता अवश्य सुनाते थे ।

अध्यापक बनने के बहुत समय बाद वे आर्य सभा के पुरोहित नियुक्त हुए । फिर सभा की विद्या समिति के सदस्य तथा सायंकालीन पाठशालाओं

के निरीक्षक भी नियुक्त किये गये थे । मैं ने पंडित घूरा जी को अनेक रूपों में अर्थात् लेखक के रूप में और पंडित के रूप में जाना । इन सब में उनकी अनेक खूबियों के साथ-साथ उनकी कुछ कमियाँ भी मैं ने देखीं जो हर मानव में स्वाभाविक हैं ।

हिन्दी सेवक के नाते पंडित घूरा मोरिशस के किसी भी कोने में, जहाँ कोई उत्सव हो रहा हो, वे समय निकाल कर अवश्य वहाँ जाते हैं और अपना योगदान प्रदान करते हैं । वे बड़े समाज सेवकों, विद्वानों, पंडितों तथा देश के नेताओं की संगति में रहना अपना गौरव समझते हैं । इस देश के सभी राजनेताओं से इनकी अच्छी जान-पहचान है । सभी के बीच उनका मान-सम्मान है ।

लेखक के रूप में पंडित जी ने अपना नाम इस देश के लेखकों की सूची में जोड़ दिया है । यहाँ की जितनी भी हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती रही हैं, उन सभी में पंडित घूरा जी छोटे-बड़े लेख या कविताएँ प्रकाशित कराते हैं । मुझे याद है कि कृषि-मंत्रालय द्वारा एक निबंध-प्रतियोगिता में पंडित घूरा जी ने भाग लिया था । उस में वे विजयी हुए थे और उनको स्वर्ण पदक से पुरस्कृत किया गया था । १९६१ में उन्होंने हिन्दी लेखक संध की स्थापना की थी । वह संघ आज तक है । वे उस संघ के आज तक प्रधान पद संभाल रहे हैं । उठते-गिरते वे और संघ के मंत्री श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ दोनों संघ को अभी लक जीवित रखे हुए हैं । किसी भी तरह से संघ हिन्दी के अनेक विद्यार्थियों को लेखक या कवि बना चुका हैं । अनेक कृतियाँ भी प्रकाशित हो चुकी हैं । पंडित जी ने 'बालसखा' नामक पत्रिका का भी प्रकाशन किया था, जो बच्चों के लिए बड़ा लाभदायक था ।

सरकारी पाठशाला में वे हिन्दी के वरिष्ठ अध्यापक नियुक्त हुए और इसके पश्चात् वे हिन्दी के निरीक्षक पद पर भी नियुक्त हुए । सरकारी कार्य से अवकाश ग्रहण करते वक्त तक वे इसी पद पर रहे थे ।

स्थानीय रेडियो स्टेशन के वे प्रसिद्ध प्रस्तुतकर्ता हैं । वर्षों से प्रति शनिवार को वे 'प्रयास' नाम से एक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं । इसमें वे पुराने समाज सेवकों को तथा नवोदित लेखकों, कवियों और गायकों को प्रस्तुत करते हैं ।

उनकी सेवाओं से प्रभावित होकर मोरिशस सरकार ने उनको *एम.बी.ई.* तथा *ओ.एस.के.* की उपाधियों से भी सम्मानित किया है ।

– मूलशंकर रामधनी

पंडित धरमवीर घूरा, शास्त्री

डॉ. उदय नारायण गंगू

(आर्य सभा, महामंत्री)

सन् १९५८ में पंडित घूरा जी से मेरा प्रथम परिचय हुआ था । उन दिनों स्वर्गीय लच्छुमया विटावाडु के निर्देशन में 'देश-विप्लव' नामक नाटक का मंचन इस देश के अनेक सिनेमाघरों में हो रहा था । नाटक-मंचन से पूर्व पंडित घूरा जी का भाषण होता था ।

एक वर्ष बाद पं. धरमवीर घूरा से हिन्दी की शिक्षा प्राप्त करने के लिए मैं तायाक पहुँचा । 'सावान संगीत संघ' में 'परिचय' की कक्षा में मुझे सम्मिलित करने से पहले आपने एक लघु निबंध लिखाकर मेरे हिन्दी-ज्ञान की परीक्षा ली थी । मेरी हिन्दी-क्षमता से संतुष्ट होने पर आपने मुझे 'परिचय' के विद्यार्थी के रूप में स्वीकार किया था ।

समय बीतता गया । पंडित धरमवीर जी मॉरीशस के हिन्दी जगत् में आगे बढ़ते गये । मॉरीशस की सभी हिन्दी-पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख दृष्टिगोचर होने लगे । हिन्दी पाठशालाओं के वार्षिकोत्सवों पर आपके भाषण सुनता रहा । 'ऑल इंडिया रेडियो' पर भी कई बार आपका नाम सुना । यह जानने में देर नहीं लगी कि आप हिन्दी-प्रेमी और समाज-सेवी हैं । इस हिन्दी-अनुराग ने ही आपको सरकारी हिन्दी अध्यापक से हिन्दी सुपरवाइज़र के पद पर आसीन किया ।

पंडित घूरा जी ने डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि के सहयोग से हिन्दी लेखक संघ की स्थापना करके नवोदित लेखकों को एक मंच प्रदान किया । आप स्वयं लिखते रहे और औरों को लिखने की प्रेरणा देते रहे ।

महात्मा गांधी संस्थान की ओर से मैं लंबे अरसे तक मॉरीशस राष्ट्रीय लेखागार में शोध-कार्य के लिए जाता रहा । मैंने पुरानी पत्र-पत्रिकाओं में पंडित धरमवीर घूरा के बीसियों लेख देखे । वे उस ज़माने के लिखे गये लेख थे, जब हिन्दी लेखकों को उंगलियों पर गिना जा सकता था । चूँकि पंडित घूरा जी हिन्दी के पुरोधाओं में एक रहे हैं, इसलिए उनके लेखों का ऐतिहासिक महत्व कम नहीं है । मैं ने उनसे निवेदन किया था कि वे अपने पुराने लेखों का संकलन करके पुस्तकाकार में प्रकाशित करें, क्योंकि उन लेखों में हमारे अतीत का प्रतिबिंब है ।

मेरी प्रार्थना व्यर्थ नहीं गई । मुझे प्रसन्नता है कि पंडित जी ने प्रेस के माध्यम से भी हिन्दी की प्रशंसनीय सेवा की है । लेखन के साथ-साथ आप स्थानीय रेडियो पर भी हिन्दी के शब्द ध्वनित करते रहे हैं । हिन्दी जगत् आप को भूल नहीं सकता ।

पं. धर्मवीर घूरा : हिन्दी के दीर्घ कालीन सेवक

पं. धर्मवीर घूरा जी लेखक संघ के प्रधान, आर्य सभा के पुरोहित तथा 'प्रयास' रेडियो कार्यक्रम के संचालक के रूप में जाने जाते हैं । इस के साथ-साथ उनका जीवन १९५४ से १९७९ तक सरकारी प्राथमिक पाठशालाओं में हिन्दी-अध्यापन से जुड़ा रहा था, फिर दस अगले वर्षों तक हिन्दी सुपरवाइज़र के रूप में कार्य करके, उन्होंने इसी पद से १९८९ में अवकाश ग्रहण किया था । यहाँ यह कहना असंगत नहीं होगा कि इस देश के अनेक हिन्दी सेवियों के समान १९५४ से पूर्व पं. धर्मवीर घूरा का यौवन बड़ा संघर्षमय रहा है । उन्होंने जीवन में उतार-चढ़ाव देखा है ।

उनका प्रथम हिन्दी लेख जनता पत्र पर १९५१ में छपा था और तब से आज तक उनके सैकड़ों लेख वर्तमान, आर्योदय, नव-जीवन, समाजवाद, काँग्रेस, अनुराग, आभा, दर्पण, वसंत, स्वदेश, इंद्रधनुष आदि पत्रों पर प्रकाशित होते रहे हैं । इसी प्रकार भारत के प्रतिष्ठित पत्रों में भी जैसे

सार्वदेशिक, आर्य जगत, परोपकारी, गगनाञ्चल, आर्यमित्र आदि में भी छपते रहते हैं ।

पंडित घूरा जी ने शुरू-शुरू में गद्य-रचनाओं से साहित्य-सृजन प्रारंभ किया था किंतु बाद में उन्होंने कुछ कविताएँ भी की हैं । इनके संपादन से कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के जन्म-शताब्दी-महोत्सव से उत्साहित होकर तथा पं. बालमुकुन्द गुप्त द्विवेदी जी से प्रेरित होकर इन्होंने मुनीश्वरलाल चिंतामणि, जगत प्रकाश तोरल और विष्णुदत्त मधु आदि के सहयोग से १९६१ में स्थानीय हिन्दी लेखक संघ की नींव डाली थी । तब से आज तक पं. घूरा जी इस संस्था के मुख्य संचालक रहे हैं । इस संघ द्वारा देश में समय-समय पर कवि-सम्मेलन, निबंध-प्रतियोगिताएँ आयोजित होती रही हैं ।

पं. घूरा जी का संबंध आर्य सभा से काफ़ी पुराना रहा है । सन् पचास में उन्होंने शास्त्री परीक्षा पास की और तभी से आर्य सभा के अवैतनिक पुरोहितों के रूप में कार्य करते रहे हैं । इस तरह से उनका जीवन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में भी लगा रहा है । इसके अलावा आर्य सभा की विभिन्न समितियों में भी वे कार्यरत रहे हैं ।

किंतु पिछले दो-तीन दशकों से देश-विदेश के लोग पंडित घूरा जी को स्थानीय रेडियो पर 'प्रयास' कार्यक्रम के प्रस्तोत्ता के रूप में जानते हैं । प्रति सप्ताह इनका साक्षात्कार किसी-न-किसी हिन्दी विद्वान, लेखक, कवि अथवा पत्रकार से होता रहता है । जब-जब इन्होंने विदेश की यात्रा की है, तब-तब विदेशी प्रसारण-केन्द्रों से भी इनका कार्यक्रम चलता रहा है । पं. घूरा जी ने अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया है ।

पं. घूरा जी की हिन्दी सेवाओं के लिए अनेक सांस्कृतिक संस्थाओं ने इन्हें समय-समय पर सम्मानित किया है । इसी सिलसिले में इसी वर्ष में मॉरीशस की सरकार ने पंडित घूरा जी को *ओ.एस.के.* की प्रतिष्ठित उपाधि से सम्मानित किया है । देश के एक हिन्दी सेवी के ऐसे सम्मान से सारा हिन्दी जगत सम्मानित हुआ है । पं. घूरा जी दीर्घजीवी हों, ऐसी हमारी कामना है ।

–प्रह्लाद रामशरण

इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद् (प्रधान)

पंडित धर्मवीर घूरा – एक अथक पथिक

–सत्यदेव प्रीतम, *आर्य सभा मॉरिशस के उपसचिव*

पिछली आधी शती से अधिक समय हो गया जब से पंडित धर्मवीर घूरा का दबदबा है, हमारे समाज में । पंडित जी एक बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति हैं । इस उक्ति से हमारा तात्पर्य है कि वे एक से अधिक क्षेत्रों में कार्यरत हैं । मैं उन्हें कम से कम प्लेन विलियेम्स आर्य ज़िला परिषद् के अध्यक्ष की दृष्टि से, 'आर्योदय' के सह-सम्पादक की हैसियत से, आर्य सभा मोरिशस के मंत्री, उपमंत्री एवं विद्या समिति के प्रधान के रूप से एवं स्कूल इंस्पेक्टर के ओहदे को सुशोभित करने वाले व्यक्ति के रूप से जानता हूँ ।

पंडित जी इन दिनों आर्य सभा के अंतर्गत उपदेशक मंडल के मान्य प्रधान के पद पर आसीन हैं । इस पद से यथासंभव सहयोग प्रदान करने में

सदा तत्पर रहते हैं । वे यही सोचा करते हैं कि मंडल की ओर से किस हद तक आर्य समाज से संबद्ध शाखा-समाजों के धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यों को नया आयाम दे सकेंगे, जिस से महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार किया जा सकेगा ।

तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो साफ़ ज़ाहिर होता है कि पंडित जी की वाक्पटुता लेखन-शक्ति से काफ़ी पीछे रह गई । 'आर्योदय' के साथ-साथ, १९५० से जो भी साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक पत्रिका रही, उन सभी में समय-समय पर पंडित जी के समसामयिक लेख प्रकाश में आते रहे । अब अगर नई पीढ़ी के लोग लेखक रूप में पंडित जी के व्यक्तित्व का पता लगाना चाहें तो उन्हें मोरिशस के (आरकाईव) लेखागार का दरवाज़ा खटखटाना चाहिए । आर्य सभा के अलावा और जो भी पत्र-पत्रिकाएँ हिन्दी में निकलीं, वे पंडित जी के लेखों से वंचित न रहीं । सात समुन्दर पार कर उन की लेखनी से लिखे सैकड़ों लेखों को भारत और अन्य देशों के पत्रों के पन्नों में प्रकाशित होने का सुयोग प्राप्त हुआ है । उन लेखों की आलोचना-समालोचना भी हुई और भूरि-भूरि प्रशंसा भी प्राप्त की । इस दिशा में लेखक घूरा जी को दाद देते हैं । यही नहीं, पत्रकारिता की श्रीवृद्धि में अभूतपूर्व योगदान आप ने प्रदान किया ।

हिन्दी लेखक संघ के जन्म-दाताओं में से आप एक हैं । पिछले ३८ साल के हिन्दी इतिहास में हिंन्दी लेखक संघ ने जो भी प्रयास किया, इसके पीछे पंडित जी का बहुत बड़ा हाथ रहा है । सच कहा जाए तो हिन्दी लेखक संघ की आप रीढ़ की हड्डी हैं । जितने प्रकाशन हुए, जितने कवि सम्मेलन संपन्न हुए, जितनी प्रतियोगिताएँ की गई हैं, सब के पीछे पंडित जी धूप में छाया

के सामान रहे हैं । फिर भी आप हिम्मत नहीं हारे, संघर्षरत रहे हैं । दुःख सह कर भी एक के पीछे एक, जाने कितने प्रकाशनों को जन्म देकर हिन्दी साहित्य को संपन्न करने में आपने हाथ बँटाया ।

जब भी हम आर्य सभा के महामंत्री या उपमंत्री पद पर कार्यरत होते, वे तत्क्षण समीप आते और किसी उपसमिति में सदस्य बनकर अपनी सेवा प्रदान करने की इच्छा प्रकट करते, मानो कोई परिश्रमी नौकर सतत काम करने की माँग कर रहा हो । ज़िला परिषद के जन्मकाल से लेकर आज तक वे समिति के सदस्य बनकर अपना सहयोग प्रदान करते आ रहे हैं ।

पंडित जी की एक विशेषता का उल्लेख किये वगैर मैं रह नहीं सकता । वह यह है कि पंडित जी की हिन्दी व्याकरण सम्मत हुआ करती है, चाहे बोलने में या लिखने में । जब कभी उन के साप्ताहिक रेडियो कार्यक्रम 'प्रयास' में जाता हूँ तो वे कभी लिखित रूप में प्रश्न बनाकर नहीं पूछते । जैसे आशुकवि तुरंत कविता बनाकर सुना देते हैं, वैसे ही पंडित जी भी कोई पेचीदा प्रश्न तपाक से पूछ बैठते हैं । सरल, सरस और उपयुक्त शब्दों का प्रयोग उनकी खूबी है ।

उन के व्यक्तित्व की दूसरी विशेषता, जो उन को अन्यों से अलग करती है और जो मुझे प्रभावित भी करती है, वह यह है कि कभी भी वे निराश न होते । पथ पर वे आगे बढ़ते चले जाते हैं, क्योंकि स्वामी रामतीर्थ की भाँति आप मानते हैं -"निराशा दुर्बलता का चिह्न है ।" और इसलिए स्वेट मार्डेन कहते हैं- 'निराशा से जीवन के बहुमूल्य तत्त्व नष्ट हो जाते हैं । इस से विजय के बहुत से अवसर खो जाते हैं ।' मैंने उनको चंद लोगों की उपस्थिति में हिन्दी लेखक संघ के समारोह का संचालन करते देखा है । अगर

उन की जगह पर दूसरे होते तो संघ कब का बंद हो गया होता । सन् १९६० की बात है । आर्य समाज स्थापना की ५०वीं वर्षगाँठ मनाने हेतु जो समारोह आयोजित हुआ था, उसमें स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती को आमंत्रित किया गया था । बात ही बात में हमने एक बार कहा, 'स्वामी जी आप तो सौभाग्यशाली हैं । आप को गंगाप्रसाद उपाध्याय जैसे पिता प्राप्त हुए । जीवन में आगे बढ़ने की सुविधा प्राप्त हुई ।' स्वामी जी ने दार्शनिक भाव से कहा– 'हम बड़े बाप के बड़े बेटे बने तो क्या हुआ । आप लोग तो मज़दूर बाप के बड़े बेटे बन गए हैं ।

बचपन में ही पंडित धर्मवीर घूरा ने माँ-बाप दोनों को खो दिया था पर आज जीवन की जिस ऊँचाई पर वे पहुँच गए हैं, वह सराहनीय ही नहीं, बल्कि अनुकरणीय भी है । अनुकरणीय इसलिए क्योंकि पंडित घूरा ने जैसे समाज की उन्नति के लिए घोर परिश्रम किया, इसी प्रकार अपने परिवार को आगे बढ़ाने में भी जीतोड़ कोशिश की । अतः आज जहाँ उनके ज्येष्ठ पुत्र राज प्रधान मंत्री डॉ. नवीनचन्द्र रामगुलाम के दफ्तर में सलाहकार के रूप में सेवा कर रहे हैं, वहाँ ही संयुक्त राज्य अमेरिका में उनके छोटे बेटे एक नामी बैंक के उपसलाहकार हैं, जो अपने-आप में छोटी बात नहीं है । उन की लड़की प्रतिमा शिक्षा विभाग के एक माध्यमिक स्कूल की एड्युकेशन ऑफिसर हैं । धन्य है ऐसे पिता, जिन्होंने अनाथ होते हुए भी अपनी संतानों को उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया ।

– सत्यदेव प्रीतम

आर्य सभा मॉरीशस

भूतपूर्व महा सचिव और वर्तमान उपसचिव

पं. धर्मवीर घूरा, शास्त्री

बिना मरे किसी ने स्वर्ग नहीं देखा है । संसार में जितने महापुरुष पैदा हुए हैं सब काँटों में चलकर और कठोर परिश्रम रूपी आग में तप-तपाकर खरे सोने की तरह चमके-दमके हैं । वैसे ही पंडित धर्मवीर घूरा शास्त्री ने भी सांसारिक तूफानों में वीर सेनानी की तरह अपने मार्ग को तराशा है । जब कि १२ वर्ष की उम्र में ही माँ-बाप का साया इन के सर से उठ गया था । बहुत कठिनाई से एक रोटी दैनिक कमानी पड़ी थी, साथ में और ४ भाई-बहनों का भार सँभाला ।

फलस्वरूप आज ये मोरिशस हिन्दी लेखक संघ के प्रधान, आर्य समाज के उपदेशक और एक कुशल हिन्दी अध्यापक हैं । स्थानीय रोडियो पर हिन्दी में साप्ताहिक प्रोग्राम पेश करते हैं । बाल सखा पत्रिका के संपादक रह चुके हैं । गांधी स्मृति नामक पुस्तिका का, और अनेक संग्रहों का इन्होंने संपादन भी किया है ।

इन का व्यक्तित्व प्रभावशाली है । विरोधी विचार धाराओंवालों में भी बैठकर धुलमिल जाना तथा संगदिल को भी संगी बनाना इनकी प्रमुख विशेषता है ।

सूचना मंत्रालय द्वारा १९६० ई. में 'खाद्यान्न और जन संख्या' पर एक प्रतियोगिता हुई थी । अंग्रेजी, फ्रेंच, चीनी और भारतीय भाषाओं के मशहूर लेखकों ने इस में भाग लिया था । धर्मवीर जी के अद्भुत रचना-कौशल द्वारा हिन्दी को इस प्रतियोगिता में प्रथम आने का गौरव प्राप्त हुआ । अतः शास्त्री जी स्वर्ण पदक विजेता हुए । अब वे तायाक के न रहकर, समस्त

मोरिशस एवं हिन्दी जगत् के महान् लेखक हैं । जिन पर हिन्दी जगत् को गर्व है ।

मोरिशस के आर्य समाज का इतिहास बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा । यह इतिहास बिखरे मोतियों की तरह था । शास्त्री जी ने इस रचना में इन मोतियों को अपनी अनूठी शैली द्वारा माला की तरह पिरोकर अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया है । आप के पिता श्री कृष्ण घूरा जी एक कवि थे । माँ का नाम जामवन्ती दिनू था ।

उन के लेखों के आधार पर इस पावन इतिहास को पढ़ना और पढ़ाना हरेक मानव का कर्त्तव्य है ।

छ. बिदेशी,
संपादक, दर्पण
त्रिओले, सन् १९७३ ई.

मोरिशस में आर्य समाज

(संक्षिप्त इतिहास)

प्रारंभिक काल

यूँ तो गत् शताब्दी के ३० तथा ३५ के बीच भारत से हमारे बाप-दादे यहाँ पर कुली प्रथा के अंतर्गत आते रहे और अपनी अपनी धार्मिक रीति-रिवाज़ों का पालन करते थे, पर सन् १९१० ई. में यहाँ पर आर्य समाज की नींव रखी गई ।

सन् १८९८ में हमारे यहाँ भारतीय पलटन का निवास वाक्वा नगर में था । जिस में पूर्वीय ब्राह्मण भी थे । उन में पं. भोलानाथ तिवारी जी आर्य समाज के विचारों के मानने वाले थे । उन के पास सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार विधि नामक पुस्तकें थीं । जब वे भारत लौटने लगे तो काँ-फुक्रो निवासी श्री भिखारीसिंह जी को ये पुस्तकें दे गये । थोड़े समय बाद में मोरिशस में आर्य समाज के संस्थापक श्री. खेमलाल लाला जी ने ये पुस्तकें देखीं । ये ही दो पुस्तकें आर्य समाज स्थापना की प्रेरणा रहीं ।

मणिलाल डॉक्टर और आर्य समाज स्थापना

सन् १९०७ में मणिलाल डॉक्टर पधारे थे । उन के समान निर्भीक विद्वान-सलाहकार मिलते ही उदार हिन्दू विश्वासपूर्वक कार्य में लगे । उन की मंत्रणा से पहली एप्रिल सन् १९१० को क्युर्पीप में आर्य समाज की स्थापना की गई । प्रधान श्री खेमलाल जी, मंत्री श्री गुरुप्रसाद दलजीतलाल जी और कोषाध्यक्ष श्री खेरसिंह जी थे । पं. गयासिंह जी को पुस्तकाध्यक्ष नियुक्त किया गया । वैदिक धर्म-प्रचार के लिए 'आर्य पत्रिका' २ जून १९११ को निकाली गई ।

सन् १९१२ को डॉ. जिरंजीव भारद्वाज जी यहाँ पर रंगून से पधारे । वे और उनकी पत्नी गाँव-गाँव घूम कर धर्म प्रचार कार्य किया करते थे और अपने निवास स्थान में हिन्दी भी पढ़ाते थे ।

प्रथम सदस्य

डॉ. भारद्वाज ने 'आर्य परोपकारिणी सभा' नाम से सभा की रजिस्ट्री करवाई । निम्न महानुभाव उसके सदस्य बने :-

प्रभु भोला		दुर्गाप्रसाद भिखारी
केहरसिंह		रामजी लालजी खेमचन्द्र
माधोलाल परबंश		रामेश्वर पतरू
शिवनाथ शिवचरण		पाँचू प्रसाद
रामावध रघुनाथ		दुर्गाप्रसाद बिखारी
बिसुनाथ सिसरण	और	रामछोड़जी रघुनाथजी

डॉ. भारद्वाज जी ने युवक काशीनाथ किस्टो को अध्ययनार्थ भारत भेजा ।

प्रथम संन्यासी

सन् १९१४ में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी विराजे थे । डॉ. भारद्वाज जी ने उनके साथ समस्त टापू का दौड़ा किया ओर अपने वतन लौट गये । एक बार स्वामी जी को वाक्वा, पायोत गाँव से शेमें ग्रेन्यें गाँव (२४ मील) प्रचार कार्य के लिए जाना था । सवारी न मिली तो पैदल रात के समय गये । दक्षिण प्रान्त में श्री रामशरण मोती जी ने स्वामी के साथ प्रचार कार्यों में हाथ बँटाया । दो साल बाद स्वामी जी वापस गये ।

स्थानीय सेवक

पं. काशीनाथ किस्टो जी भारत से लौट कर आर्य परोपकारिणी सभा के मुख्य उपदेशक के रूप में कार्य करने लगे । उनके प्रभाव से डॉ. शिवगोबिन्द जी, श्री मोहनलाल मोहित जी, श्री महेश घूरा जी, पं. सुखदेव रामप्यार जी आदि आर्य समाज के सहयोगी बने । पं. काशीनाथ ने आर्य

पत्रिक़ा के सम्पादक के रूप में प्रभावशाली कार्य किया । लोग उनकी लेखनी का लोहा मानते थे । सन् १९१८ में वाक्वा आर्यन वैदिक स्कूल की स्थापना की । प्रथम दिन १२ विद्यार्थी थे ।

आर्य पत्रिका घाटे पर चलने लगी । सन् १९२४ में सर्वश्री रा. दिलचन्द जी, न. सदल जी, रामदयाल भगीरथी जी, महेश घूरा जी, मोहनलाल मोहित जी आदि महानुभावों ने ५००-६०० रुपये जुटाकर सहायता दी । इन दिनों यहाँ पर दैनिक करीब १३०० बच्चे पढ़ते हैं । रविवारों को सैद्धाँतिक और साहित्यिक पढ़ाई होती है । करीब ३०० विद्यार्थी पढ़ते हैं ।

एक महापुरुष का सम्मान

सर कुँवर महाराजसिंह जी भारत सरकार की ओर से यहाँ पर भारतीयों के दुख-दर्द पर एक तहकीकात करने सन् १९२४ में पधारे थे तो परोपकारिणी सभा ने आप का स्वागत-सम्मान वाक्वा के आर्यन वैदिक विद्यालय में किया था ।

हिन्दी की पढ़ाई

श्री रामधन पूरण जी ने अपनी पुस्तक 'मोरिशस आर्य समाज का इतिहास' में लिखा है कि आर्य परोपकारिणी सभा ने (१९२५) में गवर्नर सर हरवर्टरिड के.सी.एम.जी. के पास एक पेटिशन भेजी थी, जिस में मोरिशस के सब स्कूलों में हिन्दी पढ़ाई की मांग की गई थी । इसी समय से हिन्दी की पढ़ाई सरकारी पाठशालाओं में शुरू हो गई, जो आधे घण्टे के लिए १२ रु. मासिक एक अध्यापक को मिलते थे ।

मेहता जी

सन् १९३५ में मेहता जैमिनि जी बी.ए.एल.एल.बी. यहाँ पर पधारे थे । वे वकील थे । उन्होंने ९ मास तक टापू का दौड़ा किया । २६० भाषण दिये । आर्य कुमार सभा की स्थापना उन्होंने सन् १९३५ में करवाई । उसके प्रधान श्री गुलाबसिंह जी थे और श्री सुग्रीमसिंह विष्णुदयाल जी मन्त्री थे ।

दयानन्द जन्म शताब्दी

सन् १९३५ के फरवरी मास में आर्य समाज ने भारी तपस्या कर के दयानन्द धर्मशाला, पोर-लुई में दयानन्द जन्म शताब्दी मनाई । सहयोग देने के लिए पं. आत्माराम विश्वनाथ जी को भारत से बुलाया गया । उस मौके पर श्री मेहता जी ने महर्षि दयानन्द जी के कार्य-कलापों पर सारगर्भित भाषण दिया । श्री बाबू तिलकसिंह जी और श्री देबीदिन ऋतु जी ने सुयोग्य आर्य पुरोहितों एवं प्रचारकों को स्वर्ण पदक प्रदान किये थे ।

प्रथम नगर कीर्तन

सन् १९२६ में स्वामी विज्ञानानन्द जी विराजे थे । वे निर्भीक थे । प्रथम बार नगर कीर्तन का आयोजन किया गया । बेल रोज, बोनाकेई, लेस्पेरॉस, माहेबर्ग, लालमाटी, सें-जुलियें, रिव्येर जी रांपार, पांप्लेमूस, गुडलेन्स, वाक्वा, शेमें ग्रेन्यें, त्रिओले, पोर लुई आदि स्थानों में विराट रूप से नगर कीर्तन करवाये । ॐ के ध्वजाओं को सर्वोच्च स्थान दिया गया था । सन् १९३२ में वे चले गये । पं. नारायणदत्त जी ने यहाँ पर आकर दो सालों तक घर्म-प्रचार कार्य किया ।

अनबन

सन् १९२७ में मन-मोटाव के कारण आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापित की गई । श्री छत्तर मास्टर, दलजीतलाल जी, पं. गयासिंह और कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति सभा से अलग हो गये और अलग कार्य करने लगे । टापू में फूट फैली । पं. काशीनाथ जी भी साथ ही थे । इस सभा ने श्रद्धानन्द प्रेस द्वारा 'आर्यवीर' का जन्म दिया । पं. काशीनाथ ने सायंकालीन हिन्दी पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लाभार्थ 'बाल-बोध' पुस्तिका तीन भागों में लिखी ।

दयानन्द अर्द्ध शताब्दी

सन् १९३३ में सभा ने पं. कन्हैयालाल मिश्र जी को प्रचार कार्य करने के लिए बुलाया । वे अच्छे गायक थे । दयानन्द अर्द्ध शताब्दी चहुँ ओर मनाई गई, लेख तथा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । प्र. सभा ने २५ हज़ार आर्ष ग्रन्थों का प्रकाशन करवा कर वितरण किया । इसी साल विद्या समिति का गठन किया गया । श्री बिसेसर हनुमान जी प्रधान नियुक्त हुए थे ।

भारतीयों के आगमन के सौ साल

आर्य समाज के पूरे सहयोग से सन् १९३५ में आप्रवासी भारतीयों के आगमन की शताब्दी पोर लुई में मनाई गई । सभापति-आसन, बारिष्टर रामखेलावन बुधन जी ने समभाला था (वे सर्वप्रथम भारतीय बारिष्टर थे) और मन्त्री आसन बारिष्टर रामप्रसाद निरंजन जी ने सम्भाला था । उस मौके के लिये स्वामी नायन जी को भारत से आमन्त्रण दिया गया था । भारतीयों के रहन-सहन, दुःख-दर्द पर गौर किया गया । यादगार के रूप में पोर लुई में, आर्य भवन के आँगन में, एक सुन्दर स्मारक का निर्माण करवाया गया है

जो अब भी वहाँ मौजूद है । सरकार ने ४,००० बच्चों को उस उत्सवों में आने के लिए रेल-गाड़ी मुफ्त में दी थी ।

अध्यापकों को ट्रेनिंग

सन् १९२५ में मेनिल आर्य कन्या पाठशाला में टापू की हिन्दी पाठशालाओं के अध्यापकों को एकत्र कर के प्रशिक्षण देने का आयोजन किया गया था । पं. जगदत्त जी, पं. उ. गिरजानन जी और पं. क. किष्टो जी ने इस कार्य में अपना हाथ बँटाया था ।

जागृति पत्र

सन् १९४० में आर्य पत्रिका की जगह में जागृति पत्र का श्रीगणेश किया गया । पं. आत्माराम विश्वनाथ जी ने सम्पादन-भार सम्भाला । इस पत्र ने दर्जनों लेखों एवं कवियों को जन्म दिया ।

प्रथम भारतीय कमिशन

सन् १९५० में भारत सरकार ने श्री धर्म यशदेव जी को उच्चायुक्त के रूप में यहाँ पर भेजा । आप सपिरवार पधारे थे । बाद में यहाँ पर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पुनः पधारे थे तो श्री यशदेव जी के निवास स्थान पर महायज्ञ का आयोजन किया गया था । समस्त टापू के प्रमुख आर्य समाज इस कार्य में एकत्र हुए थे ।

समाजों का मिलन

स्वामी जी ने परोपकारिणी और प्रतिनिधि सभाओं के नेताओं से भेंट कर के दोनों सभाओं का एकीकरण कर 'आर्य सभा मोरिशस' नाम रखा और 'आर्योदय' पत्र को प्रकाशित किया जाने लगा, पर स्वामी जी की वापसी पर

फिर मतभेद हुआ । महात्मा आनन्द भिक्षु जी सन् १९५४ में आये, उन्होंने गायत्री महायज्ञ की परिपाटी चलाई । स्वामी ध्रुवानन्द सन् १९५४ में आये थे तो आपने दोनों तरफ से भेंट की और मतभेद को दूर किया । आर्योदय पत्र के माध्यम से धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्रों में लेखों एवं कवियों को प्रोत्साहित किया गया । आर्य भवन में ध्रुवानन्द पुस्तकालय की स्थापना सभा ने की, जहाँ ३००० से अधिक वैदिक धर्म सम्बन्धी ग्रन्थ हैं । विदेशी और स्थानीय पत्र-पत्रिकाएँ भी देखने को प्राप्त होती हैं ।

स्वामी जी का निधन

सन् १९६० में स्वामी अभेदानन्द जी विराजे थे पर दुर्भाग्यवश यहीं से स्वर्ग सिधार गये ।

गुरुकुल

सन् १९६२ में स्वामी आनन्द जी पधारे । उन्होंने धार्मिक प्रचार द्वारा युवकों में एकता का शंख नाद किया । आप ने नुवेल देकुवेर्त में एक गुरुकुल का निर्माण करने का विचार दिया । महेश घूरा जी ने भूमि दान दी । भारत से आये हुए पं. बालमुकुन्द द्विवेदी जी बी.ए. ने इस में शिक्षा कार्य चलाया । गौरव की बात है कि सन् १९६५ में आर्य भवन के पास डी.ए.वी. कॉलेज का निर्माण किया गया । इस में करीब ६०० विद्यार्थी हैं ।

भारतीय पत्रकार

सन् १९५४ में पं. कृष्ण शर्मा जी आये थे । वे एक पत्रकार और भजनोपदेश थे । विश्व, दौरे के उद्देश्य से पुनः १९६८ में पधारे । उन के

सहयोग से सन् १९६८ में भारतीय पत्रकार श्री महावीर प्रसाद अधिकारी जी टापू के स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर आये तो आर्य भवन में एक कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता की ।

हीरक जयन्ती

सन् १९७० में आर्य सभा मोरिशस ने विशेष रूप से हीरक जयन्ती मनाने की योजना बनाई, क्योंकि आर्य समाज के ६० साल हो गये थे । आयोजक कमिटी के प्रधान माननीय ग. तिलक जी थे । इस कार्य में चार चाँद लगाने के लिए स्वामी विद्यानन्द विदेह जी को आमन्त्रण दिया गया था । आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा और आर्य सभा के प्रधान स्वर्गीय माननीय रामसुन्दर मोदन जी और आर्य सभा के प्रधान श्री मोहनलाल मोहित जी ओ.बी.ई. ने भी अपने भाषणों के दौरान कहा था कि, 'मिल जुल कर काम करना चारिए' चहुँ दिशाओं में करीब १००,००० लोगों ने स्वामी जी की भाषण माला सुनी । एम.बी.सी. टी.वी. द्वारा भी सहयोग प्राप्त हुआ था । यहाँ तक कि पोर-लुई की एक मस्जिद में भी उन की तकरीर हुई । उन से प्रभावित होकर हमारे प्रधान मन्त्री सर शिवसागर रामगुलाम जी ने और वित्त मन्त्री माननीय विरास्वामी रिंगाडू जी ने उन्हें अपने घर भोजन के लिए निमन्त्रण दिया था ।

भारत में हमारा सम्मान

मोरिशस में आर्य समाज के कार्य-कलापों और उसकी खूबी को देखने के बाद गत् साल मई मास में अलवर राजस्थान, भारत में होने वाले ११वीं सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन की अध्यक्षता हमारे स्वर्गीय प्रधान मन्त्री

डाक्टर सर शिवसागर रामगुलाम जी को करने के लिए आमन्त्रण दिया गया था । उस मौके पर उन्होंने भाषण के दौरान यह भी कहा कि 'आर्य समाज वह आन्दोलन है जिस का सूत्रपात महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वैदिक धर्म के उत्थान के लिए किया था । हिन्दू धर्म ईश्वरीय देन है । वेद पर आश्रित आध्यात्मिक ज्ञान है ।' वापसी पर उन्होंने यहाँ हवाई अड्डे पर ऐलान किया था कि 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन से मैं बहुत प्रभावित हुआ । महा सम्मेलन का ओयोजन शानदार रहा ।'

मोरिशस में १२वां सम्मेलन

उस समय समस्त आर्य जगत् की आखें मोरिशस की ओर थीं, क्योंकि सामने १२ अगस्त से २६ अगस्त तक १२वाँ सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन आर्य सभा मोरिशस तथा आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा के तत्त्वावधान में होने जा रहा था । जिस में भाग लेने के लिए करीब ७०० से अधिक विदेश से आनेवाले विद्वान, नेता, प्रचारक थे । आयोजक कमिटी के प्रधान श्री मोहनलाल मोहित जी ओ.बी.ई. और मन्त्री श्री रामलाल गुमानी जी थे ।

उपसमितियाँ

आर्य सभा की निम्न उपसमितियाँ थीं – जायदाद, प्रेस, विद्या, वैदिक-वाणी, सरकारी सहायक पाठशाला, प्रचार, विद्वत्त (मण्डल), ध्रुवानन्द वैदिक पुस्तकालय, आर्य युवक संघ, आर्य महिला समाज, गयासिंग आश्रम, डी.ए.वी. कॉलेज समितियाँ, आर्य सभा के प्रधान श्री डाक्टर हरिदत्त घूरा थे और मन्त्री श्री स्वर्गीय तिलकप्रसाद कालीचरण जी आई.एस.ओ. थे ।

उपसंहार

मोरिशस में आर्य समाज ने बाल-विवाह, ऊँच-नीच की भावना, नशेबाज़ी, जुआ, अनमेल-विवाह, पाखण्ड, अविद्या, फूट, नास्तिकता आदि का खण्डन कर के वैदिक धर्म एकेश्वर-उपासना और हिन्दी भाषा का प्रचार किया ।

मोरिशस टापू में आर्य सभा की ३२७ शाखाएँ हैं, अलग से आर्य युवक और महिला समाज शाखाएँ भी हैं, जिन में शाम के समय सिलाई-लिखाई, पढ़ाई की जाती है । आर्य समाज के क्षेत्र में १०० पण्डिताएँ-पंडित हैं । आर्य समाजियों की संख्या डेढ़ लाख है । चल-अचल सम्पत्ति दस करोड़ की है । मोरिशस की आबादी १,२००,००० है । भारतीय मूल के लोगों की कुल संख्या में ५२ प्रतिशत हैं । मोरिशस के टापू का क्षेत्रफल ७२० वर्गमिल हैं ।

हमारे समाज सेवक–

आर्य सभा मोरिशस के कार्यकारिणी सदस्य निम्न प्रकार हैं :

प्रधान - डाक्टर हरिदत्त घूरा जी, उपप्रधान - सर्वश्री मोहनलाल मोहित जी ओ.बी.ई., सुखू रामप्रसाद जी ओ.बी.ई. और नारायणदास सुकन जी मन्त्री, तिलकप्रसाद कालीचरण जी आई.एस.ओ. उपमन्त्री, सिगुलाम तोरल जी और हरिलाल चुड़ामणि जी कोषाध्यक्ष, ब्रह्मदत्त नन्दलाल जी उपकोषाध्यक्ष - लक्ष्मीप्रसाद दसोई जी ।

सदस्य – सर सत्यकाम बुलेल जी जो तब कृषि मन्त्री थे पर अब लण्डन में मोरिशस के राजदूत हैं । सर्वश्री श्रद्धानन्द शिवदिन जी, डा. सुदर्शन जगेश्वर जी डी.एस.सी., श्री मुनीन्द्रनाथ वर्मा जी, रामलाल गुमानी जी, रामचरितर भोगन जी, बारिष्टर परमहंस बिसेसर जी, शिवप्रसाद निर्घिन जी, श्रीमती लखावती हरगोबिन जी और डाक्टर राजेन्द्र हरि जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा 'दिल्ली' के प्रतिनिधि हैं ।

मैनेजर - श्री दीपनारायण पदारथ जी हैं।

पंडित-पुरोहित निम्न प्रकार हैं–

पण्डित रामरूप रामलगन (दिवंगत)	पं. देवलाल सोब्रन जी एम.ए.
विष्णुदेव मेघराज	प्रयाग बिका
नारायण संजिवी (दिवंगत)	हरिप्रसाद पंचू (दिवंगत)
राजगुरु रामसाहा	भरत कौड़िया
जयनारायण द्वारका	बलदेव महाजन (दिवंगत)
रामरत्न विद्यार्थी (दिवंगत)	जगदेवसिंह गरजू (दिवंगत)
राजमन रामसाहा	लालमन खेमकरण
आचाना नागाडू (दिवंगत)	महाबीर किन्नू (दिवंगत)
मणिलाल चुड़ामणि	मुनेश्वर घुलेट
भरतलाल बालजीवन	जयनारायण संकूरा (दिवंगत)
बेणिमाधव अंचराज	रामावतारनाथ वर्मा (दिवंगत)
जदुननन द्वारका (दिवंगत)	शिवाजी सोनिया
साधु रामनारायण (दिवंगत)	गोपीनाथ चिंतामन (दिवंगत)
बिद्यानन्द नागेश्वर	धर्मवीर घूरा और रामरूप रामसाहा

सुयाक के आर्य समाज भवन में

प्रधान मन्त्री

डॉ. नवीन रामगुलाम का कृतज्ञता ज्ञापन

डा. नवीनचन्द्र रामगुलाम ने २१ जून सन् १९९८ ई. को सुयाक ग्राम में, आर्य समाज भवन में, लेडी सुशील रामगुलाम पुस्तकालय की शिलान्यास विधि के अवसर पर प्रधान पद को सम्भालते समय कहा कि यदि उन की माँ ने घर से निकल कर बाहर जाकर हिन्दी पढ़ी थी तो वह आर्य समाज की ही कृपा से ।

इस बात को सुनकर जनता की करतल ध्वनि से सारा भवन गूँज उठा ।

इस के अतिरिक्त उन के नाना जी हमेशा हिन्दी पाठशालाओं के वार्षिकोत्सवों में और अन्य अवसरों पर अन्य संस्थाओं को भी दान दिया करते थे ।

दिवाली सन्देश - सन् १९५५

दीपमालिका की खूबी और हमारा कर्त्तव्य

कोटि-कोटि जनता के मन में आशा तथा उत्साह के साथ विराजने वाली दीपमालिका फिर चली आई और फिर थोड़े समय में हमें अपनी मधुर

स्मृतियाँ छोड़ कर चली जायगी । दिवाली भारत-वर्ष का प्राचीन प्रकाश-पर्व है, जिस में भारतीय-संस्कृति छिपी हुई है । पर प्रश्न यह है कि हम ने इस अखण्ड पर्व के लिये क्या तैयारी की है ? यदि हम दिल से कुछ नहीं करेंगे तो भारतीय सभ्यता से हम विमुख हो जायेंगे ? हमारा यह पर्व कितना पवित्र, विशाल तथा महान् है ! अतः इस पर्व के उद्देश्यों को अगर हम अपनी विलासी जिन्दगी में अपनायेंगे तो हमारा स्तर बहुत ऊँचा हो जायगा और उन्नति हमारे चरण चूमेगी ।

कल की ही बात है कि जिस आशा एवं आत्मिक-ज्ञान से हमारे बाप-दादे असंख्य-दीपकों की पूजा करते थे तथा दिवाली को राज़ी-खुशी से मना कर उसकी शान में चार चाँद लगाते थे, आज वैसा समाँ अब हमारी आँखों से उतनी दूर हो गया है कि हम उसकी कल्पना नहीं कर सकते । आज विश्व के चहुं ओर से मानव को निगलने के लिए अंधकार तुला हुआ है पर प्राचीनकाल में हमारे पूर्वज दानवों से भी मित्रता करते थे और भारतीय-सभ्यता पर, कलंक का टीका न लगने देते थे । आज कहाँ गई वह भावना ?

इतिहास साक्षी है कि भारतीय जनता पर, चाहे कितनी विपत्तियाँ क्यों न आयी हों, दुख-सितम क्यों न झेले, सब कुछ न्योछावर कर उन लोगों ने दिल से दिवाली अपनाई है। चाहे कैसी भी हालत में हम रह चुके हैं, फिर भी हम किसी की कठपुतली न बने थे । यही वजह है कि आज हम जहाँ भी हैं, अटल हैं । कंगाल से कंगाल घर में कुछ क्षण के लिए मिट्टी के दीये अवश्य टिमटिमाटे हैं । अपने ऊपर दुख के काले-बादलों को मण्डराते हुए देख कर साहस से विमुख न हुए । यही कारण है कि संसार के कोने-कोने में भारतीय-संस्कृति को जितनी ख्याति है, उस का वर्णन करना कठिन

है । जब आज गांधी जी के अथक परिश्रम से भारत की गुलामी की बेड़ियाँ कट गई हैं तो हमारे हर्सोल्लास की सीमा न रही ।

प्रवासी भारतीयों के अन्तःकरण में इन दीपकों का महत्वपूर्ण स्थान है । हमारे अनेकों पर्वों में दीपकों की सहायता ली जाती है, लेकिन अफसोस इस का है कि जलते-टिमटिमाते हुए उन दीपों से सच्ची शिक्षा न ली जाती है, जिस से हमारी नाव भंवर से निकल जाए । करोड़ों दीपकों से हम वर्षो से बिछड़े हुए प्रवासी-भारतीयों के लिए यही शिक्षाप्रद बातें दिवाली से दिग्दर्शित होती हैं कि हम सभी भाई-भाई हैं । एक दूसरे से सच्चे दिल से मिलें । दूसरों की उलझनों को दूर करने में तल्लीन हों, ताकि हमारा भविष्य उज्ज्वल हो ।

ऐसे-ऐसे महान पर्वो के मौके पर कवियों, विद्वज्जनों, लेखकों, श्रोताओं, विचारकों तथा कर्मकाण्डियों को जो अमिट आनन्द मिलता होगा ! क्या हर प्राणी उसका भागी बन सकता है ? संसार के कोने-कोने में जहाँ भी आप विराजेंगे, आप को यही नज़र आएगा कि भारतीय संस्कृति अटल है । महाभारत काल से हमारी उस आदर्श भूमि को संसार की अनेकानेक जातियों ने रौंदा है और उसकी हँसी भी उड़ाई है, लेकिन विधाता ने हमारा साथ न छोड़ा इसलिए आज भारत पहले की तरह निखर आया है । विश्वास एक बहुत भारी चीज़ है । अन्धों को लाठी देने वाला विश्वास ही है । जिस राष्ट्र या जाति को अपने पूर्वजों के किये हुए पर विश्वास न होगा, वह चिरस्थाई नहीं रह सकती है । जिस समय हमारे पूर्वजों ने कुली के रूप में इस टापू में पदार्पण किया था, उस समय उन लोगों की आत्मा में कैसी आशा थी ? कैसी ज्वाला थी ? कैसा उत्साह था ? उन लोगों में अपनी प्राचीन संस्कृति

एवं सभ्यता पर अटल विश्वास था । यही कारण है कि मुदत्तों के बाद भी आज यहाँ पर उन्होंने इतनी ख्याति पाई है ।

यों तो दिवाली के मौके पर हम अपने उन महात्माओं को कदापि नहीं भूल जायेंगे, जिन की अमर छाप हमारे (टापू) इतिहास के पन्नों में अंकित हुई है । उन में से मणिलाल डाक्टर जी और स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज सर्वोपरि हैं । स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने हमारे टापू में पहली मर्तबा विराज कर एक नई धारा बहाई और इसी में हम आनन्द विभोर हो रहे हैं । आज कितने दुख की बात है कि वे कुछ मास पहले हमारे बीच से हमेशा के लिए चले गये ! किसी ने सत्य कहा कि मानव की सभी मुरादें पूरी नहीं होतीं । यदि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के द्वितीय आगमन पर टापू के दो आर्य समाजों में एकता होती तो यहाँ के आर्यों के यश में और वृद्धि दिखाई देती पर क्या करें ? पल भर की असावधानी से मानव एक दूसरे से इतनी दूर हो जाता है, यह दुखद बात है ।

आज के शुभावसर पर हमारे टापू में दीपमालिका की ज्यादा खूबी रहती है, सभी एक दूसरे से गले मिलते हैं लेकिन एक मनहूस दीवार की वजह से हमारे दीपक के दो टुंकड़े हो गये । मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के शुभागमन में अयोध्या वासियों ने मिलकर जो प्रेम-धारा बहाई और दीपकों की कतारों से अमावस्या की रात्रि को प्रकाशमय किया ! क्या वैसा समय हाथ नहीं लग सकता ?

दिखावे के रूप में दिवाली मनाने से क्या लाभ ? बाहर में सभी दिवाली मनाते हैं । पर जब मन का दीवाला निकलता तब सभी अपने किये

पर पश्चाताप करते हैं । जो समय हाथ से चला जाता है, हजारों बार सिर पटकने पर हाथ न लगता । कितनी ताज्जुब की बात है !

यों तो केवल दिवाली ही नहीं, बल्कि अनेकों मौकों पर आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्य विवादास्पद रहता है । जिस समय महात्मा आनन्द भिक्षु जी यहाँ पर पधारे थे, उस समय इस सभा ने उन महानात्मा के स्वागत में तन-मन-धन से टापू भर में नया वातावरण पैदा किया था । नाज़ सिनेमा भवन के इर्द-गिर्द की वह यज्ञ-शाला आज भी मोका-फ्लाक की जनता का आदर्श स्वरूप है । श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के मौके पर आर्य प्रतिनिधि सभा ने उस महान मनीषि के चरणों पर अपनी श्रद्धा के फूल चढ़ाये थे । इस के अलावा प्रस्तुत अंक, जो हमारे प्रतिष्ठित लोगों की सेवा में सादर भेंट की जा रही है, इसी सभा की एक भारी देन है । इसीलिए दीपमालिका से हम यह आशा रखें कि हमारे पथप्रदर्शकों में साहस-शक्ति हो, ताकि वे इस से ज्यादा हमारी सेवा करें, क्योंकि हमारे पथप्रदर्शकों की कृपा पर ही टापू का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है ।

दिवाली को शुद्धता तथा कला का पर्व माना जाता है । करोड़ों वर्षों से कार्तिक की अमावस्या को दूर करते हुए, यह दिवाली चली जाती है; यद्यपि हमारे इतिहास में अनेकों कलंक लगे, हमारे ऊपर विपत्तियाँ आईं पर दीपमालिका का सन्देश हमारे लिए हमेशा दिव्य रहा है – निराशा, अंधकार आदि को मिटा देने वाला सन्देश है । गीता के प्रमाणानुकूल हम वैसे ही बढ़ते जायें – जैसे समुद्र की छाती चीरते हुए कोई जहाज अपनी मंज़िल तक पहुँच जाता है । एक पड़ोसी के यहाँ इतना प्रकाश है, जिस से हम भय खा सकते हैं और दूसरे के यहाँ अन्धकार है तो ऐसी परिस्थिति में कैसी

दिवाली ? बल्कि कहना यह चाहिए कि समाज के लिए शोक मानाया जाता है । देश, नगर-ग्राम में यदि हरेक दीपक से स्नेह तथा मित्रता की झलक दिग्दर्शित न हो, तो वहाँ पर सच्ची दिवाली, सच्चा पर्व कहाँ ? सोने के दीये में घी जलाने से क्या फायदा जब कि हमारे भाई दाने-दाने के लिए मोहताज हैं । हमारे जीवन में सत्यता की नितान्त कमी है । इसी से जगह-जगह पर लोग गिरोह बनाकर अपने भाइयों को तबाह करने में लगे हुए हैं ? यह सब इसीलिए है कि अपने मन में भाई के प्रति द्वषाग्नि धधकती है । क्या यही विश्वाचार्य दयानन्द जी महाराज का आदर्श है ? दूसरों को देख कर जलना ?

दयानन्द जी महाराज में सत्य के प्रति कितना दृढ़ विश्वास था । सत्य के लिए उन्होंने भारतवर्ष में वेदों का डंका पुनः बजाया । उन्होंने लगभग ३५ वर्ष तक ज्ञान की खोज की । जिस समय सन् १८६५ में उन्होंने अपने आचार्य विरजानन्द जी से विदा ली, उस समय भारत की परिस्थिति दुखद थी । भारतीय इतिहास में दयानन्द सरस्वती जी का आगमन एक नये युग का श्रीगणेश माना जाता है । उन्होंने अपने अथक परिश्रम और अतुलनीय त्याग से भारत वर्ष के नये युग का प्रारम्भ किया । इसीलिए हम कह सकते हैं कि यदि संसार में किसी ने कार्तिक की घोर अमावस्या में सत्य की ज्योति की खोज में अपने प्राणों की बाज़ी लगाई थी, तो वे दयानन्द ही थे । इससे उन्होंने प्रकाश-पुन्ज में अपना भौतिक शरीर त्यागा है । पर आज हम उनके लिये क्या कर रहे हैं ? सच तो यह है कि उनकी आड़ में लोगों को धोखा देना कुछ लोगों का कर्त्तव्य बना है, जब कि उनका आदर्श यह होना चाहिए था कि हम सभी

बिछड़े हुओं से गले लगावें, अन्धों को राह दिखावें । लेकिन हम हैं कि अपने भाइयों को अपने घर से दूर करने में अपना दिमाग लड़ाये जा रहे हैं । जिन लोगों की आँखें हैं, उन लोगों को अन्धा बनाने में गौरव क्या यही है ! उन महान आचार्य का सन्देश यही है ? सत् कर्म छोड़कर नेतागिरी करने में क्या फायदा ?

केवल भारत ही नहीं, सारे संसार के लिये स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी की शिक्षा अनुकरणीय है । उनका मान, प्रतिष्ठा तथा इज्जत सर्वत्र पाई जाती है । भारतीय-इतिहास में उनका नाम अमर रहेगा, क्योंकि गिरते हुए भारत वर्ष में उन्होंने नई स्फूर्ति पैदा की है, जिस से भारत थोड़े समय में खड़ा हो उठा । इसका मतलब यह नहीं है कि हम महात्मा गांधी, डा. राजेन्द्रप्रसाद, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, आचार्य विनोबा तथा पुरुषोत्तम टेडन दास आदि को भूल रहे हैं । यदि भारत का यशोगान सारे विश्व में हो रहा है और हमारी दिवाली में ज्यादा चमक तथा झलक है तो इन लोगों की ही महत्ती कृपा है । इन महात्माओं ने अपने राष्ट्र के लिये अपना जीवन न्यौछावर किया ।

जिस भाषा में प्रस्तुत अंक प्रकाशित हो रहा है, उस भाषा की अपने टापू में उन्नति देखकर हमारा मन बांसों उछलता है । टापू के कोने-कोने में हिन्दू जनता हमारी भाषा से अपनी डोर बांध रही है । इससे कहा जा सकता है, हमारा भविष्य उज्ज्वल है । अन्त में दिवाली के मौके पर सभी लोगों को अपनी शुभकामनाएँ अर्पित करते हैं । हमारे टापू में जितनी सभाएँ हैं, वे दिवाली के मोके पर अपने आस-पास का अन्धकार दूर करने में कामयाबी हासिल करें । यह हमारी आशा है और उन सभी

के साथ हमारा प्रेम भी अटल है । चाहे जिन लोगों ने अपनी अल्प बुद्धि की वजह से हमारे कामों में बाधाएँ डालीं, उन के प्रति भी हमारी शुभकामनाएँ हैं ।

जय भारत ! जय मोरिशस ! जय हिन्द !

हमारी परीक्षाएँ

इस देश में करीब १५ सालों से धार्मिक और साहित्यिक परीक्षाएँ होती चली आ रही हैं, जिन में देश के युवक और युवतियाँ अपनी दैनिक जीवन की उल्झनों को भूल कर और सन्तोष परिश्रम कर भाग लेते हैं और साथ ही वे काफ़ी तादाद में सफलता प्राप्त भी करते हैं जिसे देख कर हमें गौरव होता है, क्योंकि देश के कोने-कोने के युवक-युवतियों की सफलता हमारे समाज की सफलता है ।

टापू में कुछ ऐसी भी संस्थाएँ हैं जिन का सहयोग हमारी परीक्षाओं में सराहनीय है । संस्थाओं के अधिकारी कितने त्याग से परीक्षा केन्द्र में सुबह से शाम तक दो-तीन दिन परीक्षण में अपना हाथ बँटाते हैं, उन्हें भुलाया नहीं जा सकता । साहित्य प्रेम और धर्म भावना का प्रचार हो, हमारी सामाजिक स्थिति उन्नत हो और देश के आगे बढ़ने में कोई बाधा न हो, यही भावना लेकर वे कार्य में लग जाते हैं ।

मोरिशस में आज तक धार्मिक पढ़ाई सि. शास्त्री तथा सि. वाचस्पति, गीता, धर्म रत्न तथा विशारद और परिचय तथा प्रथमा की होती आ रही

है । निकट भविष्य में हमारे पथप्रदर्शकों का विचार है कि इन से और बड़ी परीक्षाएँ यहाँ पर की जाएँ और इन के लिए लिखा पढ़ी भारत की संस्थाओं से हो रही है । इससे आगे बढ़ने का यही एक रीति है कि ऊँची परीक्षाएँ यहाँ पर कायम हो जावें । शिक्षा विभाग द्वारा भी अंग्रेजी के साथ माध्यमिक हिन्दी की परीक्षाएँ जारी हैं और उन में भी सफलता हमारे माथे लग रही है ।

चाहे कुछ भी हो केवल परीक्षाओं में सफल हो जाना ही काफ़ी नहीं है, बल्कि हम उन युवक-युवतियों से प्रार्थना करना चाहते हैं कि जिन लोगों ने हिन्दी सागर में गोता लगाया है । अतः वे समीप के अनपढ़ लड़के-लड़कियों को धार्मिक तथा साहित्यिक ज्ञान देने का अनुग्रह करें, तभी घर-घर ज्योति जलेगी ।

समाजवाद – शुक्रवार ता. २३.६.१९६१

पुरस्कार वितरणोत्सव

(श्री धर्मवीर घूरा जी)

विगत गुरुवार को सूचना-कार्यालय में स्व. मान. बिजाधर जी के प्रधानत्व में और अनेक प्रतिष्ठित सज्जनों के मध्य में पुरस्कार वितरणोत्सव निर्विघ्नतापूर्वक सम्पन्न हुआ । कृषि मन्त्री बलेल जी ने टापू की आबादी और खाद्य पदार्थ विषय पर एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया था, जिस

में टापू के अनेक भाषाओं के विद्वानों ने भाग लिया था । इस अवसर पर टापू की आबादी और खाद्य पदार्थ के सम्बन्ध में मान. बिजाधर जी का एक सारगर्भित एवं सामयिक भाषण हुआ । तत्पश्चात् आपने अपने कर-कमलों से पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान कर धन्यवाद समर्पण किया ।

नीचे लिखे महानुभाव पुरस्कार विजेता हुए :-

श्री धर्मवीर घूरा, प्रथम पुरस्कार स्वर्ण पदक, श्री जाक जीना, कुमारी वृंदा गोपाल, ल. मंगर, क. रिबाई, जगतप्रकाश तोरल, धर्मचन्द सुभा, ए.एस. रामजीत, जे. बिगन, पे. ताकोक, एफ.आई. अली ।

सभी पुरस्कार विजेताओं के साथ-ही-साथ खास कर हम हिन्दी प्रेमी होनहार युवक धर्मवीर घूरा जो प्रथम पुरस्कार के विजेता हुए हैं – हार्दिक बधाई समर्पण करते हैं । आप सालों से हिन्दी-क्षेत्र में संघर्ष कर रहे हैं । स्थानीय हिन्दी अखबारों में आपके सामयिक लेख छपते रहते हैं । स्थानीय रेडियो पर भी आपके अनेक भाषण और रूपक आदि प्रसारित हो चुके हैं और सामाजिक कार्यों में भी आप पर्याप्त रूप से भाग लेकर हाथ बँटाते रहते हैं । अतः कहा जा सकता है कि आप के इस अटूट हिन्दी प्रेम के फलस्वरूप ही आज आप को गौरवान्वित किया जा रहा है ।

इस दिशा में आप विशेष प्रगति करें, यह हमारी शुभकामना है ।

–एक हिन्दी प्रेमी

मोरिशस में पं. उषर्बुध जी के अंतिम २४ घण्टे

पं. उषर्बुध जी, एम.ए. मोरिशस टापू में २५ अगस्त को विराजे। टापू का दौरा रात-दिन करके यहाँ के चोटी के विद्वानों, कलाकारों, लेखकों, कवियों, गायिकाओं, उद्योगपतियों तथा समाज सेवकों और मजदूरों से मिले।

पर कुछ पंक्तियों में उन के साथ जो अन्तिम २४ घण्टे मैंने बिताये, उनकी ही चर्चा करना चाहता हूँ। मैंने प्रारम्भ से उनके करीब ८ प्रवचन सुने। उन के प्रथम दर्शन मैंने त्रिओले के महा यज्ञ में किये थे। श्री ब्र. नन्दलाल जी के यहाँ साथ ही हम ने भोजन किया था।

शनिवार ता. १३ की शाम चार बजे और रविवार ता. १४ अगस्त को दिन के एक बजे उनका अन्तिम प्रवचन निर्धिन भवन ओ कुले में हुआ। शनिवार की शाम उन का प्रवचन कुछ सादगी लिये रहा। पर रात में आठ बजे हँसी-मजाक के साथ डाक्टर शिवगोबिन्द जी के घर पर करीब दो घण्टे टापू के बारे में बड़ी गहराई के साथ बातें हुईं। रात नौ बजे हम संगीतज्ञ स्वर्गीय डाक्टर ईश्वरदत्त नन्दलाल जी के घर पहुँचे और वहाँ पर (वाक्वा) १२ बजे तक संगीत का आनन्द लेते रहे। डा. नन्दलाल ने अपनी स्वरचित कविताएँ पुस्तकाकार में हमें दिखायीं।

प्रातःकाल आठ बजे रविवार को लावेनीर आर्य सभा में श्री मोहनलाल मोहित जी के समक्ष पंडित उषर्बुध जी ने मोक्ष-प्राप्ति पर भाषण दिया।

१० बजे दिन में एक आर्य परिवार में पंडित जी ने एक यज्ञ किया, इस के बाद दिन में एक बजे उन का बिदाई-सम्मेलन निर्घिन भवन में हुआ । अन्तिम प्रवचन से पूर्व श्री मोहनलाल मोहित जी ने आर्य सभा मोरिशस की ओर से और क्युर्पीप आर्य समाज की ओर से पं. महावीर जदू जी ने बारी-बारी से माला उन महान योगी के गले में पहनायी ।

३.३० बजे शाम को हम हवाई अड्डे पर पहुँचे । आर्य सभा के प्रधान श्री मोहनलाल मोहित जी, क्युर्पीप रोड आर्य समाज के प्रधान स्वर्गीय डा. शिवगोविन्द जी, स्वर्गीय श्री प्रेमचन्द ओरी जी, श्री अनिल प्रयाग जी, श्री अनथ जी, श्री हंसलाल जी, पं. महावीर जदू जी आदि ने प्रेम-श्रद्धा के साथ उन महान योगी की विदाई की ।

श्री राजेन्द्र मोहित जी ने पंडित जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की । हवाई जहाज में चढ़ने से पूर्व उन्होंने कहा कि अब तो मोरिशस में भी मेरे बहुत से परिवार हो गये हैं ।

आर्य समाज शताब्दी प्रकाशन समिति की ओर से आभार और धन्यवाद

यह कम गौरव की बात नहीं है कि आर्य समाज जैसी जीवित-जागृत संस्था की १००वीं जयन्ती मनाई जा रही है । यदि केवल मोरिशस में हम हिन्द महासागर के इस भाग में यह समारोह मनाते तो शायद हम यह सोचते

कि हम ने कमाल का बड़ा काम किया है । पर हमारा ऐसा सोचना गलत सिद्ध होता । यहाँ पर स्थिति तो यह है कि सारे विश्व में जहाँ पर भी आर्य समाज की रोशनी पहुँची है वहाँ पर इस बेला में इस पावन अवसर पर आर्यत्व पर विचार-विनिमय करने के लिए गोष्ठियाँ चल रही हैं ।

मोरिशस में तो हमने मिल-जुल कर साहित्यिक, साँस्कृतिक तथा सामाजिक दृष्टि से यह शताब्दी मनाने की योजना बनाई है । इस में हमें सफलता कहाँ तक प्राप्त होगी यह तो टापू की जनता का सहयोग और भविष्य ही हमें बताएगा । फिर भी हम आश्वस्त है कि इस आयोजन में सफलता मिलेगी, क्योंकि आर्य सभा मोरिशस को पूरे सहयोग और योगदान की प्राप्ति हो रही है । साथ ही आर्य समाज शताब्दी प्रकाशन समिति ने 'आर्योदय' पत्र का विशेषाँक प्रकाशित करने का निर्णय किया और टापू के लेखकों से सहयोग हमें प्राप्त हुआ है । उस से हमें गर्वका अनुभव हो रहा है । प्रकाशन समिति की माँग पर जिस उत्साह से लेखकों और लेखिकाओं ने हमें अपना सहयोग प्रदान किया है उसे हम कदापि भी विस्मृत न कर पावेंगे । यदि उचित समय पर इतने लेख और संस्थाओं के नेताओं द्वारा इतने शुभकामना के सन्देश हमें प्राप्त न होते तो प्रकाशन में हमारा कार्य केवल जटिल ही न होता, बल्कि असम्भव भी हो जाता ।

अपने रचनाकारों को इस बेजोड़ सहयोग के लिए धन्यवाद करते हुए उनके प्रति आभार भी प्रकट करना हमारा परम कर्त्तव्य है । साथ ही पं. वेद पाल जी एम.ए. और श्री जसकरण मोहित जी के प्रति भी हमारा आभार है, क्योंकि इन दोनों महानुभावों ने हिन्दी और अंग्रेज़ी लेखों के सम्पादन में अपना पूरा योगदान देने में कोई कसर न रख छोड़ी । 'आर्योदय' पत्र के सम्पादक

श्री मोहनलाल मोहित जी O.B.E. के प्रति भी हमारा धन्यवाद है, कारण कि 'आर्योदय' को विशेषाँक-रूप देने में आप ने अथक परिश्रम किया ।

आर्य समाज शताब्दी प्रकाशन समिति के सभी सदस्यों और आर्य जगत के शुभ चिंतकों के प्रति भी हमारा धन्यवाद है, जिन्होंने इस शताब्दी समारोह के मौके पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में हमें अपनी बहुमूल्य सेवा प्रदान की है ।

धर्मवीर घूरा

मन्त्री - प्रकाशन समिति

* * *

आर्य समाज शताब्दी

प्रकाशन समिति का गठन निम्न प्रकार किया गया था :-

आर्य सभा के प्रधान श्री मोहनलाल मोहित जी O.B.E. और आर्य सभा के मन्त्री श्री तिलकप्रसाद कालीचरण जी के सहयोग से ।

प्रधान	-	श्री जसकरण मोहित
उपप्रधान	-	डॉ. सुदर्शन जगेसर
मन्त्री	-	पं. धर्मवीर घूरा
उपमन्त्री	-	श्री केशवदत्त चिंतामणि
सदस्य	-	श्री रामलाल गुमानी O.B.E.
		श्री मोती तोरल M.B.E.
		श्री सुखू रामप्रसाद M.B.E.

श्री नारायणदास सुकन, श्री हरिदेव रामचरण, श्री रामसुभग गोबरधन, श्री रमेश सिबोरथ, पं. धर्मेन्द्र रिकाय और श्री जगदीश मकुनलाल ।

आर्य समाज स्थापना शताब्दी विशेषाँक सन् १८७५ ई. सन् १९७५ ई.

आर्य समाज शताब्दी समारोह का ऐतिहासिक महत्व

नई दिल्ली, भारत में गत २४ से २८ दिसंबर १९७५ तक आर्य समाज शताब्दी समारोह सब दृष्टियों से सफलतापूर्वक संपन्न रहा । भारतीय आर्य नेताओं की यह राय थी कि इस समारोह में दस लाख जनता भाग लेगी पर गौरव के साथ यह देखा गया कि उक्त संख्या से भी अधिक लोग देश-विदेश तथा भारत के सभी कोनों से आकर बड़ी तनमयता से इस कार्य में भाग लेते रहे । अखबारवालों ने कितना खूब कहा कि सोलह लाख लोगों ने इस महान अनुष्ठान में भाग लिया है ।

इस महान अनुष्ठान में अनेक देशों से आए विविध जनों ने अपने को ब्रह्म-होता-उद्‌गाता अध्वर्यु के रूप में उपस्थित किया । महान भारतीय संस्कृति की विशाल धारा में अनेकता की तरंगें उछलती-कूदती एकता के गीत गाते दिखीं ।

२४ दिसंबर के प्रातःकाल को स्वामी ब्रह्मानंद जी, डंडी जी की अध्यक्षता में यज्ञ की तैयारी चल पड़ी थी। आचार्य श्री कृष्ण जी यज्ञ की पूर्णता के लिए तल्लीन थे ।

श्री लाला रामगोपाल शालवाले जी, जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं वे सपत्नीक यज्ञ की शोभा बढ़ा रहे थे और मोरिशस आर्य सभा के कोषाध्यक्ष श्री ब्रह्मदत्त नंदलाल जी सपत्नीक इस महान यज्ञ में बैठे थे । गौरव की बात यह रही कि वह 'गार्हपत्याग्नि' शाहपूरा महाराज से आई हुई थी जिस का आधान स्वयं महर्षि दयानन्द जी ने किया था । जिन को यह अग्नि एक कुंड के सहारे यज्ञ मंडप में देखने का मौका मिला, वह कितना भाग्यशाली अपने-आप को अनुभव कर सकता है, यह आप कल्पना कर सकते हैं ।

यज्ञ से पूर्व आचार्य श्री कृष्ण जी ने सब का स्वागत किया । यहाँ पर यज्ञ के बाद आचार्य धर्मदेव विद्या मार्तंड जी ने सामवेद का स्वरूप समझाया, आत्मा की व्याकुलता तथा परमात्मा का स्वरूप बताया ।

स्वामी विद्यानन्द विदेह जी ने कहा कि–'संसार में २,७०० भाषाएँ बोली जाती हैं अतः जितनी अधिक भाषाओं में हो सके वेदों की व्याख्याएँ छपवा कर बाँटनी चाहिएँ । वाद-विवाद का समय अब न रहा, मिल-जुल कर काम करो; क्योंकि बहुत काम पड़े हुए हैं ।' ये वाक्य स्वामी विदेह जी ने बड़े ही मीठे शब्दों में कहे । ध्वजारोहण स्वामी आनंद जी ने किया ।

दिन का जो दूसरा सांस्कृतिक, धार्मिक कार्यक्रम हुआ, जिस के अध्यक्ष स्वामी सत्य प्रकाश जी थे, सर्वप्रथम उसमें चार लड़कियों द्वारा प्रार्थना

की गई । सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला शालवाले जी ने स्वागत-भाषण के दौरान कहा कि–संसार में आर्य-समाज ने जितना सहयोग सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों में किया, उसका वर्णन यहाँ पर विस्तार-रूप से करना कठिन है । यहाँ से हम मानव-सेवा करने की प्रेरणा लेकर जावें । महर्षि दयानन्द जी ने कितना उत्तम विचार दिया है कि–'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है ।' हम चाहते हैं कि आर्य-समाज विश्वशांति तथा विश्व-बंधुत्व की स्थापना में हमेशा कार्यरत रहे । फिर आप ने विशाल जन समूह के समक्ष कहा कि हम सभी प्रकार की सांप्रदायिकता को समाप्त करना चाहते हैं ।

स्वामी आनंद जी इस कार्यक्रम के अध्यक्ष पद पर आसीन थे । उन के स्वागत में श्री ओमप्रकाश त्यागी जी के बाद मोरिशस, दक्षिण अफ्रीका, केनिया, सुरिनाम, बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब, बंबई, राजस्थान, हरियाणा, मध्य-भारत, बंगाल आदि के प्रतिनिधियों ने फूलों की मालाएँ समर्पित कीं । फिर श्री रामगोपाल शालवाले जी ने एक लंबा भाषण दिया ।

भारत के महामहिम उप-राष्ट्रपति श्री वासप्पा दासप्पा जटी जी ने इस समारोह का उद्घाटन किया ।

आप ने आर्य समाज शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित महाधिवेशन का उद्घाटन करते हुए हर्ष प्रगट किया और सभी से अपील की कि शताब्दी-वर्ष में हम उन कार्यों का सिंहावलोकन करें जो विगत सौ वर्षों में आर्य समाज ने किये हैं । इस के साथ ही यह भी विचार करें कि जिस ध्येय से प्रेरित हो कर ये काम आरंभ हुए थे, उन में कहाँ तक सफलता मिली है, आदि ।

इस समारोह में मोरिशस के प्रथम प्रधान मंत्री सर शिवसागर रामगुलाम जी का संदेश जब श्री ओमप्रकाश त्यागी ने पढ़ा तो करतल ध्वनियों से विशाल पंडाल गूँज उठा । फिर उड़ीसा के गवर्नर के, नैरोबी आदि स्थानों से आये संदेश पढ़े गए ।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के अध्यक्ष भारतीय कृषि एवं खाद्य-मंत्री श्री जगजीवनराम जी ने कहा कि गत शताब्दी में गुजरात ने विश्व को दो महापुरुष दिये । एक महात्मा गांधी और दूसरा महर्षि दयानन्द । दोनों क्रांतिकारी रहे । आप दोनों ने बहुत अपूर्व काम किया । गुरुकुल खोले और अनेकों सिपाही पैदा किए ।' आप ने और कहा कि 'यहाँ पर हम एक ऐसे विशाल भारत-भवन की कल्पना करें, जिससे भारत के बाहर बसने वाले हिंदू सोचें कि भारत में उनके लिए भी कुछ बना है ।' आप ने एक लंबे भाषण में यह विचार व्यक्त किया कि 'दुनिया को बचाने की क्षमता केवल भारत में ही है ।'

इस मौके पर मोरिशस के राजदूत श्री रवींद्र घरभरण जी ने एक ओजस्वी भाषण में यह विचार व्यक्त किया कि 'मोरिशस के नौजवानों ने दहेज-प्रथा को और जाति-पाँति के भूत को मार भगाया है । जाति-पाँति को दूर करने में आर्य समाज ने जो योगदान दिया है, उसके लिए हम आभार प्रगट करते हैं ।'

आप ने यह भी कहा कि 'हमारे प्रधान-मंत्री सर शिवसागर रामगुलाम जी कार्यवश न आ सके । पर उन्होंने अपना संदेश भेजा है । कार्य की सफलता के लिए अपनी शुभ कामनाएँ भी भेजी हैं और मुझे उन्होंने यह भी

कहा कि 'जो आर्य सिपाही यहाँ पर संसार के कोने-कोने से पधारे हैं, उन्हें शुभकामनाएँ दें ।'

मोरिशस के उप-कृषि सचिव माननीय श्री गौतम तिलक जी ने एक गोष्ठी के दौरान कहा कि 'हम ने हिन्दी-भाषा को जीवित-जागृत रखा है । इस सम्मेलन में हम मोरिशसवासी बहुत ही खुशी के साथ तीन सौ की संख्या में भाग ले रहे हैं । हम लोगों ने अपनी संस्कृति नहीं छोड़ी । भाषण के अंत में मोरिशस द्वारा राष्ट्र संघ में हिन्दी भाषा को स्थान देने की आवश्यकता की भी चर्चा की ।'

श्री रामसुंदर मोदन जी ने भी एक बहुत ही सुंदर भाषण दिया, जिसमें आप ने कहा कि आर्य-समाज ने संसार के अन्य देशों में जो सामाजिक-क्रांति की है, उससे लाखों नर-नारियों का जीवन उन्नत है । मोरिशस में आज जो सामाजिक जागरण है, उस में तथा स्वातंत्र्य-संघर्ष में आर्य-समाज का महत्वपूर्ण योगदान है ।

अंतर्राष्ट्रीय विश्व धर्म सम्मेलन अनूठा रहा । इस सम्मेलन में भारत के राष्ट्रपति श्री फक्ररुद्दीन अली अहमद ने एक बहुत ही सुंदर तथा ओजस्वी भाषण दिया । आप ने इस बात के लिए खुशी प्रगट की कि आप को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से इस शानदार ऐतिहासिक उत्सव में आमंत्रण दे कर के जो सम्मान किया है, उससे आप बहुत ही प्रभावित हुए हैं । फिर आप ने इस कार्य की सफलता के लिए शुभकामनाएँ अर्पित कीं । एक दूसरे आयोजन में इस बात के लिए भारत के राष्ट्रपति श्री फक्ररुद्दीन अली अहमद ने सार्वदेशिक सभा को बधाई दी, क्योंकि संसार के चोटी के धार्मिक नेताओं को एक मंच पर लाकर अपना विचार व्यक्त करने का मौका प्रदान किया है । और, उन लोगों का सम्मान भी किया है । आप ने इस बात पर बल

दिया कि संसार का कोई भी धर्म हो, उसमें जो अच्छी बातें हैं, उन्हें अपनानी चाहिएँ। जिससे मानवता की भावना के प्रचार-प्रसार में बल मिले। हमारे देश में जितने भी धर्म हैं, सभी को धार्मिक कार्य करने का बराबर मौका है। आप ने गुरु नानकदेव, कबीर, बाबा फरीद की कही गई अच्छी बातों का भी बखान किया। उन्होंने एकता, भाईचारे और शांति का जो संदेश दिया है, उस से सभी लोग बहुत ही प्रभावित हुए। लोग चाहे किसी भी धर्म के क्यों न हों सभी का एक ही मकसद है–संसार के रचने वाले की महानता को स्वीकार करना। इस भाषण के बाद अनेकों धार्मिक नेताओं ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए एकता से रहने की अपील की।

शोभा-यात्रा भी खूब रही। इस यात्रा को देखने के लिए दिल्लीवासियों ने अपना सब काम छोड़ कर सात घण्टों तक रास्ते के दोनों ओर टकटकी लगाए खड़े रहे। हाथी, ऊँट, घोड़े, लोरियाँ, बसें आदि आदि भी इस शोभा-यात्रा में शामिल थे। दस मीलों तक दिल्ली की सड़कों पर यह यात्रा चलती रही। दिन में दस बजे से तैयारी शुरू हुई। ग्यारह से साढ़े पाँच बजे शाम तक यात्रा होती रही। कहा जाता है कि भारत में किसी भी धार्मिक कार्य में ऐसी शोभा-यात्रा कभी भी न देखी गई है। इसकी सफलता के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री ओमप्रकाश त्यागी जी ने अपनी खुशी प्रगट की। इस बात के लिए सब को धन्यवाद किया कि कहीं भी नियंत्रण भंग नहीं किया गया। और, जिस आत्मीयता से पुलिस तथा आर्यवीर दल के कार्यकर्ताओं ने शांति स्थापित करने में हाथ बँटाया, उस के लिए त्यागी जी ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। साथ ही बधाई भी दी। गौरव की बात तो यह रही कि जामा मस्जिद के मौलाना साहब, सिखों के गुरुद्वारे के आचार्य आदि भी जुलूस के स्वागत के लिए रास्ते पर निकले और फूल मालाएँ अर्पित

कीं । यात्रियों पर घरों की छतों से माताएँ, बहनें और पुरुषवर्ग भी पुष्पों की वर्षा कर रहे थे । कहीं-कहीं तो जुलूस को रोक-रोक कर के दिल्ली-निवासी और छोटे-छोटे बच्चे भी यात्रियों को फूल-मालाएँ अर्पित कर रहे थे । साथ ही जल-पान और फल भी दिया करते थे, जो एकदम प्रशंसनीय है । लोगों में ऐसा उत्साह देखा गया कि सात घण्टों तक चलने के बाद भी लोग थके नहीं और रामलीला मैदान में लौटने के बाद दस-ग्यारह बजे रात तक एक-दूसरे के बीच हँसी-खुशी के साथ बात-चीत करते रहे ।

महिला-सम्मेलन भी खूब रहा । इसका उद्‌घाटन मोरिशस आर्य महिला मंडल की मन्त्री श्रीमती लखावती हरगोविंद जी ने किया । श्रीमती हरगोविंद ने आर्य-समाज तथा महर्षि दयानन्द द्वारा महिला जगत् के लिए किए गए उपकारों का बखान कृतज्ञता के शब्दों में किया । दहेज-प्रथा के विरुद्ध भी आप ने बातें कीं । दिल्ली में तथा भारत के अन्य प्रान्तों में मोरिशसवासियों के प्रति किए गए स्वागतों तथा सेवाओं की चर्चा करते हुए आभार प्रगट किया ।

इस सम्मेलन में बहनों ने दिल खोल कर उन अत्याचारों के विरोध आवाज़ उठाई, जिसे समाज ने उन पर किया । बहनों का यह भी मत रहा है कि यदि महर्षि दयानन्द और आर्य-समाज उनके प्रति आवाज़ न उठाते होते तो आज भी वे दासता के चंगुल में फँसी रहतीं । इस सम्मेलन में बहन ऊर्मिला देवी शास्त्री जी ने इतना तक कहा कि 'आप बहनों को यह प्रण कर लेना चाहिए, "यदि सुयोग्य वर न मिले और सुयोग वर मिलने पर कोई दहेज की माँग करे तो जीवन भर ब्रह्मचर्य पालन करने की प्रतिज्ञा कर लेंगी ।" ऐसे लोगों से बच कर रहना चाहिए, जो ऊपर से आर्य समाजी हैं भीतर से

दहेज़ के लोभी । इस सम्मेलन की अध्यक्षता सुश्री कु. सविता बहन जी (नानजी भाई कालीदास) ने की थी ।

वेद-सम्मेलन का प्रभाव बहुत अच्छा रहा । इस सम्मेलन में वेदों की व्याख्या संसार की विभिन्न भाषाओं में कर के, प्रकाशन करने के संबंध पर विशेष रूप से बल दिया गया । दक्षिण-अफ्रीका के श्री सुखराज छोटे जी ने कहा कि दक्षिण-अफ्रीकी इस कार्य में अग्रणी हैं, क्योंकि अँग्रेज़ी-भाषा में वेदों के गूढ़ तत्वों को छाप करके प्रचार करने से दक्षिण-अफ्रीका के आर्य समाजी लगे हुए हैं । पं. नरदेव जी ने इस बात के लिए सभी से अपील की कि जहाँ तक हो सके सभी को वैदिक ज्ञान-प्रसारण में पूरा बल लगाना चाहिए, क्योंकि वेद ही सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है । इस सम्मेलन के अध्यक्ष पं. सत्यव्रत जी सिद्धांतालंकार थे ।

शताब्दी के इस मौके पर एक बहुत ही रोचक तथा शानदार प्रदर्शिनी का आयोजन किया गया था, जिसे करीब पाँच लाख जनता ने देखा । इस में छोटे-बड़े मिला कर दयानन्द संबंधी चार हज़ार तस्वीरें वा चार हज़ार पुस्तकें रखी गई थीं । शराब-विरोधी और मांस-विरोधी आंदोलन संबंधी जो ट्रक और तस्वीरें रखी गई थीं, वे हृदय विदारक थीं । उस में एक ऐसे परिवार की कहानी भी प्रदर्शित की गई थी, जो शराब के कारण बर्बाद हो चला है । प्रदर्शनी के तंबुओं में लोग खाचाखच भरे रहते थे । यहाँ तक कि घण्टों तक लंबी कतारें लगी रहती थीं ।

अंतर्राष्ट्रीय विश्व धर्म-सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी सत्यप्रकाश जी थे । आप ने अपने भाषण में कितना ही खूब कहा था कि विज्ञान और नव-

आविष्कारों ने मानव का जीवन एकदम सरल बना डाला है । पर अफ़सोस की बात यह है कि मानव के दिल में इन से अब तक कभी भी सच्ची शांति न मिली, जिस के कारण मानवता दुख से तड़प रही है । आज भी मानव-समाज को सच्ची शांति की तितांत ज़रूरत है । पर इस क्षेत्र में जितना सहयोग आर्य समाज दे रहा है, इतना कौन दे रहा है ।

व्यवस्था

अच्छी व्यवस्था सर्वत्र रही, जिस के लिए सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारीगण और आर्य वीर दल के नेतागण बधाई के पात्र हैं । भोजन, दवा, सेवा की भी व्यवस्था की तारीफ़ जितनी की जाए, कम है ।

सम्मान

शताब्दी समारोह के अंत में आर्य जगत के अंदर तथा हिन्दू क्षेत्रों में काम करने वाले उन महारथियों का सम्मान किया गया, जिन्होंने अपने को तपा कर मानव सेवा का काम किया ।

संन्यास

यह विचार भी रहा कि इस समारोह में सौ महानुभाव संन्यास ग्रहण करते पर केवल तीन ही महानुभावों में अपनी इस इच्छा को पूरा करने का साहस हुआ ।

दान

आर्य समाज मोरिशस की ओर से श्री मोहनलाल मोहित जी ओ.बी.ई. ने एक लाख रुपया शताब्दी समारोह के लिए दान दिया ।

श्रीमती मोहित जी ने पचीस हज़ार रुपये दिये ।

इतना ही नहीं, श्री मोहनलाल मोहित जी ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रधानत्व करते हुए मोरिशस में भारतीयों की स्थिति पर प्रकाश भी डाला ।

ध. घूरा

एक संन्यासी का महाप्रयाण

आप थे स्वामी दिव्यानन्द जी, जो संसार छोड़ चले । मंगलवार ता. ६ फ़रवरी को उनके निधन का समाचार स्थानीय रोडियो द्वारा प्रसारित किया गया था । सुनकर मन बहुत दुखी हुआ । पर क्या करें, संसार में आना-जाना प्रकृति का नियम है । संसार में उन ही की याद रह जाती है जो त्याग भाव से सेवा में लीन रहे हों । इसलिए इसमें संदेह नहीं कि स्वामी दिव्यानन्द की याद हमें सदा आती रहेगी, क्योंकि जिस लगन से वेदों का उन्होंने यहाँ प्रचार किया, वह हमारे लिए मार्ग दर्शक का काम करेगी ।

स्वामी दिव्यानन्द जी का यहाँ आना सन् १९७३ में हुआ । उसी वर्ष यहाँ पर आर्य सम्मेलन किया गया था और आप भी 'अकबर' नामक जहाज़ द्वारा ५०० यात्रियों के साथ सम्मेलन में शामिल होने के लिए पधारे थे । और सम्मेलन की समाप्ति पर उन्हीं यात्रियों के साथ आप लौटे । लेकिन तीन वर्ष बाद मोरिशस का प्यार अपको खींच लाया । मुझे भली-भाँति स्मरण है,

जब आप पुनः पधारे थे और आर्य जगत के नेता श्री मोहनलाल मोहित जी आर्य रत्न, ओ.बी.ई. जी के पास लावेनिर में ठहरे हुए थे ।

उन दिनों यहाँ पर वाक्वा की पंडित काशीनाथ किष्टो आर्यन वैदिक पाठशाला में विद्या विनोद से लेकर विद्या वाचस्पति तक की परीक्षाएँ चल रही थीं । आप श्री मोहित जी के साथ वहाँ पधारे थे । अतः उस अवसर पर आर्य सभा के परीक्षा-मन्त्री श्री हरिलाल चुड़ामणि जी ने मुझसे आग्रह किया कि मैं स्वामी जी को सब कमरों में ले जाकर परीक्षा की कार्रवाही दिखाऊँ । हमें इस बात की खुशी हुई कि परीक्षा का कार्य देखकर आप बहुत संतुष्ट हुए थे । इतना ही नहीं, बल्कि आप ने हम से बड़ी आत्मीयता से बातें भी की थीं ।

करीब १० वर्षों तक रहकर आप ने हमारे टापू की दसों-दिशाओं में जाकर प्रचार-कार्य किया । इस के अलावा 'वैदिक वाणी' रेडियो प्रसारण में प्रति सप्ताह रविवार की सुबह आप के प्रवचन श्रोताओं के कानों में अमृत घोलते थे । आर्य समाज के पत्र 'आर्योदय' में भी हमारे आग्रह पर आप के लेख छपते थे ।

उन दिनों आप की पूज्य माता जीवित थीं । आप जब भी भारत जाते तो उनके दर्शन अवश्य करके लौट आते थे । एक बार लौटने पर मेरे रेडियो कार्यक्रम में स्वामी जी ने माँ और पुत्र के प्यार का मर्म विस्तार से समझाया था । इस बात के लिए अपने को धन्य समझता हूँ कि आप अनेक बार मेरे रेडियो कार्यक्रमों में शामिल हुए थे, विशेष कर आर्य समाज स्थापना दिवस, ऋषि बोध उत्सव के अवसरों पर ।

मोरिशस से ही आप १९८० में लण्डन में हुए आर्य महा सम्मेलन और सन् १९८५ में दक्षिण अफ्रीका में आयोजित आर्य समाज के सम्मेलन में शामिल होने के लिए गए थे । इन दोनों सम्मेलनों में आप के भाषणों को सुनकर लोग बहुत प्रभावित हुए थे । दक्षिण अफ्रीका के इस सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री त्यागी जी मोरिशस होकर गए थे । जब आप भारत लौटे तो आप का देहावसान हुआ । जब मैंने यह दुखद समाचार स्वामी दिव्यानन्द जी को सुनाया तो आप की आँखों में आँसू भर आए थे और आपने कहा 'त्यागी जी के चल बसने से बहुत हानि हो गई । वैसे सेवक मिलना कठिन है । वे दिन-रात आर्य समाज का उत्थान सोचते थे और मन लगा कर कार्य भी करते थे ।

आप ने यहाँ पर प्रचार के कार्य को ईश्वर भक्ति समझ कर किया । यही नहीं, जब लोग उनको दक्षिणा दिया करते थे तो दक्षिणा की रकमों से आर्य सभा में आप ने एक निधि बना डाली । अब इस निधि की राशि ५० हज़ार की हो गई है । बताया जाता है कि आपने दिल्ली सार्वदेशिक सभा में भी इसी तरह की एक निधि की स्थापना की है ।

आपने एक बार बताया था कि भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय रहने के कारण आप अनेक बार जेल गये थे । आर्य समाज के सैकड़ों नेता गांधी जी के स्वतन्त्रता-यज्ञ में अपनी जान की आहुति देकर शहीद हो गये । कितनों को फाँसी दी गई, कितनों को गोलियों का निशाना बनाया गया, कितनों को डण्डों से मारा गया पर आर्य समाजियों का स्वतन्त्रता-संग्राम में कूदने का उत्साह बराबर रहा ।

थे वे अति महान

(स्वर्गीय स्वामी दिव्यानन्द जी की याद में)

थे वे अति महान
करें हम उन का गुण गान ।
दस वर्ष बिताये यहाँ
बसे हैं हम जहाँ
वेदों का प्रचार किया
घर-घर दिवाली का दिया जलाया ।

थे वे ऋषि सन्तान
पा गये ऋषि सम सम्मान
कभी न करते गुमान
ऐसा था उन का ईमान ।
आर्य जगत के सेवक थे
भारत के क्रांतिकारी थे
स्वतन्त्रता के सेनानी थे
दयानन्द के पुजारी थे ।

दुनिया से वे क्या गये
यहाँ अनेक यज्ञकर्ता बना गये
कितने शाखा समाज खुलवाये
पचास हज़ार की निधि छोड़ गये ।

एक बीती घटना उन पर
जा रहे थे एम.बी.सी.
भीग गये रास्ते ही पर
एक महिला को हुई दया उन पर ।
कहा ! क्या हुआ ऋषिराज
चलिये घर मेरे आज
ये कपड़े सुखाकर दूँगी
तब आप को यहाँ ला दूँगी ।

ऋषि की आँखों में भरा पानी
देवी बोली मत करें मनमानी
दुनिया है आनी जानी
आज आप की सेवा है करनी ।

आर्य सभा मोरिशस द्वारा एक नया कार्य

मोरिशस के दक्षिण प्रांत के सुयाक गाँव के अस्पताल के वार्ड ४ का जिम्मा आर्य सभा मोरिशस ने अपने ऊपर गत २० एप्रील १९९० को ले लिया है । यह कार्यक्रम यज्ञ-अनुष्ठान से प्रारम्भ किया गया था ।

आर्य समाज का बीजारोपन हुए मोरिशस में ८० वर्ष हो गये । इसी संदर्भ में सेवा की दृष्टि से आर्य सभा के नेताओं ने ऐसा कार्य करना उचित समझा । उद्घाटन-विधि स्वास्थ्य मंत्री श्री जगदीश गोबरधन जी की उपस्थिति में उपप्रधान मंत्री एवं वित्त मंत्री श्री विष्णु लक्ष्मीनारायडू जी ने की ।

श्री मूलशंकर रामधनी जी के ऐतिहासिक भाषण से पूर्व आर्य सभा के तब के मंत्री श्री सत्यदेव प्रीतम जी ने उन्हें आर्य समाज के नेता से सम्बोधित किया । उस मौके पर माननीय हरि बुलक जी ने आर्य समाज के कार्यों का बखान किया । आर्य सभा के प्रधान डा. रुद्रसेन नीऊर जी ने स्वास्थ्य मंत्री जी के प्रति आभार प्रकट किया, क्योंकि उनके मंत्रालय ने रोगियों की सेवा के लिए सभा को शुभ मौका प्रदान किया ।

अस्पताल की सुपरिटेंडेंट श्रीमती डा. नन्दू जी ने स्वागत भाषण के दौरान सावान प्रान्त में स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा किये जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला । सभा के अधिकारियों ने एक टी.वी. सेट, २५ हज़ार रुपैयों की पुस्तकें और बर्तन आदि प्रदान किये । रिव्येर जी पोस्त गाँव में गत वर्ष के अन्त में कुछ युवक-युवतियों को सेंट जॉन संस्था द्वारा प्रारम्भिक सेवाओं का प्रशिक्षण दिया गया था । इस उत्सव के दौरान उन्हें प्रमाण पत्र आर्य सभा के नेता श्री मोहनलाल मोहित जी आर्य रत्न ने और अन्य महानुभावों ने प्रदान किये ।

श्री राजेन्द्र प्रसाद रामजी ने इस योजना की सफलता के लिए प्रशंसनीय कार्य किया । वे सावान आर्य ज़िला परिषद के प्रधान हैं और आर्य युवक संघ के मंत्री भी ।

रेज्वी के शाही भवन में वैदिक विवाह

सचमुच वह एक स्मरणीय शाम थी शुक्रवार ता. २७ एप्रिल १९९० का । उस शाम को हमारे टापू के महा राज्यपाल सर और लेडी विरास्वामी रिंगाडू जी की सुपुत्री का विवाह संस्कार वैदिक रीत्यानुसार कात्र बोर्न के श्रीमान और श्रीमती पाण्डो कोतिया के सुपुत्र श्री धर्मराज कोतिया के साथ संपन्न हुआ । दो हज़ार से अधिक भाई-बहनें जिनमें देश-विदेश के भी थे, भी पधारे थे ।

कात्र बोर्न के पंडित रामानो जी ने विवाह संस्कार किया । प्रारंभ में नेपाल से पधारे हुए आचार्य उमानाथ शास्त्री जी ने वैदिक मंत्रों को सुना कर उनकी व्याख्या अंग्रेज़ी भाषा में की और आमंत्रित महानुभावों का स्वागत किया । सभी धर्मों के प्रतिनिधियों ने कार्य की प्रशंसा की । जल-पान से सब का उचित सत्कार किया गया । बधाई के साथ नव दंपति के प्रति शुभ कामनाएँ पेश की गईं ।

शाही भवन के लंबे इतिहास में यह प्रथम वैदिक विवाह संपन्न हुआ था ।

मोरिशस में आर्य समाज का कार्य

महर्षि दयानन्द जी का जन्म सन् १८२४ को टंकारा ग्राम गुजरात में हुआ और उन की प्रेरणा से सन् १८७५ में आर्य समाज की स्थापना बंबई में की गई । मोरिशस में सन् १८९८ में तैनात भारतीय सिपाहियों ने यहाँ के हिन्दू भाइयों को सत्यार्थ प्रकाश प्रदान किया । इसी ग्रंथ के पठन-पाठन से यहाँ पर आर्य समाज स्थापित करने की प्रेरणा मिली । जब मणिलाल डाक्टर मोरिशस से चले गये तो उन्होंने अपना प्रेस आर्य समाज को दिया । कहा जाता है कि वह प्रेस आर्य सभा मोरिशस में पड़ा है । २ जून सन् १९११ में वैदिक धर्म प्रचार के लिए उस प्रेस से 'आर्य पत्रिका' निकाली गई । भारत से स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी यहाँ पर १९१४ में विराजे और २ वर्षों तक यहाँ पर घूम-घूमकर प्रचार कार्य किया । डॉ. भारद्वाज जी ने आप के साथ टापू का दौरा किया । स्वामी जी ने कुकर्मों से बचने के लिए जनता को उपदेश तो दिया ही साथ ही युवकों को सामाजिक कार्य करने की प्रेरणा भी दी और आप की ही प्रेरणा के प्रभाव से युवक काशीनाथ किश्टो जी भारत में उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए गए थे । लौटने पर यहाँ प्रचार कार्यों में और संपादन तथा लेखन की दिशा में नए जोश के साथ कार्य किया । शिक्षा के क्षेत्र में आप ने सन् १९२२ में वाक्वा के आर्यन वैदिक स्कूल का शिक्षण कार्य प्रारंभ किया । प्रथम दिनों में १२ विद्यार्थी थे । उन में से अभी तीन जीवित हैं । उस समय कुछ लोगों ने वहाँ पर अपने बच्चों को भेजने से इन्कार किया था । पर आज इस पाठशाला में १,००० से अधिक विद्यार्थी पढ़ते हैं । कितने

उच्च अधिकारियों, डॉक्टरों और बारिष्टरों के बच्चे इस में पढ़ने आते हैं । इस पाठशाला की गिनती मोरिशस की सुयोग्य प्राथमिक पाठशालाओं में होती है, जिसकी प्रशंसा यहाँ के वर्तमान राजनेताओं ने भी की है । लेडी सरोजिनी जगनाथ जी पहले यहाँ पर मुख्य अध्यापिका थीं पर बाद में इंस्पेक्टर के रूप में यहाँ भी कार्यरत थीं । लावांचिर, बुआशेरी और राजधानी के डी.ए.वी. कॉलेज के भी कार्य प्रशंसनीय हैं । छात्रवृत्तियाँ पाने में यहाँ के विद्यार्थी सफल होते हैं ।

आजकल टापू भर में आर्य समाज के ४५५ सफल समाज हैं । गत वर्ष दर्जनों शाखाओं को क़रीब साढ़े चार लाख रुपयों की सहायता की गई । महिला मंडल और युवक संघ के कार्य संतोषप्रद हैं । विद्या समिति के निरीक्षक हर मास इनमें जाकर सायंकालीन हिन्दी पाठशालाओं के अध्यापकों का मार्ग-दर्शन करते हैं । सन् १९३५ में पंडित काशीनाथ जी ने प्राथमिक विद्यार्थियों के लिए हिन्दी में पुस्तकमाला लिखी और आजकल शिक्षाविद् महानुभावों की एक टोली श्री मूलशंकर रामधनी जी एम.बी.ई. के सहयोग से इन विद्यार्थियों के लिए पुस्तक लिख रहे हैं । कन्या पाठशालाएँ सर्वप्रथम यहाँ पर आर्य समाज ने खोलीं । सन् १९३५ में मेनिल आर्य समाज में सामाजिक पाठशालाओं के अध्यापकों को ट्रेनिंग देने की योजना बनाई गई, जो सफल हो पाई । आर्य समाज के प्रचारकों की मंत्रणा से युवकों को भारत जाकर पढ़ने के लिए प्रेरणा दी जाती रही । उन युवकों में पंडित वासुदेव विष्णुदयाल जी भारत जा कर, पढ़ कर लौटे और यहाँ पर उन्होंने हिन्दुओं में पुनः नव जागरण का कार्य किया । इतिहास साक्षी है कि उनका नाम अमर रहेगा ।

सन् १९२४ में पंडित आत्माराम जी ने यहाँ भारत से आकर प्रथम हिन्दी पुस्तक लिखी । आपने भी आर्य समाज के पत्र के संपादन में पूरा सहयोग दिया । आर्य समाज ने आर्यवीर सन् १९२९ में और इधर स्वामी ध्रुवानन्द जी ने बल लगाकर १९५० में आर्योदय पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया । आर्योदय द्रुत गति से उन्नति कर रहा है । इससे हम देखते हैं कि प्रकाशन के क्षेत्र में भी आर्य समाज डट कर काम कर रहा है । इसके अलावा श्री मोहनलाल मोहित जी ने सन् १९७८ में 'आर्य समाज का इतिहास' ग्रन्थ के रूप में लिखकर खोजपूर्ण लेखन कार्य किया, इस का अनुमान सहज ही किया जा सकता है ।

वर्षों से श्री मोहनलाल मोहित जी ओ.बी.ई., आर्य रत्न, श्री मूलशंकर रामधनी जी एम.बी.ई., श्री सत्यदेव प्रीतम जी बी.ए. 'आर्योदय' के हिन्दी-विभाग का और श्री जसकरण मोहित जी अंग्रेजी विभाग का संपादन निःशुल्क कर रहे हैं ।

इस देश की उन्नति में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक क्षेत्रों के अलावा अनेक अन्य क्षेत्रों में भी जन्म काल से ही आर्य समाज ने भारी कार्य किया है, जिसका बखान स्व. डॉक्टर सर शिवसागर रामगुलाम जी ने, सर विरास्वामी रिंगाडू जी ने, सर अनिरुद्ध जगनाथ जी आदि ने मुक्त स्वर से किया है । ये बातें मोरिशस के इतिहास में अंकित हैं ।

सन् १९७२ जब भारत, अलवर में सार्वदेशिक सभा द्वारा ११वाँ आर्य महा सम्मेलन आयोजित करने की योजना बनाई गई तो हमारे तत्कालीन प्रधान मंत्री सर शिवसागर रामगुलाम जी से अध्यक्ष पद सँभालने का आग्रह किया

गया था । वहाँ पर अध्यक्ष पद से आपने कहा था-"आर्य समाज वह आंदोलन है जिसका सूत्रपात महर्षि दयानन्द जी ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए किया था ।" वहाँ से वापस होकर आपने यहाँ पर हवाई अड्डे पर ऐलान किया था कि- "मैं उस अंतर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन से बहुत प्रभावित हुआ हूँ । वहाँ सम्मेलन का आयोजन शानदार था ।"

मोरिशस में सन् १९७३ में २२ अगस्त से २६ अगस्त के बीच सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन आर्य सभा मोरिशस की ओर से किया गया था और आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा का सहयोग भी प्राप्त था । भारत से ५०० और दक्षिण अफ़्रीका से १०५ यात्री पधारे थे । यहाँ पर हमारे क़ार्यो को देखकर सब ने प्रशंसा की थी । श्री प्रताप सिंह शूरजी वल्लभदास ने अध्यक्ष पद को सँभाला था । वैसा भव्य आयोजन प्रथम बार मॉरिशस में हुआ था ।

वर्षों तक कार्य करने पर आर्य समाज के कार्यकर्ताओं की धाक इस देश में सर्वत्र है । संसार के २५ देशों में मुझे आर्य समाज के कार्यकर्ताओं का कार्य देखने का शुभावसर प्राप्त हो गया है । सब प्रशंसा के योग्य हैं । यहाँ पर यदि हमारा अनाथालय नहीं होता तो असहाय हिन्दू विधवाएँ, बच्चे कहाँ शरण पाते ? शायद अन्य धर्मों में वे बाध्य हो कर चले जाते । शुद्धि आंदोलन को प्रारम्भ करके हमारे पूर्व पंडितों और आज के पंडितों ने कितना भारी कार्य किया, यह अपने-आप में अद्वितीय है । यहाँ पर भी दहेज प्रथा द्वारा, अनमेल विवाह द्वारा, ढकोसलाओं द्वारा, जाति व्यवस्था के द्वारा हिन्दू समाज की उन्नति अवरुद्ध थी । भगवान की कृपा है कि आज यहाँ आर्य

समाज-आन्दोलन की तहर उठी । हिन्दुओं में एकता आ गई और प्रगति का द्वार खुला । यहाँ के सर्वधर्म संस्थान में हमारे लोग हैं । १९९२ में मोरिशस में आयुर्वेद चिकित्सा पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन किया गया था । प्रीतिभोज में इस सम्मेलन में आये १०० यात्री आर्य भवन मैं भी पधारे थे । आर्य समाज के कार्यों की जानकारी प्राप्त करके वे मन्त्र मुग्ध हो गये । आज भी आर्य सभा के ६० पंडित-पुरोहित सारे टापू में जाकर के धर्म प्रचार करने में संलग्न हैं ।

सार्वदेशिक सप्ताहिक - २४ जून १९९२

विदेश यात्रा

महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद बेंकोक की थाई भाषा में

गत मई के प्रथम सप्ताह में हवाई जहाज़ द्वारा सिंगापुर, थाई लैन्ड और होंगकोंग जाने का अवसर मुझे मिला ।

सर्व प्रथम सिंगापुर में मैं ने आर्य समाज मंदिर में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं और उनके परिवारों के सदस्यों से दिन में भेंट की । पता चला कि आर्य समाज का कार्य वहाँ भी अच्छी तरह चल रहा है । फिर प्रधान जी के घर पर 'रोवेल' गली में गया तो वे नहीं थे । अतः उन की माता जी ने मेरा सत्कार किया । और जाते वक्त कहा कि, "कोई कठिनाई हो तो यहाँ

पर चले आवें ।" यहाँ के आर्य समाज में भी अतिथियों के ठहरने के लिए अनेक कमरे हैं ।

सिंगापुर से थाई लैन्ड के बेंकोक नगर में पहुँचने पर जब वहाँ के आर्य समाज के अध्यक्ष श्री राम पलट पाण्डे जी को होटल से ही प्रातःकाल में फ़ोन किया तो वे होटल में ही अपने सुपुत्र श्री नरेंद्र जी के साथ मुझ से मिलने आए । वे मिलनसार और हँसमुख व्यक्ति हैं । आप भारत से यहाँ पर सन् १९६५ में पधारे थे और तभी से वहाँ पर वे आर्य समाज की सेवा विभिन्न पदों पर करते आए हैं ।

यहाँ पर प्रचार हेतु भारत से कई विद्वान आए । उन्होंने श्री पाण्डे जी और अन्य कार्यकर्ताओं से थाई राजकीय भाषा में महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद करने के लिए प्रेरित किया था । श्री पाण्डे जी ने, वहाँ के शिक्षा-विभाग के उप-डायरेक्टर प्रो. आचन सनानधायानुकूल जी ने सन् १९७५ ई. में जब भारत और समस्त विश्व में आर्य समाज शताब्दी मनाई जा रही थी, तभी अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से थाई भाषा में सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद किया । वहाँ के आर्य समाज भवन में इस अनुवादित ग्रंथ को देख कर मन गद्गद हो गया । प्रकाशन आकर्षक है । इस सुंदर कार्य के लिए मैंने प्रधान जी को बधाई दी ।

इस देश की राजकुमारी 'युनालको यूनिवर्सिटी' के आचार्य सत्यव्रत शास्त्री जी से संस्कृत का अध्ययन किया करती थीं । राजकुमारी जी ने थाई भाषा ही में सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन किया । प्रो. सत्यव्रत शास्त्री दिल्ली यूनिवर्सिटी में कुलपति के रूप में कार्यरत थे । थाई भाषा में अनुवादित सत्यार्थ प्रकाश थाई लैन्ड के ६३ विश्व विद्यालयों और अन्य संस्थाओं को

प्रदान किया गया । बेंकोक आर्य समाज ने यह कार्य करने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी । इस समाज में हरेक रविवार को यज्ञ-सत्संग के बाद सहभोज का आयोजन किया जाता है । दिवसकाल में श्री शिवनारायण सिंह जी के पास प्रधान जी के साथ गया था । उन के नवीन निर्मित विशाल भवन में यज्ञ और उद्घाटन विधि करने का मौका उन्होंने मुझे प्रदान किया था । श्री शिवनारायण सिंह जी एक बड़े व्यापारी हैं ।

होंगकोंग जाने पर कावलून टापुओं की यात्रा करने का आनंद प्राप्त हुआ । यहाँ पर बीस हज़ार भारतीय हैं ।

होंगकोंग टापू के रेडियो स्टेशन द्वारा भारतीय भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं । हिन्दी भाषा में श्री गुल जी कार्यक्रम करते हैं । आप गत १३ वर्षों से इस क्षेत्र में लगे हैं । वेद, गीता, रामायण के संबंध में कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं । श्री गुल के एक सुपुत्र ने संन्यास आश्रम में प्रवेश कर लिया है । वे प्रचार कार्य में लगे हैं । श्री के. पी. दसवाणी जी, जो अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष हैं, वहाँ के प्रवासी भारतीयों में सामाजिक और सांस्कृतिक गति-विधियों का स्तर उठाने में लगे हैं । आप के बेटे सुवर्ण की एक दुकान है, जिस का साईं-बोर्ड थाई भाषा में आर्य शब्द से सुसज्जित है । इन दोनों देशों में प्रवासी भारतीय व्यापार, शिक्षा, कला-कौशल और राष्ट्रीय कार्यों में लगन के साथ रत हैं । वे अपनी संस्कृति के लिए जागृत हैं । संसार के विभिन्न देशों में जब भी मैं गया, तो वेदों में एकत्व का भाव बताया । घर लौटने पर आर्य सभा के एक नेता ने मुझे सुनाया कि होंगकोंग में भी आर्य समाज का एक मंदिर है । यदि इस का पता पहले से मुझे होता तो ज़रूर वहाँ जाता, क्योंकि जब भी अमेरिका, कनाडा, लण्डन, अफ्रीका के

अनेक देशों में जैसे ज़िम्बाब्वे, केन्या आदि में जाता तो अवश्य आर्य समाज के कार्यों को देखने जाता हूँ । गत ४१ वर्षों से स्थानीय रेडियो स्टेशन पर कार्यक्रम प्रस्तुत करता हूँ । इसलिए वेदों के प्रचार-प्रसार का कार्य भी श्रद्धापूर्वक करता हूँ ।

आर्य सभा द्वारा सें पोल के संग्राम भवन में मादक द्रव्य विरोधी अभियान आरम्भ हुआ

गत मास ता. २४, २५ और २६ जून को सें पोल में स्थित संग्राम भवन में त्रिदिवसीय विचार गोष्ठी का आयोजन आर्य सभा द्वारा किया गया था । शराब, गांजा, अफ़ीम तथा अन्य नशीली दवाओं से दूर रहने के लिए जन समुदाय को विचार देने के उद्देश्य से ऐसी कारवाही की गई थी ।

आर्य सभा के मंत्री श्री मूलशंकर रामधनी जी एम.बी.ई. ने स्वागत भाषण किया था । इस कार्य को शुरू करने का उद्देश्य समझाया । इस बात पर भी बल दिया गया कि ऐसी खराब आदत से मानव को हमेशा दूर रहना चाहिए । कोई व्यक्ति क्यों और कैसे नशे में पड़ता है ? कभी कभी घर के कलह के कारण भी लोगों में ऐसी बुरी लत पड़ जाती है । आप ही के आग्रह पर पंडित प्रयाग बिका जी वाचस्पति, पंडित देवकीननन गोबिन जी वाचस्पति और पंडित धर्मवीर घूरा जी शास्त्री एम.बी.ई. ने कुछ मंत्र पढ़े तब कार्यक्रम शुरू किया गया ।

आर्य सभा के मंत्री जी ने और कहा कि हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे इस कार्य में सहायता करें । सन् १९११ से इसी प्रकार से आर्य समाज का कार्य चल रहा है । पं. रामनारायण जी ने इसी प्रकार से नशा निषेध में वर्षों पूर्व आन्दोलन किया था और बाद में माननीय पंडित जगदम्बी जी ने भी इसी प्रकार इस कार्य में हाथ बँटाया था । गुरुदत्त विद्यार्थी स्वामी दयानन्द की मृत्यु देखकर अपने जीवन में परिवर्तन लाए । उन्होंने देखा कि राष्ट्र के राजा विलासिता में कैसे फँसे हैं तो गहरा विचार करके, उन्होंने सेवा कार्य शुरू किया । अतः हम भी जवानों को अच्छा मार्ग दिखाने लगे हैं ।

आर्य सभा के प्रधान श्री श्रद्धानन्द रामखेलावन जी ने अपने भाषण में इस सुधारवादी कार्यक्रम को प्रारंभ करने के लिए मुख्य आयोजक, ट्रस्ट फ़ण्ड के अधिकारी महानुभावों के प्रति आभार प्रगट किया, क्योंकि इस संस्थान की ओर से इस अभियान को चलाने के लिए पर्याप्त मात्रा में सहायता और सहयोग प्राप्त होगा । आप ने भी बहुत प्रसन्नता के साथ सब का स्वागत किया । आप ने बताया कि आर्य समाज पवित्रता के साथ और संयमी जीवन ले चलने का समाज है यह सज्जन (आर्य) लोगों का समाज है । आर्य समाज के नियमों में सब लोगों की सेवा करने पर बल दिया गया है । इस बात की आप ने बहुत अच्छी व्याख्या की । इसके अलावा हरेक शाखा समाज और आर्य सभा के जो करीब ७०-९० पंडित, पुरोहित तथा सेविका-प्रचारक हैं, उनसे मिल-जुल कर इस दिशा में सहयोग देने की अपील आप ने की । आप का कहना था कि इस टापू के सभी कोनों में शाखा-समाज हैं । अतः सब से इस कार्य में हाथ बँटाने का निवेदन किया । लगातार यज्ञ, हवन, सत्संग में

जाते रहने से ऐसी खराबी की ओर कोई नहीं फटकेगा । अंत में आप ने कहा कि "एक व्यक्ति की इस लत में पड़ जाने से समस्त परिवार को गहरा दुःख हो जाता है ।

ट्रस्ट फण्ड के प्रधान श्री हमराज बहोरन जी ने आर्य समाज को ऐसा कार्य शुरू करने के लिए धन्यवाद दिया । संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रति भी अपनी खुशी प्रगट की, क्योंकि उसने २६ जून को मादक द्रव्य विरोधी दिवस घोषित किया है । गौरव की बात है कि आर्य समाज इसी तारीख को मादक द्रव्य निषेध सेमिनार कर रहा है । आप ने बताया कि "ट्रस्ट फण्ड द्वारा इस दिशा में सर्वत्र कार्य शुरू हुआ है और आर्य समाज द्वारा भी ऐसा शुभ कार्य चलाए जाने से मॉरिशस का भविष्य उज्ज्वल होगा । कारण कि हम योग्य महानुभावों के हाथों में ऐसा कठिन कार्य छोड़ रहे हैं । इस दिशा में कार्य करने के लिए बहुत उत्साही होना जरूरी है । सरकार भी हमें पूरी मदद दे रही हैं, चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि इस से देश को बहुत हानि होती है ।"

आर्य सभा के एक कर्मठ सेवक और भूतपूर्व प्रधान माननीय डाक्टर रुद्रसेन निउर जी ने अपने वक्तव्य के दौरान बताया कि आर्य समाज के दस नियमों में संसार का उपकार ही उपकार करना आदेश है । यह जो क़ार्य सभा शुरू करने जा रही है, यह कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण है, ब्राउन शुगर और आलकोहोल द्वारा बहुत ही नाश हो रहा है । इसीलिए हमारी सरकार इस के विरोध में प्रचार कार्य में सहायता कर रही है । खुशी की बात है कि इस क्षेत्र में कार्य करने वाले श्री कासम भी पधारे हैं । हमारे प्रधान मंत्री श्री अनिरुद्ध जगनाथ जी ने सरकारी नीति में परिवर्तन लाकर महत्वपूर्ण कार्य किया है, नया लाइसेन भी देने पर अच्छी तरह-सोच विचार किया जाता

है । जनता का भी पूरा सहयोग होगा तो आशातीत प्रगति होगी । तीन दिनों की जो गोष्ठी होगी उससे आप लोगों को बहुत कुछ सीखने का मौका मिलेगा ।

वाक्वा-फेनिक्स नगरपालिका के मेयर श्री महेन झगरु जी ने कहा कि 'हमारे देश में पिट्रोल या खनिज पदार्थ नहीं हैं । अतः हमें सँभल कर चलना है । हमारी सरकार नहीं चाहती है कि यह बुराई हमारे जवानों को खत्म करे । हमारे प्रधान मंत्री और लेडी सरोजनी जगनाथ को बधाई देता हूँ, क्योंकि अपनी जान हथेली में लेकर यह दंपति इस दिशा में कार्यरत है । माफिया लोगों के हाथों यह जोड़ी दो बार बची । आप लोगों से हमारी माँग है कि सब प्रकार से हमारे प्रधान मंत्री के लिए दुआ करें, ताकि भगवान उन्हें सुरक्षित रखें और साहस से कार्य कर सकें ।"

"जब से मैं मेयर बना हूँ इस नगर में एक भी नया परमिट नहीं दिया गया, शराब बेचने के लिए । यही नहीं, ऐसी योजना भी बना दी गई है, भविष्य में लोग नशा लेकर काम पर नहीं जाएँ । जब तक मैं इस क्षेत्र में रहूँगा तब तक अच्छी योजना बनती रहेगी, जिससे लोग इस दिशा में कार्य कर रहे लोग हमारे जवानों को अच्छी राह बताएँ । यह एक बहुत अच्छा संकेत है ।"

लेडी सरोजिनी जी ने आर्य समाज द्वारा इस दिशा में कार्य प्रारंभ करने के लिए शुभकामना की और अपनी प्रसन्नता भी प्रगट की । आप ने कहा 'आर्य समाज ने भूतकाल में बहुत कार्य किया था । उससे इस टापू में आज जहाँ भी जाएँगे आप को आर्य समाज की निशानी मिलेगी और कार्य भी

दिखेगा । यहाँ यह बताना उचित होगा कि खराबी लोगों के संग में पड़कर अनेक लोगों की आदतें खराब बन जाती हैं । ऐसे माँ-बाप भी हैं, जो अपने बच्चों को अच्छी तरह से सँभाल कर नहीं रख सकते हैं । ऐसे में बच्चे बुराई में पड़ जाते हैं । माँ-बाप को अपने बच्चों का कहाँ आना-जाना होता है, यह जानना चाहिए । बातचीत से भी बच्चे माँ-बाप के प्रति खिंचे से रहते हैं । परिवार में स्नेह होना चाहिए । सब लोग दिवस में, काम में रहते हैं । बच्चे पढ़ाई में, पाठशालाओं में रहते हैं, पर शाम को भोजन के समय घर का समस्त परिवार मिल-जुल कर एक साथ भोजन करे तो अच्छा प्रेम उत्पन्न होगा ।"

"अमेरिका में ४५ वर्ष के लोग भी नशे से कम दिखाई देते हैं । पुराने लोग इस बुरी आदत में बहुत कम नज़र देते हैं । इस का मतलब यह नहीं है कि पल पल बच्चों के ऊपर नियंत्रण रखना चाहिए, पर उन पर निगरानी जरूर रखनी चाहिए ।"

"बीमार न होना अधिक ठीक है, न कि बीमार हो जाने पर दवा खोजे । हम अपने आप को और अपने जवानों को सुशिक्षा देवें । लेकिन आज बहुत ही खुशी की बात है कि इतने जवान लोग यहाँ पर आए हैं । याद रखें कि जब बच्चे मादक द्रव्यों में पड़ जाते हैं तो माँ-बाप बाद में जानते हैं, जब कि हित, मित्र और पड़ोसी पहले से ही जान जाते हैं । जान जाने पर ऐसे बच्चों को हमें अच्छी राह बतानी है यह एक नागरिक का फ़र्ज़ है । यह भी देखा जाता है कि कोई खाते-खाते मरता है और कोई बिना खाए ही मरता है । हमें सोच समझ कर ऐसी ऐसी स्थिति न आने देना चाहिए ।

"मैं बहुत खुश हूँ कि आप जवान लोग अधिक संख्या में हैं । आशा है कि इस विचार-गोष्ठी से आप लोगों को वहुत कुछ प्राप्त हुआ होगा । याद रखिए, यदि लोग मादक द्रव्यों में पड़े रहेंगे तो हमारी शक्ति घट जायगी ।

सोसियल सिक्युरिटी के स्थाई सचिव श्री म. कासम जी ने एक ऐसे कार्य को शुरू करने हेतु आर्य समाज को बधाई दी । उन्होंने कहा कि जब तक मादक द्रव्यों में लोग पड़े रहेंगे तब तक कोई लाभ नहीं होगा । जो लोग इस बुराई में पड़ जाते हैं वे बहुत मुश्किल के बाद इस से निकल पाते हैं । आर्य समाज के लोग टापू के सभी प्रान्तों और दिशाओं में होते हैं । इस से इस बुराई को दूर करने में पूरा सहयोग मिलेगा । यह एक सामूहिक सेवा का कार्य है । हम मिल जुल कर इस दिशा में कार्य करें । हमारी सरकार ट्रस्ट फण्ड को ६ मिलियन रुपये वार्षिक दे रही है तथा इस संस्थान को और सहयोग देगी । हम यह न भूलें कि हम सब एक ही समाज के लोग हैं । हम एक ही नाव में हैं । हम सब लोगों को मिल जुल-कर नाव को पार करें । हमारे मिनिस्टर माननीय कार्ल ओफमान ने आर्य समाज की इस योजना को मान लिया है और हमें पूरी आशा है कि सर्वत्र अच्छा काम होगा, यह जान कर प्रसन्नता होती है कि हमारी सरकार भी इस दिशा में जागरूक है । कौन्सिल लगने के कारण मिनिस्टर कार्ल ओफमान नहीं आ सके ।

ट्रस्ट फण्ड में कार्यरत श्रीमती मुसाफिर जी ने इस संस्थान द्वारा इस दिशा में कौन-कौन सा कार्य किया जा रहा है, इस का स्पष्टीकरण किया । और, बताया कि समाज देश के लोग कैसे इस लत में पड़ जाते हैं ।

तीन दिनों तक यह सेमिनार चलाया गया जिस के दौरान इन विद्वानों ने लोगों को सम्बोधित किया । श्रीमती स. मुसाफिर, डॉ. जकारिया, श्रीमती

तोमा, श्री गोबिन, श्री स. लौटन, जज प्रोआग, श्री मु. पोताया, श्री आ. गंगाराम, सिस्टर अन्मोड, श्री रामचरण, श्री सु. रामबर्न आदि, आदि । सभी लोगों को प्रश्न करने का मौका दिया गया था ।

तीसरे दिन शनिवार को सायंकाल में आर्य सभा और ट्रस्ट फ़ण्ड ने ४९ लोगों को सरटिफिकेट प्रदान करने से पूर्व बैंक के डायरेकटर श्री श. पलयाटन जी ने सब को समबोधित करते समय कहा कि आर्य समाज महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदान की गई मशाल को लेकर आगे बढ़ने वाली संस्थाओं में है । मैं स्वयं एक आर्य समाजी परिवार से निकला हूँ । मेरे माँ-बाप सब अच्छे आर्य समाजी थे । आर्य समाज दिनों दिन प्रगति करता आ रहा है । हमारे पूर्वजों ने बहुत अच्छा काम किया था और अब भी काम करना है । कुछ ऐसे परिवारों की ओर आप ने संकेत किया, जिन्होंने सामाजिक सेवा में अपना सब कुछ न्यौछावर कर डाला । हमें अपने दैनिक कार्यों के बाद अपनी सभाओं और संस्थाओं से प्रेम रखना चाहिए, यह भी आवश्यक है । हमें जो कुछ धरोहर अपने पूर्वजों से मिली, उसे रखना चाहिए । पर दुख की बात है कि केवल मुट्ठी भर लोग इस क्षेत्र में करते हैं । फिर भी अभी जो कुछ समाज प्रेमी काम कर रहे हैं, वे प्रभावशाली कार्य कर रहे हैं । याद रहे कि अच्छे कार्य करने और अध्ययन करने के लिए कभी देर नहीं है ।

आर्य सभा के कार्यकर्ता श्री मोहनलाल मोहित जी, पं. वेणीमाधव रामखेलावन, श्री केशवदत्त चिंतामणि, श्री देवप्रसाद प्रोआग जी, श्री सत्यदेव प्रीतम बी.ए. जी आदि को भी वहाँ उपस्थित थे ।

वह कार्य बहुत प्रभावशाली रहा । सब ६० से अधिक लोग थे कि १५ से ७२ तक के बीच के रहे । ४९ लोगों को सम्मानित किया गया

था । जो प्रमाण पत्र दिये गये थे वे चिन्ताकर्षक है । यही नहीं, एक दो महानुभावों ने ऐसा कार्य और करने के लिए आर्य सभा के नेताओं से अपील की । आर्य सभा के मंत्री श्री मूलशंकर रामधनी जी ने सब सहयोगियों को धन्यवाद किया ।

आर्य सभा के निम्न पुरोहित सेमिनार में तीनों दिनों तक शामिल थे और प्रमाण पत्र भी प्राप्त किए : पं. बिका जी, पं. रामखेलावन जी, पं. सुकनसिंह जी, पं. श्रियती जी, पं. घूरा जी, पं. गोबिन जी, पं. मोहेश जी, और पं. सालिक जी, श्रीमती बालगोबिन । माता जी की प्रशंसा अनेक लोगों ने की, क्योंकि माता जी ने संग्राम भवन के साथ-साथ पीछे के सभी घर और भूमि भी आर्य सभा को दान में दे दी । और साथ ही एक वृद्ध आश्रम का निर्माण करने के लिए एक अच्छी रकम भी प्रदान करेंगी, ऐसा उन्होंने वचन दिया है, जो स्तुत्य है । प्रस्तुत लेखक ने पहले मंत्र का उच्चारण किया, फिर आर्य नेता श्री मोहनलाल मोहित जी ने अनाथालय का उद्घाटन किया था ।

विश्व यात्री - डॉ. दिलीपसिंह वेदालंकार

डॉक्टर दिलीपसिंह वेदालंकार मॉरीशस में १७ दिनों तक प्रचार कार्य करने के बाद बरौडा, भारत गत २९ जुलाई सन् १९९३ को वायुयान द्वारा वापस चले गए । आप यहाँ पर मोजाँबिक, तांज़ानिया, दक्षिण अफ़्रीका आदि अन्य अफ़्रीकी देशों की यात्रा करके पधारे थे । यहाँ पर आप का अच्छा

एवं सफल कार्यक्रम रहा । अनेक स्थानों, रेडियो और टेलीविजन पर वेदों और अपनी विश्व-यात्रा पर आपने बहुत कुछ बताया । अब तक आप ४७ देशों में गए और वहाँ वेद प्रचार का कार्य किया । ऐसे महत्वपूर्ण कार्य के लिए आपको ३५ वर्ष लगे ।

आप उच्चकोटि के लेखक हैं । आप की पुस्तकों में "वेदों में मानववाद" शीर्षक पुस्तक, जो अंग्रेज़ी भाषा में लिखी गई है, बहुत ही मूल्यवान और लोकप्रिय है ।

आप के पिता जी का नाम आशा भाई दाजी भाई महीदा है । आप ने वेदालंकार की उपाधि सन् १९६० में प्राप्त की थी । गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में आप ने एम.ए. किया । दिल्ली विश्वविद्यालय में आप ने सन् १९७५ में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी । कांगड़ी में जब आप के पास पैसे की कमी रही तो ३ मास तक गुरुकुल के बरामदे में अड्डा जमाए रहे । एक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर किसी एक महानुभाव के सहयोग से सुविधापूर्ण निवास आपने प्राप्त किया । आप ने अब तक ४००० से अधिक लेक्चर दिये और अफ़्रीका, बृटेन, जर्मनी, अमेरिका, कनाडा, रूस, फ़्रांस, ज़ाम्बिया, 'दारे सलाम', वेस्ट इन्डिज़, ट्रिनिडाड, सुरिनाम, दक्षिण अमेरिका, ओस्ट्रेलिया, फ़ीजी, फिलिपिन्स, बेंकोक आदि देशों में वेद का अच्छा प्रचार-कार्य किया । आप में एक खूबी यह भी है कि जहाँ जहाँ भी आप गए, सुविधा अनुसार रेडियो और दूरदर्शन पर हिन्दी, अंग्रेज़ी, गुजराती तथा संस्कृत भाषाओं में कार्यक्रम किया । पत्रकारों से भी आप ने प्रेस सम्मेलन किया । मॉरीशस में खुद आर्य भवन में आप पत्रकारों से मिलते रहते थे । महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और डि.ए.वी. कॉलेजों के कार्यों पर

आपने बहुत अच्छा प्रकाश डाला । मुझे भी जीवन में ३१ देशों में उन के समान कुछ कहने का मौका मिलता रहा । इन देशों के बारे में उनसे बातें करने में बड़ा आनंद प्राप्त होता था । आप के साथ अनेक सामाजिक नेताओं की जानकारी मिली । पर फ़िजी के बारे में उनसे सुन कर मन का दुखी होना स्वाभाविक था । आप ने अध्यापन में भी श्रेष्ठ कार्य किया है । आप आयुर्वेदाचार्य और योगासनों के करने-कराने में निपुण हैं, अफ़्रीका में आप ने एक मस्जिद में ३ भाषण दिये थे, जहाँ ३,००० से अधिक लोगों ने आप को बधाई दी । अमेरिका में आप ने अधिक समय दिया है । गत २३ वर्षों से वहाँ आते-जाते रहते हैं ।

आप अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिन्टन जी से अच्छा प्रेम रखते हैं । चोटी के अनेक राजनीतिज्ञों से भी मिलते समय 'वेदों में मानवतावाद' की चर्चा करते रहते हैं ।

मोरिशस के आर्य भवन में आप के साथ घुलमिल कर बातें करते रहने से असीम आनंद प्राप्त हुआ था । आप को स्वामी कृष्णानन्द जी के साथ बरौडा में कार्य करने में आनंद प्राप्त हुआ था । भारत के राष्ट्रपति के साथ, प्रधान मंत्री के साथ आपके अनेक चित्र देखे । नई दिल्ली में आप को सार्वदेशिक सभा के नेताओं के साथ घुलमिल कर वार्तालाप करने का मौका भी मिला । सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनंद बोध जी के साथ आप का अच्छा संबंध है ।

डॉ. जगन की मॉरीशस यात्रा

पिछले दिनों गयाना के राष्ट्रपति डॉ. छेदी जगन अपनी छह दिवसीय यात्रा के दौरान हिंद महासागर के इस छोटे से सुंदर द्वीप मॉरीशस पधारे । इससे पहले भी वे सन् १९६८ में मॉरीशस के स्वतंत्रता के अवसर पर आयोजित उत्सव में विशेष अतिथियों में थे ।

उनके सम्मान में 'महात्मा गांधी संस्थान' में एक भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया गया । इसमें साहित्य, संस्कृति एवं कला-जगत से जुड़े अनेक महानुभाव उपस्थित थे ।

इस अवसर पर गयाना के राष्ट्रपति ने कहा, 'मैं यहाँ आकर मॉरीशस की प्रगति एवं समृद्धि से बहुत प्रभावित हुआ हूँ । मुझे लेकिन इस बात का दुख हुआ है कि अपना भाषण अंग्रेज़ी में देना पड़ रहा है, क्योंकि मुझे हिन्दी भाषा के अध्ययन का कभी सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका । आज चाहते हुए भी हिन्दी में अपने विचार प्रकट नहीं कर सकता' ।

उन्होंने भारत-सरकार और गयाना में भारतीय राजदूत और आर्य समाज के प्रति आभार व्यक्त किया, जिन्होंने गयाना की जनता, विशेष रूप से युवा-वर्ग को भारतीय संस्कृति और साहित्य का अध्ययन करने का शुभ अवसर सुलभ कराया है ।

समारोह में मॉरीशस के संस्कृति एवं कला मंत्री श्री मुकेश्वर चुनी ने राष्ट्रपति का स्वागत किया । और, मॉरीशस और गयाना के बीच सांस्कृतिक एवं साहित्यिक आदान-प्रदान पर विशेष बल दिया ।

<u>नया प्रकाशन</u>

"कन्या दान"

आर्य सभा मॉरीशस, महर्षि दयानन्द गली, पोर्ट लुई के पुस्तकालय में बहन सरिता वुद्धू जी की लिखित पुस्तक 'कन्या दान' देख कर अति प्रसन्नता हुई ।

वेद और अनेक धर्म-ग्रन्थ पढ़ कर और धार्मिक विधि-विधानों के प्रमाणों से और अनेक रीति-रिवाजों के आधार पर रचित यह ग्रन्थ हिन्दू विवाह-संस्कारों का दिग्दर्शन कराता है, जिस के लिए लेखिका को जितनी भी बधाई दी जायगी, उतनी ही कम होगी ।

भारत बहु भाषाई देश है । अतः प्रांतीय भाषाओं तमिल, तेलुगु, मराठी, गुजराती आदि भाषा-भाषी लोगों में प्रचलित विवाहों और विधानों की भी चर्चा साफ़ तौर से की गई है । फिर भी सब भाषाओं का स्रोत संस्कृत भाषा को ही उन्होंने माना है । इस पुस्तक में दो सौ से अधिक कलात्मक चित्र और रेखा चित्र हैं, साथ ही १६ अन्य इंद्रधनुषी रंगीन चित्र भी पाए जाते हैं ।

लेखिका महोदया ने यह पुस्तक सरल अंग्रेज़ी भाषा में लिखी है । हमारी सरकार की तरफ़ से अगर इसे उच्च कक्षाओं के पाठ्य-क्रम में स्थान मिलेगा तो छात्रों के लिए यह पुस्तक एक खज़ाना साबित होगी । जिन विद्यार्थियों को यह पुस्तक हाथ लग जायगी उन्हें एक प्रकार से सोने की खान ही प्राप्त हो जाएगी और अगली पीढ़ी के लिए भी यह पुस्तक फ़ायदेमन्द सिद्ध होगी ।

बहन सरिता जी कॉलेजों में ११ वर्षों तक पढ़ाती रहीं । और उनेक वर्षों से पी.एस.एस.ए. के कॉलेजों में इन्सपेक्टर के रूप में कार्यरत थीं तथा ५ वर्षों से इसके लेखन में भी संलग्न रहीं । इसीलिए इस जटिल विषय पर ७४१ पृष्ठों में बड़ी कुशलता के साथ अपना विचार व्यक्त कर सकीं । आप भारत में पटना तथा अन्य स्थानों में भी लेखन सामग्री की खोज में गईं थीं और अनेक पंडितों और विद्वानों से विचार-विनिमय करके पुस्तक की तैयारी की । रात-दिन मेहनत करने के बाद करीब ५ वर्षों में यह पुस्तक पूरी की ।

विवाह-संस्कार है क्या ? हर दृष्टिकोण से लेखिका ने यह समझाने का सफल प्रयत्न किया है । आप ने एक जगह पर यह भी कहा है कि प्राचीनकाल से हमारे पूर्वजों ने मुख्यतः १६ संस्कारों को ही प्रधानता प्रदान की है । आप ने यहाँ पर ऋग्वेद की चर्चा करके सोने में सुगंध भरने का कार्य कर लिया । जन्म काल से मृत्यु काल तक १६ संस्कारों को क्यों किया जाता है ? इस विषय पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी काफ़ी गहराई से प्रकाश डाला है । एक स्थान पर सरिता जी ने केवल काम वासना की खुशी के लिए विवाह करने का विचार गलत बताया है । विवाह के बाद पति-पत्नी के नियंत्रित जीवन पर भी आप ने अपनी कलम चलाई है । आप ने कितनी खूबी से दूल्हे से कहलवाया कि "अपने सच्चे जीवन साथी की दृष्टि से तुम्हें ग्रहण करने की इच्छा प्रगट कर रहा हूँ ।"

कुछ लोक गीतों की चर्चा भी की गई है । जो अगली पीढ़ी के लिए लाभकारी होंगे । दूल्हे और दूल्हन का सिंगार कैसा होना चाहिए ? कपड़े कैसे पहनने चाहिए, यह सब चित्रों और रेखाचित्रों द्वारा दर्शाया गया है ।

आध्यात्मिकता के साथ-साथ ऋषि ऋण, देव ऋण, पितृ ऋण से उऋण होने के साथ सप्तपदी विधि और अनेक विधियों के बारे में चर्चा हुई है ।

लगभग मॉरीशस के सभी पत्रों ने इस पुस्तक की सुंदर समीक्षा की । प्रसारण केंद्र ने उनसे भेंटवार्ता भी की ।

पुस्तक अंग्रेज़ी भाषा में क्यों है ? इस के बारे में लेखिका जी ने अपने एक रेडियो कार्यक्रम में स्पष्ट किया कि संसार की विभिन्न भाषाओं में इस पुस्तक का अनुवाद और प्रकाशन होगा ।

आप एक आर्य समाजी घराने माखन परिवार की हैं । आप का विवाह-सस्कार पं. धर्मवीर घूरा शास्त्री ने आज से करीब २२ वर्ष पूर्व राजधानी में किया था । स्वामी कृष्णानन्द जी, डा. सर शिवसागर रामगुलाम जी आदि ने भी आप को उस अवसर पर शुभाशीर्वाद दिया था । आप मॉरीशस भोजपुरी संस्थान की स्थापिका और अध्यक्षा हैं । आप की इस पुस्तक 'कन्या दान' का विमोचन हमारे टापू के राष्ट्रपति महा महिम श्री कासम उत्तिम ने अपने कर-कमलों द्वारा किया था । उस मौके पर उन की बेगम ज़ोहरा उत्तिम भी उपस्थित थीं । भारतीय हाई कमिश्नर महा महिम श्री श्याम सरन जी ने इस कार्य की शोभा बढ़ाई थी । आप ने सुंदर भाषण दिया था ।

बहन सरिता जी ने अभी हाल में एक अति सुंदर ऐतिहासिक लेख चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर के लिए मॉरीशस टाइम्स पत्र के ता. ३ दिसंबर १९९३ के अंक में लिखा था, जो एकदम ओजपूर्ण था । इस लेख में हिन्दी भाषा की प्रगति के लिए आर्य समाज द्वारा किए गए कार्यों का बखान किया गया है । हिंदुस्तानी पत्र जो १९०९ को प्रकाशित हुआ था, आर्य वीर

१९२१ में । आर्योदय १९५० और अब तक के अनेक प्रकाशनों की भी चर्चा की गई है ।

मणिलाल डाक्टर जी के काल से लेकर अनेक हिन्दी लेखकों और उनके लेखन कार्यों पर प्रकाश डाला गया है । इसके अतिरिक्त बाद में आर्य सभा में आकर आर्य सभा के नेताओं से अपनी पुस्तक के बारे में बातचीत की । आप की इस पुस्तक 'कन्या दान' में आर्य संस्कृतिक महानता आप ने दर्शायी है ।

घाना देश में आर्योदय पत्र

घाना देश अति सुंदर है । अफ़्रीका महा द्वीप का धन संपन्न देश है । वहाँ का समुद्री तटीय इलाका ३७० मील का है, जो मनोरम है । हिंद महासागर के रोद्रिग टापू के तो तटीय समुद्र के समान है । काफ़ी दूर तक लोग अनेक स्थानों में तैर कर जा सकते । हाँ, सात देशों से वायुयान रुक-रुक कर 'घाना' में उड़ान भरते हैं । यहाँ पर आर्य समाज संस्था सक्रिय है, यहाँ के अध्यक्ष हैं पं. एंको जी । पता :

Pt. Wreston Clarks Ankoh
Aryan Vedic Mission P.O. Box 8337
Accra North. GHANA

स्वामी घनानन्द जी, जो खुद अफ़्रीकन हैं, के साथ हमें नई अफ़्रीकन पीढ़ी के ऐसे लोगों से मिलने का मौका मिला, जो रविवारों के प्रातःकाल में

ठीक आठ बजे वैदिक रीति के अनुसार यज्ञ करते हैं । वे मांस-मछली-अंडे नहीं खाते । शराब का सेवन नहीं करते । वे वेद मन्त्रों की व्याख्या अपनी अफ़्रीकन में और अंग्रेज़ी भाषा में करते हैं । हम उन महानुभावों से दो प्रमुख शहरों में मिले : आक्रा और कुमारी नगर । एक महायज्ञ में आक्रा नगर में भारतीय राजदूत श्री दिलजीत सिंह पानम जी पधारे थे । आप ने हमारे आग्रह पर खुद अपने कर-कमलों द्वारा स्वामी घनानन्द जी के साथ अनेक बार घृत की अहुतियाँ यज्ञ कुंड में डालीं और अपने भाषण के दौरान ५० हज़ार रुपये वहाँ की मुद्रा में देने की बात की और साथ ही अनेक जवानों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान करने की भी बातें कीं ।

भारतीय राजदूत से गत अगस्त मास के मध्य में उन के ही दफ्तर, १०९ रिज़ गली, आक्रा, घाना में एक दिन पूर्व मिलने का मौका मिला था । आप से और दफ्तर के अनेक भाई-बहनों से हमें ४० मिनट तक घुल-मिल कर बातें करने का और जल-पान करने का शुभावसर प्राप्त हुआ । हमारे दल के श्री धनदेव बहादुर ने यज्ञ और मंदिर के कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए भारतीय राजदूत को आमंत्रित किया था । स्वामी घनानन्द जी अति प्रसन्न हो चले थे । भारतीय राजदूत श्री सिंह जी मिलनसार स्वभाव के हैं । वे प्रसन्न चित्त और वहाँ के धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में बहुत सहयोग प्रदान करते हैं ।

उन के आफ़िस में मैंने अपने दल के समक्ष "आर्योदय" पत्र का वह अंक प्रदान किया, जिसे आर्य सभा ने १ एप्रिल १९९४ को पं. गयासिंह आश्रम की स्वर्ण जयन्ती के शुभावसर पर प्रकाशित किया था । भारतीय राजदूत ने अति प्रसन्नता के साथ वह अंक स्वीकार किया और बड़े ध्यान से पंडित

Ten Rules of Arya Samaj

1. God is the primary cause of all that is known through spiritual and physical sciences.
2. God is existent, intelligent and blissful, He is formless, omnipotent, just, kind, unborn, endless, unchangeable, beginingless, unequalled, the support of all; the Lord of all, omnipresent, immanent, unageing, immortal, fearless, eternal,, holy and the creator of the universe. He alone should be communed with.
3. The Vedas are the scriptures of all true knowledge. Reading, teaching, hearing, and making others hear the Veda, is the first duty of all the Aryans.
4. For accepting the Truth and rejecting falsehood one should always be prepared.
5. All work should be done in keeping with righteousness after due reflection over right and wrong.
6. To do good to the whole world is the main object of this organisation i.e to improve physically, spiritually, and socially.
7. One should have dealings with all in accordance with love, law and propriety.
8. Dispelling of ignorance and promoting of knowledge should be done.
9. Nobody should remain content with his own prosperity but the individual prosperity should be considered in the prosperity of all.
10. All men should be bound in following altruistic, social rules and in every rule of welfare let all be free.

List of Pandits

Name	Address	Tel
Ancharaz Baneemadho	Boulet Rouge, C. Flacq	4132724
Bohooran Nirmala	R. Rd, Tyack, R.d. Anguilles	6265155
Bheekha Prayag	Rue Prud'homme, Riv. des Anguilles	6262432
Bhunjun Hurryshankar	R.Rd, Riviere du Poste	6174292
Bhurosy Soondree	Baboolall Lane, Bois Chéri Rd, Moka	4331163
Boodhoo Manickchand	M. DayanandAve. Gde P. aux Piments	2617276
Boojhawon Sookchandra	Upper Dagotière, Dagotière	4330014
Booluck Premlall	Deux Frères, GRSE	4175014
Bumma Champawatee	Petit Verger, Nicola Rd, St Pierre	4333308
Bumma Tarwantee	Nouvelle Decouverte, St Pierre	4315046
Bundhun Dindoyal	Clairdonds No 2, Vacoas	6967075
Bundhun Sahadeo	Royal Road, Amaury, Belle Vue Maurel	4127808
Bundhun Soomowtee OSK	Royal Road, Bon Accueil	4184098
Chanderdip Rambhawtee	Palma Road, Quatre Bornes	4252994
Chintamunee Damayantee	Trou aux Biches Road, Triolet	2616168
Chooromonay Yashwantlall	184, A.J.Nehru Road, Quatre Bornes	4254027

Chunnoo Basdeo	Gandhi Avenue, Stanley, Rose Hill	4647845
Chutoree Gurudeo	Rivière des Créoles, Mahebourg	6318578
Custnea Chandra Coomarr	Vingta No 2, Vacoas	6971840
Daiboo Shyam Dhaneswar	R. Rd, Rivière des Créoles, Mahebourg	6318624
Domun Narainduth	Royal Road, Bon Accueil	4184357
Domun Satyabhama	Toory Road, Bon Accueil	4184052
Dowlut Ramraj	L'esperance Trébuchet, Poudre Hamlet	
Dussoye Sahadeo	9eme Mille, Triolet	2616093
Fakoo Satteanand	R. Road, Camp Thorel, St Julien D'hotman	4166960
Ghura Dharamvir M.B.E.	11 A.Pavé D'amour St, Solferino vacoas,	6866613
Gobin Dawookeenanen	Clairfonds No 1, Vacoas	6984903
Gobin Savitree	Clairfonds No 1, Vacoas	6984903
Gukhoul Basdeo	Bambous St, Mahebourg	6318650
Hinchoo Aryawattee	Icery lane, Forest Side	6753219
Jeeanah Jayekarran	Gandhi Rd, Mare D'albert	6275240
Jeerakhun Mudhoo	Roshni Rd, Fond du Sac	2666824
Jhupsee Heemawuth	Mosque Rd, Chemin Grenier	
Jory Krissoonduth	Jokhoo Lane, Nouvelle Decouverte	4315191
Kalka Nandeo	Young Tow Road, Grand Bois	6175125
Koomar Dipnarain	Royal Road, Plaine Magnien	6373955
Lobind Danwantee	Bonne Mere, Union Flacq	4134638
Lokmun Mooklal	Cité Road, Tyack, Riv. des Anguilles	6265155
Luchman Cossilah	No1 Ave St Louis, Belle Rose	4544041
Luchmun Parvattee	Dr Ramgoolam Road, Plaine des Papayes	2666947
Mahadawoo Jeewan	L'agrement, St Pierre	4331085
Mahesh Balmik	Chapel Road, L'escalier	6367094
Meetoo Lalita	Royal Road, Quatre Cocos	4151909
Megraz Bissnooduth	Morcellement St André, P.des Papayes	2616046
Mudhoo Rajeswar	Bois Rouge, Goodlands	2835192
Munsaram Rameswar	Royal Road, Poste de Flacq	4133476
Muttra Jayprakash	Camp fanny Road, Chamouny	6226702
Noyan Jaynarain	Baitka Rd, Trois Bras, Petit Raffray	2837936
Oomah Virjanand	Ballah Road, Rivière du Poste	6175272
Pockraz Danwantee	Valton, Long Mountain	2452141
Pydegadu Ravindra	Gandhi Rd, Trois Boutiques, Union Vale	6363831
Ramdu Dayananda Tosadu	Camp Caboche St Julien Village, FUEL	4185503
Ramdowar Ravin	Pt Ramdowar Lane, Melrose M. Blanche	
Ramkalawon Shivsungkur	Cremation Rd, Poste de Flacq	4136044
Ramnauth Vijayantee Mala	Tagore Rd, Gde Pointe aux Piments	
Rampersad Jugdish	Robinson Road, Curepipe	6755182
Ramparsad Satyaveer	Ramparsad lane, Laventure	4183350
Ramsaha Rajman	Mahatma Road, Lalmatie	4183350
Ramsarah Rajgooroo	Morcellement St André, P. des Papayes	2616130

☞

मेरी छपी रचनाएँ इन पत्र-पत्रिकाओं में

सन् १९५१ से आज तक

सन् १९५१ ई. के एप्रिल मास में मैंने लिखना शुरू किया । 'जनता' पत्र पर पं. वेणिमाधव सतिराम जी, पं. लक्ष्मीप्रसाद वद्री जी, श्री सुमंगलसिंह जी, और बाद में श्री राजेन्द्र अरुण जी ने सम्पादन सम्भाला था ।

सन् १९६३ ई. 'दर्पण' पत्रिका के सम्पादक थे श्री छबीलाल बिदेशी जी ।

सन् १९५२ ई. 'वर्त्तमान' पत्र के सम्पादक थे पं. रामसेवक जी ।

सन् १९६० ई. 'समाजवाद' के सम्पादक पं. सुन्दर शर्मा जी ।

सन् १९५६ ई. 'अनुराग' के सम्पादक पं. दौलत शर्मा जी ।

सन् १९७७ ई. 'प्रभात' के सम्पादक श्री मधु जीराखन जी और श्री चन्द्रदीप जोधन जी ।

सन् १९५२ ई. 'आर्योदय' के सम्पादक प्रारम्भ में पं. आत्माराम विश्वनाथ जी थे; फिर श्री मोहनलाल मोहित जी आर्य रत्न, आर्य भूषण O.B.E. । सह-सम्पादक श्री मूलशंकर। रामधनी जी एम.ए.डी.पी.एछ; एम.बी.ई., श्री सत्यदेव प्रीतम जी बी.ए., ओ.एस.के., पण्डित राजमन जी, श्री सोब्रन जी

यह पत्रिका 'आर्य सभा' द्वारा प्रकाशित की जाती है । इस प्रकाशन के लिए अच्छा सहयोग दिया ।

सन् १९६८ ई. 'कबीर पंथ' सम्पादक आचार्य भगवानदास, नई दिल्ली, भारत ।

सन् १९६७ ई. 'इन्द्रधनुष' प्रबन्धन निर्देशिका श्रीमती सत्यावती जगमोहन जी सम्पादक श्री प्रह्लाद रामशरण, सह-सम्पादक श्री जनार्दन कालीचरण जी, श्री बी.एल. श्रीवास्तव जी ।

सन् १९६७ ई. 'पंकज' सम्पादक श्री अजामिल माताबदल जी, सह-सम्पादक श्री हनुमान दुबे गिरधारी जी, बहन सत्यावती जगमोहन जी, मन्त्री हिन्दी प्रचारिणी सभा, श्री नूतन राजपोत जी । इसी सभा द्वारा यह पत्रिका प्रकाशित होती है ।

सन् १९६१ 'वसंत' पूर्व सम्पादक श्री अभिमन्यु अनत जी, वर्तमान सम्पादक डा. बीरसेन जागासिंह जी हैं । सहयोगी श्री पूजानन्द नेमा जी, श्री रामदेव धुरन्धर जी, श्री गुरुदत्त राजपालसिंह । 'रिमझिम' सन् १९९७ ई. ये दो पत्रिकाएँ 'महात्मा गांधी संस्थान' द्वारा प्रकाशित होती हैं । 'वसंत चयनिका' सन् १९९३ ई. विशेषांक सन् १९९६ ई. । 'नवजीवन' सम्पादक श्री एस.एम. भगत जी । सहयोगी पं. रविशंकर कौलेसर जी और श्री नरेश रा न जी । प्रभात सम्पादक श्री दलतमन जी और श्री देव हीरा जी ।

विदेशों में – सन् १९८५ ई. 'गगनांचल' नई दिल्ली, भारत । सम्पादक श्री गिरिजा कुमार माथुर जी सहयोगी डा. अमरेन्द्र मिश्र जी ।

यूरोप, नोर्वे 'शांति दूत' सम्पादक श्री अमित जोशी जी और श्री सिद्धार्थ जोशी जी ।

सन् १९९० ई. 'सार्वदेशिक' डा. सच्चिदानन्द शास्त्री जी, 'सार्वदेशिक' सभा, नई दिल्ली, भारत से प्रकाशित ।

सन् १९९७ ई. 'शान्ति दूत' ओस्लो, नोर्वे, प्रमुख सम्पादक श्री अमित जोशी जी सम्पादक श्री जोशी जी ।

इन पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक महानुभावों के प्रति भी मैं आभारी हूँ । भूल से जो नाम छूट गये हों उन का क्षमा प्रार्थी हूँ । जो सम्पादक महानुभाव संसार से चले गये हैं, उन की आत्मा की शान्ति के लिए मेरी प्रार्थना है । शतम् जीवेम शरदः - ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

शुभकामना के साथ - विनम्र सेवक

पं. धर्मवीर घूरा, वाक्वा, मोरिशस

फोन २३०-६८६ ६१३

Phone: 6866613



Swami Dayananda Saraswati



Left: खुशी की बात है कि आर्य सभा के आमन्त्रण पर स्वामी दिव्यानन्द जी भारत से यहाँ पधारे हैं । पण्डितों और नेताओं को वे योग आसन, प्राणायाम आदि का कोर्स दे रहे हैं



(मोरिशस के [illegible] डाक्टर नवीनचन्द्र रामगुलाम जी के साथ पं. घूरा, श्रीमती [illegible] और कु. प्रतिमा घूरा रेन्डी के शाही भवन में)



[illegible] स्थित आप्रवासी घाट [illegible] [illegible] की [illegible] पर लेखक के साथ [illegible] में भाग ले रहे हैं



Shri Mohunlal Mohith, leader of Arya Samaj



Former Prime Minister, Sir Seewoosagur Ramgoolam, a great promoter of the Hindi Language and the Arya Samaj.



अजमेर में

सन् १९८९ ई. में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का उद्घाटन भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने किया था ।

महा कवि डॉ. ब्रजेन्द्र कुमार भगत 'मधुकर' जी, पं. घूरा जी आदि हैं



(घूरा-निधि से एक छात्रा को भेंट, आर्य भवन, पोर्ट लुई में)



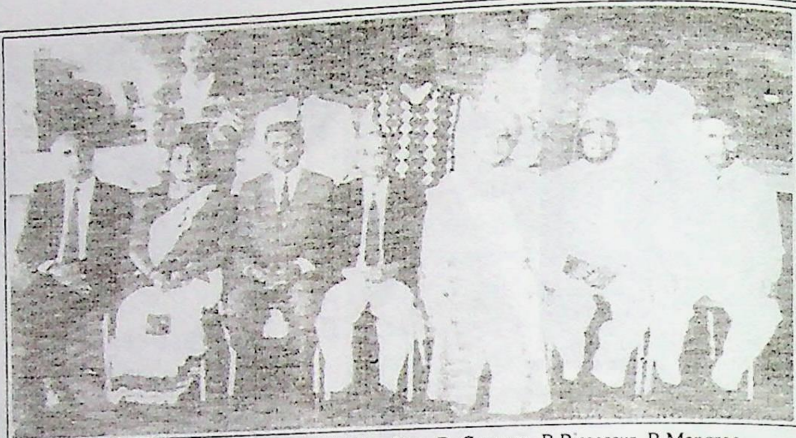
१४.९.९३ - २७.४.९४ **पंडित और श्रीमती धर्मवीर घूरा स्थिर निधि** - १०,०००/- रुपये ।

शर्त : ६,०००/- रुपये के ब्याज से आर्य सभा द्वारा 'भाषण प्रतियोगिता' की योजना बनाई गई है । उस से विजेताओं को पुरस्कृत किया जाता है

(१) ४,०००/- रुपये के ब्याज से धार्मिक परीक्षाओं में उत्तीर्ण दो विद्यार्थियों को भेंट दी जाय ।

(क) विगत वर्ष १९९६ चतुर्थ राष्ट्रीय आर्य युवा दिवस के अवसर पर आयोजित अंग्रेज़ी भाषण प्रतियोगिता के प्रथम आने वाले छात्र को पुरस्कार दिया गया ।

(ख) विद्या वाचस्पति और विद्या रत्न की परीक्षाओं में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले एक एक छात्र को भेंट दी गयी ।



Arya Sabha Committee members (Left to Right) Standing : D. Cowreea, B.Bissessur, B.Mangroo, V.Dewkurrun and A Bundhun (manager). Sitting: D.Boolell, V.Kasseah, R.Neewoor, M.Ramdonee (president), Swami Divyanand Saraswatee, C.Ramduny, Dr. O.Gangoo (secretary).



आर्य सभा के पण्डित गण - जुलाई १९९८

Left to Right (Standing): S.Boojhawon, D.Gobin, R.Mudhoo, A.Seetohul, V. Saulick, N.Domun, S.Ramkalawon, R.Mansaram, D.Bundhun, D.Reechaye, S.Sookhnauth, C.Custnea, S.Budree, J.Mahadeo, M.Jeerakun. (Sitting) : D.Koomar, D.Ghura, I.Sohur, S.Beetullah, B.Ancharaz, M.Lockman, P.Beekha, S.Ramparsad, M.Boodhoo & G.Chotoree.



आर्य सभा की पण्डिताएँ - १.८.९८ : (Left to Right) A.Ghansham, D.Pockraz, A.Hinchoo, D.Chintamunnee, S.Bundhun, R.Manee, P.Luchmun & S.Doman.

List of Pandits (continued)

Ramsurrun Dhaneswar	Pepsi Rd, Ecroignard, C. Flacq	4193665
Reechaye Dharmendra	Amaury Belle Vue Maurel	4126799
Reejhaw Ishwar	Camp Vernon Bel Air, Mahebourg	
Roopan Mohunlal	108, A. Chateau d'eau St, Port Louis	2083154
Runjeet Dharamvir	Bhageerutty Lane, Lapeyrouse Curepipe Rd	6861467
Sandhoo kamla	Royal Rd, Trou d'eau Douce	4195380
Saulick Satyanand	Trois Boutiques, Triolet	
Saulick Vedbrutt	35 Chartreuse St. Dubreuil	6655183
Seechurn Raghoonath	Royal Road, Mahebourg	6319195
Shreemantoo Deojeet	Benares, Rivière des Anguilles	
Sohur Phugoolall	Notre dame Long Mountain	2453093
Somaroo Deven	Leela Road, Chemin Grenier	6226840
Sooknauth Sumandev	Royal Road, Riche Mare, Central Flacq	4167056
Soonucksing Mahadeo	Rishi Dayanand Rd, Plaine Magnien	6374276
Toolooah Ganduth	La Forge, Poste de Flacq	4138265
Budree Sudesh	L'Avenir Arya Samaj, L'Avenir	4338265
Pelladoah Satwantee	Belle Rose, Quatre Bornes	
Satish Beetullah	Siding Road, New Grove	6277789
Pta Parmawtee Darumdur,	St Remy, Central Flacq	
Pt Ramjeet Deeal	Petit Paquet, Montagne Blanche	
Vydianee Mookhram	Camp dalia, Petite Pte. aux Piments	
Chitra Jissury	4 Prince of Wales, Tranquebar, P.Louis	
Mahodree Mahadu	New Road, Quartier Militaire	
Karuna Nuttoo	Laboutique Coco, Riche Mare, C. de Flacq	
Atmadeo Seetohul	8eme Mille, Triolet	
Harduth Lufor,	Royal Road, Riviere du Poste	
Sooresha Kumaree Baurun,	Royal Rd, Reunion Maurel, Petit Raffray	
Ratna Unnuth,	Campbell Lane, Vacoas	
Simla Devi Dabeeah	Damree lane, Laventure	
Pratibha Devi Jogessur,	Jokhoo Road, Nouvelle Decouverte	
Pta Antee Pandeea Hinchoo,	Ceery Lane, Forest Side	6753219
Pandit Ramdowar,	Pt Ramdowar Lane, Melrose	
Pt Dhaneswar Ramsurrun,	Ecroignard, C.Flacq	

* * * * * *

Arya Sabha Centres

* Arya Pratinidhi Sabha
Trinidad
Montrose Village
Chagunas, Trinidad. West Indies

* Sameetee Arya Pratinidhi Sabha
P.O.Box 250 Gravenstart, Paramanilo
Suriname Dutch Guyana. S. America



* General Secretary
Central Vedic Mandir
D.A.V. College
Durban Street
Georgetown
Guyane. South America
* Dr Sachidananda Shastri
Savadeshick Arya Pratinidhi Sabha
General Secretary
International Aryan League
Maharishi Bhawan
Ramlila Ground, New Delhi 110002
India Ph. 3274771; 3260985
* Moolshankar Ramdhonee (President)
Dr Oudaye Narain Gangoo (Secretary)
Arya Sabha
1, Maharishi Dayanand Rd
Port Louis Mauritius Ph. 2122730
* Arya Samaj
P.O Box 4245
Samabula
Suva
Fiji Islands
* Arya Pratinidhi Sabha
Fiji
P.O.Box No 385
Lutoka, Fiji Islands
South Pacific
* Vedic Temple & Sw. Dayanand Bhavan
21, Carlisle St., Durban
South Africa Tel 3065261
* Mr Sheeshoopal Rambharos
President, Arya Benevolent Home
P.O. Box 56199., Chathworth
3030 Durban South Africa
Tel 431288 (89) (90)
* Arya Samaj
Vedic Hall Centre
338466 Mama Nagine Road
Nirohi Kenya
* Arya Samaj Eastern Africa
Mombassa
P.O.Box 80131
Telephone 494635
Kenya
* Pandit D.kalloe
Kalloe Enterprise
Dr. Sophie Redmonstrat 65-67
Paramarilo Suriname
PO Box 2407
Cable: Kalkon South America Tel 74382
* Vedic Mission London
15 Spring Grove Lusent
Honstour T.W.3 4 DD
U.K.
Vedic Mission Arya Samaj
High Street 387
Birmingham B 70 90 W
United Kingdom
* Mr R. Panray
Arya Samaj
Bangkok
No 894 1600 I SOIRONG THAN
SUKHSAWAD 48
* General Secretary (Arya Samaj)
BangKok 10140
Thailand Tel 4272353
* Arya Samaj Singapore
Secretary Arya Samaj
Rovel Road, Singapore
* Prof S.N.Bhardwaj
Arya Samaj London
69 -A Argyle Rd West Ealing
London W-13 OLY
Tel 8181991 1732
* Arya Pratinidhi Sabha
PO Box 1770, Durban, Natal S.A
* Arya Pratinidhi Sabha, P.O. Box 243
Nairobi Kenya
* Arya Pratinidhi Sabha P.O.Box 450,
Paramaribo Dutch Guyana (S. America)
* Arya Pratinidhi Sabha
Rangoon (Burma)
* Arya Samaj
PO Box 77 Dar-es-Salaam (T.T)
* Arya Samaj Zanzibar
PO Box 107 Zanzibar
* Arya Samaj Eldoret
PO Box 16 Toroco (Uganda)

Mauritius ke Arya Sewi
by Pt Dharamvir Ghura M.B.E. O.S.K.
Printing undertaken by AVS, Royal Road, Triolet

गयासिंह का चित्र देखा था । जब मैं ने कहा कि इस अंक में आप मॉरीशस टापू के प्रधान मंत्री सर अनिरुद्ध जगनाथ, मॉरीशस के राष्ट्रपति श्री कासम उत्तिम, मॉरीशस में नियुक्त भारतीय उच्चायुक्त श्री श्याम सरन जी के साथ-साथ आर्य सभा के प्रधान श्री श्रद्धानन्द रामखेलावन आदि के संदेश देख पाएँगे तो वे तल्लीनता से हमारे नेताओं के चित्रों और सन्देशों को देखने-पढ़ने लगे । इसी अंक में मंत्री कार्ल ओफ्मान, मंत्री श्री मुकेश्वर चुनी, लोर्ड मेयर श्री अहमद सुलेमान जीवा, श्री मूलशंकर रामधनी, श्री सत्यदेव प्रीतम, डा. उदयनारायण गंगू, डा. बीरसेन जागासिंह, श्री सत्काम बुलेल, श्री देव ऋषी बुलेल, श्री जसकरण मोहित, डा. हरिदत्त घूरा, श्री बिक्रमसिंह रामलाला, बहन सरिता बुद्धू आदि के लेख और चित्र भी छपे हैं । भारतीय राजदूत श्री सिंह जी ने सभी पृष्ठों को पलट-पलट कर देखा । फिर वह अंक अपनी मेज़ पर रखा । मेरे लिए गौरव की बात यह था कि "आर्योदय" के संपादक महानुभावों ने मेरा लेख भी इस अंक में प्रकाशित करने की कृपा की थी । आनंद बंधन जी ने मुझ से घाना जाने की बात की थी और लेख के लिए भी माँग की थी ।

घाना देश के महाराजा के उमासी 'नगर' के उन के निवास स्थान पर वहाँ के प्रमुख डाक्टर आसाफ़ो जी के सहयोग से उन से मिलने का सुनेहरा मौका हासिल हो सका । वहाँ पर वेद मंत्र सुनाकर जब मैंने उन के लिए अंग्रेज़ी भाषा में मंत्रों की व्याख्या की और बताया कि १०० वर्ष से अधिक समय तक स्वस्थ रह कर जीने की मैंने कामना की तो वे मुस्कारने लगे । इस प्रकार मुझो ४० देशों में जाने का और कार्य करने का मौका मिल गया ।

दीया जलावें

दीया का उत्सव खुशियों को समेट कर एक बार फिर आया । चलें हम भी संसार की इस क्षेत्र में याने कि हिन्द महासागर में स्थित मोरीशस द्वीप में इस सांस्कृतिकक उत्सव को गौरव के साथ मनावें । पर पहले तो इन दीयों को साफ करना है, तेल और बत्ती डालना है । फिर सही-सही कतारों में, आँगनों में, घरों की चौकटों में और घर के अन्दर सज़ाते हैं, ताकि घर के अन्दर से अन्धेरा मिटे और ज्योति बिखरे । उल्लेखनीय है कि हरेक जीव-जन्तु प्रकाश को अधिक चाहता है ।

इस मौके पर हमें समाज को नहीं भूल जाना चाहिए । समाज की कृपा है, समाज के नेताओं की कृपा है कि उन लोगों ही ने हमें बताया है कि उत्सवों को कैसे मनाना चाहिए । ऐसे मौके पर क्या क्या करना चाहिए । यदि हमें यह स्मरण नहीं आया तो हम कृतघ्न कहलाएँगे, तब कैसी दिवाली होगी ? भला अकेले में दिवाली कहीं मनाई जाती है ! मरी हुई जाति ही पूर्वजों से विरासत में प्राप्त उत्सव नहीं मनाती है । हम तो ऋषि सन्तान हैं और अभी हम जीवित हैं, जागृत हैं ! महर्षि दयानन्द जी का कर्ज़ अभी चुकाना बाकी है, उऋण कब होंगे ? क्या कभी हमने दिल पर हाथ रख कर यह अच्छी तरह से सोचा है । यदि अब तक नहीं सोचा है तो कब ठंडे दिमाग से इसपर विचार करेंगे ?

भारत ने दयानन्द जैसे वीर को पैदा किया है। १११ वर्ष हो चले हैं, जब से आर्य समाज का पावन कार्य प्रारम्भ हुआ है । अतः केवल हमें इसी बात पर गौरवांवित नहीं हो जाना चाहिए कि मॉरीशस में हमारे ४५५ शाखा

समाज हैं । पर क्या वहाँ पर उन केन्द्रों में कार्य ठीक रीति से चल रहा है ? यदि नहीं । तो क्यों ? क्या इस पर हम ने कभी सच्चाई से बैठ कर विचार किया है ? ४५५ समाजों में अभी भी पूरी तरह से पढ़ाई प्रारम्भ नहीं हो पाई है । सच कहा जाय तो उनमें आधे में महर्षि के विचार वास्तविक रूप से प्रवेश नहीं कर पाये हैं या वेद मन्त्रों का महत्व बच्चों को, नौजवानों को बताया नहीं जाता है । वहाँ भी दिनोंदिन कम बच्चे होते जा रहे हैं । ऐसी स्थिति में हम कैसे कह सकेंगे कि आर्य समाज का कार्य पूरा हो रहा है । कहा जाता है कि आज के बच्चे कल के नेता होंगे । पर अगर यही हालत रही तो वे नेता बनेंगे कैसे ? कुछ अध्ययन करेंगे तब न ? क्या आप जानते हैं कि हमारी सामाजिक पाठशालाओं के अध्यापक गण अभी भी पाठ्य पुस्तकों की कमी के कारण चिन्तित हैं ! हम उन की मांगों को हम कब पूरा कर पावेंगे ? कब वैसी पुस्तकें प्रकाशन में आएँगी ?

नवीन हिन्दी की पुस्तकों का प्रकाशन जब किया गया था तो उन की छठी कक्षा की पुस्तक में 'दिवाली' पाठ आया था । कितने चाव से हम अध्यापक गण बच्चों को उस पाठ के आधार पर दयानन्द जी के विचार, भगवान श्री रामचन्द्र जी के वनवास से आगमन, रावण की राक्षसी वृत्ति समझाते थे । आसुरी और राक्षसी वृत्तियों पर उन्हें विचार दिया जाता था । अभी भी कहीं-कहीं वह पुस्तक प्राप्य है । पर अब तो वैसी बहुमूल्य पुस्तकें छपती नहीं ! तब कार्य कैसे चलेगा ? दिवाली पर आधुनिकतम पाठ समाज की माँग के अनुसार कब तक तैयार होकर सामने आयेंगे ? समय सरकता जा रहा है । पर इस बात पर ध्यान देना चाहिए है कि वक्त किसी का इन्तज़ार नहीं करता ! वैसे तो नवीन हिन्दी के प्रकाशन के लिए दिवाली और महर्षि दयानन्द के पाठों के लिए हम हमेशा आचार्य रामप्रकाश के प्रति ऋणी

होंगे । आज कल कितने ऐसे अध्यापक या अध्यापिकाएँ सामाजिक पाठ-शालाओं में मिलेंगे, जो विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार दिवाली उत्सव पर पाठ तैयार कर के पढ़ा पावेंगे । यह अति सोचनीय विषय है । पर फिर भी प्रसन्नता की बात यह है कि आर्य सभा की विद्या-समिति पाठ्य पुस्तक-प्रकाशन की दिशा में कार्यरत है ।

दिवाली उत्सव सब के लिए मंगलसय हो ।

शिक्षा मंत्री के निवास पर यज्ञ अनुष्ठान

शनिवार ता. १५ अक्टूबर को सायंकाल में पेरेबेर गाँव में अपने निवास पर शिक्षा मंत्री माननीय अरमुगम परसुरामेन जी ने एक वैदिक यज्ञ के अनुष्ठान का आयोजन किया था । आर्य सभा के प्रधान श्री श्रद्धानन्द रामखेलावन ने, आर्य सभा के कर्मचारी और श्री आनंद बंधन ने भी इस में आकर कार्य की शोभा बढ़ाई । मन्त्री जी के बाग में छावनी लगायी गयी थी । छावनी जन समुदाय से भरी थी ।

पं. भुवनन्दन मंजु जी और पं. सूरज नो[illegible]न जी ने सवेरे आकर श्री चन्द्रदेव बिसेसर के साथ यज्ञशाला सजायी । इस के अतिरिक्त आमंत्रित भाइयों और बहनों का स्वागत मन्त्री महोदय ने किया । श्री बिसेसर जी पाम्प्लेमूस आर्य जिला परिषद् और हिंदू कौंसिल के मंत्री ने यज्ञ के प्रति प्रेम का प्रदर्शन किया ।

पं. धर्मेन्द्र रिकाय, पं. धर्मवीर घूरा, वानप्रस्थी जगरनाथ जी और सेविका सुरेशा कुमारी बोरन जी ने यज्ञ संपन्न किया ।

मुख्य यजमान के रूप में और धार्मिक पोशाक पहने हुए माननीय आरमुगम परसुरामेन जी सपत्नीक उपस्थित थे । उनकी माँ और बच्चे भी साथ-साथ यज्ञ कुंड में आहुतियाँ डालते रहे ।

यज्ञ के पश्चात् पं. रिकाय और पं. नोयन जी ने मन्त्रों वा यज्ञ-विधि की व्याख्या की । एक घंटे के इस अनुष्ठान मैं मंत्री महोदय के सारे रिश्तेदार बहुत ही धार्मिक भाव के साथ शामिल थे । श्री परसुरामेन ने कार्य के अंत में सब के प्रति दो शब्दों के साथ आभार प्रगट किया । सब का जल पान और भोजन से सत्कार किया गया ।

यही नहीं, परसुरामेन जी ने सभी को रामायण का एक-एक ग्रंथ प्रदान किया और यह वचन भी दिया कि भारत से वेद मंगाकर वितरित करेंगे ।

विश्व नागरिकों द्वारा

मॉरीशस के आर्य भवन में सहभोज

यह भोज गत २६ अगस्त को आर्य सभा-भवन, पोर्ट लुई में हुआ था । इस में भारतीय मूल के ५०० यात्री सारे विश्व के कोने-कोने से पधारे थे । वे सभी भारतीय मूल के वंशज हैं और महात्मा गांधी संस्थान में होने वाले गो.पी.ओ. विश्व जुड़ाव में पधारे थे । यह जुड़ाव तीन दिवसीय रहा । इस का उद्घाटन मॉरीशस के राष्ट्रपति महा महिम श्री कासम उत्तिम जी ने

किया था । मौके पर मॉरीशस के स्थानापन प्रधान मंत्री माननीय श्री कैलाश प्रयाग जी ने एक भाषण द्वारा इस का प्रारंभ किया था ।

गौरव की बात रही कि सत्रों के अंतिम दौर में अध्यक्ष श्री धनदेव बहादुर जी ने वेद का यह मंत्र सुनाया और इस की व्याख्या अंग्रेज़ी में की-

ओं संगच्छध्वं सं बदधवं सं वो मनांसि जानताम् ।

देवा भागं मया पूर्वे संजानाना उपासते ।।

जन-समुदाय पर इस व्याख्या का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा था । एक होकर चलने, सोचने और कार्य करने से प्रगति होगी ।

नई दिल्ली के पत्रकार श्री बलेश्वर अग्रवाल जी ने बताया कि इस सम्मेलन का सर्वप्रथम आयोजन प्रवासी भारतीयों को एकत्रित करके सन् १९२९ में अमेरिका के एक नगर नममोक में किया था । पर साथ ही आप ने प्रेस वालों को बताया कि उस समय आस-पास के कुछ लोग ही पधारे थे ।

गौरव की बात यह भी थी कि मॉरीशस के इस सम्मेलन में तृनिडाड के प्रधान मंत्री माननीय वासुदेव पाण्डे जी का संदेश पढ़ा गया था । उल्लेखनीय है कि आप ४२ वर्ष पूर्व तृनिडाड आर्य प्रतिनिधि सभा की एक प्राथमिक पाठशाला में पढ़ाते थे । आप एक अच्छे गायक भी हैं ।

इस मौके से सम्बद्ध एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया गया था । भारत के प्रधान मंत्री माननीय श्री देवे गौड़ा जी का, मॉरीशस के प्रधान मंत्री माननीय डॉक्टर नवीनचन्द्र रामगुलाम जी का, तब मॉरीशस में स्थित भारतीय आयुक्त श्री श्याम सरन जी के संदेश इस स्मारिका में प्रकाशित हैं ।

सब देशों के प्रतिनिधियों ने इस मौके पर अपने-अपने देश के प्रवासी भारतीयों पर किये जाने वाले न्याय या अन्याय का वर्णन किया । फीजी से कोई भी प्रतिनिधि नहीं आया था पर ओस्ट्रेलिया के बृजबान नगरसे श्री विमन प्रसाद जी ने, जो कभी फीजी टापू में निवास करते थे, एक सुंदर भाषण दिया था । आप फीजी प्रौढ़ संस्थान और विद्यार्थी परिषद के अध्यक्ष हैं ।

आर्य भवन में उस रोज़ आर्य नेता श्री मोहनलाल मोहित जी आर्य रत्न आर्य भूषण, आर्य सभा के प्रधान श्री जसकरण मोहित जी और मंत्री श्री सत्यदेव प्रीतम जी और अन्य अंतरंग सदस्यगण पधारे थे । वे उन महानुभावों के स्वागत-सत्कार से अति प्रसन्न हुए थे ।

नेपाल आर्य सभा के पूर्व प्रधान, भूतपूर्व सांसद श्री नंद किशोर जी ने दफ़्तर में आकर यहाँ के समाज की प्रगति का जायज़ा लिया । आप के और साथी भी पधारे थे जिन में दक्षिण अफ़्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के श्री गोकुल जी भी थे । सभी लोगों को 'आर्योदय' पत्रिका दे दी गई थी ।

ये लोग डी.ए.वी. कॉलेज भी देखने गए थे ।

राष्ट्रपति का जदुनंदन बालगोबिन आश्रम में आगमन

अभी हाल का निर्मित यह आश्रम गरीब अपाहिज तथा वृद्ध जनों के लिए एक आसरा-स्थान है, जो सें-पोल गली पर स्थित है और वहाँ पर प्रवेश होने के लिए मुंशी प्रेमचन्द गली होकर जाना होता है । वहाँ करीब २५ लोग

हैं, जो आर्य सभा की और सरकार की सेवा प्राप्त करते है । कुछ दानी महानुभाव हैं, जो अक्सर वहाँ पर जाकर दान देते हैं या खाना तैयार करके उन्हें दिया करते हैं । पर बहुत कम ऐसे लोग हैं, जो इस प्रकार की जन-सेवा करने की चेष्टा करते हैं । आशा है कि भविष्य में ऐसे सेवा भावी जनों की संख्या बढ़ेगी, क्योंकि गयासिंह आश्रम, जो राजधानी, पोर्ट लुई में है, वहाँ भी कम लोग सेवा में रत थे । अब अधिक दानी नर-नारी वहाँ जाते हैं । इस से उन की सेवा से आश्रितों का मन गद-गद हो जाता है ।

मुझे स्मरण है कि इंग्लेण्ड की महारानी की बहन राजकुमारी आन जब मॉरीशस की यात्रा पर आई थी तब गयासिंह आश्रम में गई थीं और सब से मिली थीं । यह एक ऐतिहासिक घटना रही ।

गत मई मास में हमारे गणराज्य के राष्ट्रपति महा महिम श्री कासम उत्तिम आकर बालगोबिन आश्रम के आश्रितों से मिले । हाथ मिलाया, खुश हो कर बातें कीं । यही नहीं, आर्य सभा के कर्णधारों का मन भी उन से मिल कर गद्गद हो गया । हमारे साथ जल-पान भी किया ।

उस मौके पर श्री हरिदत्त चमन जी, श्री चंद्रमणि रामधनी जी, श्री विद्यानन्द देवकरण जी ने फाटक पर हमारे अतिथि जी का स्वागत किया । श्री जसकरण मोहित जी, श्री देवऋषि बुलेल जी, श्री राजमन निधिदिन जी आर्य सभा के मैनेजर श्री आनंद बंधन आदि भी थे ।

श्री बुलेल जी ने बताया कि एक मुस्लिम भाई, जिन का नाम इसाक गोपाल था, उन की मृत्यु बालगोबिन आश्रम में हो गई थी । अतः मस्जिद के मौलाना साहब को बुलाया गया था । उन्होंने आकर प्रार्थना की तब उन का जनाज़ा उठा । आप ने कहा कि सभी धर्मों के लोग यहाँ रहते हैं पर

निरामिष भोजन उन्हें दिया जाता है । आश्रम में रहने वाले एक युवक हामिद गरीब ने फूलों के गुच्छे से राष्ट्रपति जी का स्वागत किया था ।

अपने भाषण के दौरान जनाब कासम उत्तिम जी ने प्रसन्नता के साथ कहा कि "आज मैं अति प्रसन्नता के साथ आप के बीच में हूँ । आज परिवार दिवस है । इन के साथ यहाँ पर उन के परिजन के रूप में साथ देने आया है । आप का संग्राम सेवा सदन नशा अधिक लेने वालों की भी सेवा करके महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है । यहाँ पर आप लोगों ने पूर्व में भी मेरा स्वागत किया था ।"

मेरा संबंध आर्य समाजी लोगों के साथ परिवार जैसा सम्बन्ध है । मेरी तो यह इच्छा रही है कि भाषण देने के बदले आप लोगों के साथ और अधिक समय बातचीत में लगाऊँ । बालगोबिन परिवार ने एक ऐसा दान देकर जीवन में कठिनाई में पड़ने वाले लोगों के प्रति अमूल्य सहयोग दिया । बहुत धन्यवाद ! अभी-अभी श्री बुलेल जी ने कहा कि "यहाँ पर अन्य धर्मावलंबी भी हैं ।" इस से मैं बहुत प्रभावित हो रहा हूँ, क्योंकि उन के रीति रिवाज पर भी आप लोग ध्यान देते हैं और यहाँ पर सम्मान किया जाता है ।

महात्मा गांधी जी ने कहा है कि : "हमें अपने दरवाज़े और खिड़कियाँ खोल देनी चाहिए, ताकि सभी संस्कृतियों की हवा का आगमन हो सके ।"

आर्य सभा पोर्ट लुई में

पंडित वासुदेव विष्णुदयाल जी की याद में समारोह

वह दिन कितना सुहाना हुआ होगा, जब १९०६ ई. में पंडित वासुदेव विष्णुदयाल जी का जन्म टापू के सावान प्रांत के तायाक गाँव में हुआ था। आज उन का यह घर अजायबघर बनाया गया है। यह सरकार की अति कृपा है कि इसे हमेशा साफ़ सुथरा रखा जाता है।

पोर्ट लुई के आर्य भवन में गत २५ अप्रील की शाम में पंडित जी की याद में एक समारोह किया गया था।

सब का स्वागत सभा के तत्कालीन प्रधान श्री स्व. जसकरण मोहित जी ने किया था। उन्होंने कहा था "पं. जी लाहौर के बाद भारत के कलकत्ता नगर में उच्च शिक्षा का अध्ययन किया था। उन्होंने अपनी सेवा से ज़माने को बदल दिया। पंडित जी ऐसे ही घर पर नहीं बैठते थे। वे प्रचार-कार्य, लेखन-कार्य के साथ-साथ लोगों को राजधानी के अपने निवास स्थान पर हिन्दी पढ़ाते थे। उन की सिखाने की विधि नई थी। वे बहुत जल्द लोगों को पढ़ा देते थे। वे भाषा और व्याकरण समझाने में कमाल करते थे।

श्री राजमन राधाकिसुन जी ने कहा "एक बार स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती जी ने मुझ से कहा था कि क्या आप के चले जाने के बाद भी यह जयंती मनाई जायगी, तब मैं ने सोचा कि पंडित जी के नाम पर क्यों न 'आर्य

भवन' में एक निधि कायम की जाय और उस पैसे के ब्याज से उनकी जयंती हर वर्ष मनाई जाए । अभी-अभी श्री रामनाथ जीता जी ने जो कुछ दिया है, उसे उसी निधि में जोड़ दिया जायगा । विचार है कि निधि की राशि दो लाख तक कर देंगे । श्री कन्हाई का इस निधि में अच्छा सहयोग रहा है ।

मॉरीशस हिन्दी लेखक संघ के मंत्री श्री इन्द्रदेव भोला ने उस मौके पर एक अति प्रभावोत्पादक कविता पेश की ।

डॉ. दैववंशलाल रामनाथ ने पंडित जी के वे गीत गाए, जो पंडित जी अपने प्रवचनों में गाते थे । साथ ही उन्होंने बताया कि 'यह ओ३म् का झंडा आता है' भजन उन्हें प्रिय था ।

श्रीमती वीणा अरुण जी ने कहा, 'पंडित वासुदेव विष्णुदयाल जी को एक क्षेत्र में सीमित करके नहीं देखा जा सकता है । उन में विभिन्नता का जो गुण था, वह अद्वितीय था ।

श्री सुरेन्द्र विष्णुदयाल जी ने 'आर्योदय' के पंडित जी विशेषाँक का विमोचन किया ।

भारतीय उच्चायुक्त के सांस्कृतिक तथा साहित्यिक सलाहकार श्री नवल किशोर शर्मा जी ने कहा, 'नीति कहती है कि जिस का यश जीवित रहता है, वह अमर है । जिस का जीवन बदनामी का है, वह हमेशा मरा हुआ माना जाता है । पंडित जी सदैव जीवित रहेंगे ।

श्री रामनाथ जीता ने कहा, 'आज मैं ३-४ हज़ार बच्चों के सामने, 'पंडित विष्णुदयाल कॉलेज' में कह रहा हूँ कि पंडित जी ने चुनौती को चुना और मैदान में निडर उतर गए ।

हनुमान दुबे गिरधारी जी ने कहा, 'मैं १९५० में उन के साथ हिन्दी सीखता था। उन के विचारों को मैंने अपनाया और अपने जीवन में उतारा भी है।'

संगीताचार्य मोहरलाल चमन जी के द्वारा संगीत का एक अति रोचक कार्यक्रम पेश किया गया था।

नोट : *मैं कभी पंडित जी के कार्यक्रमों में सेवा समिति की वर्दी में रहता था। भक्त मंडली गण और नारी मंडली भी थी। मैं सन् १९४३ ई. में एक रात, महायज्ञ के अवसर पर पंडित जी के साथ एक ही कमरे में रहा था। हम कुल १०-१२ व्यक्ति थे। उस समय मैं १३ साल का था। ३० वर्ष पूर्व, पंडित जी ने एक रात मेरे यहाँ भी बितायी थी। उस समय उनके भाई श्री सुखदेव जी भी साथ थे।*

१२ दिसम्बर सन् १९४३ ई. में आप ने राजधानी पोर्ट लुई में महायज्ञ किया था। ६० हज़ार लोगों का जन-समुदाय उपस्थित था। आप के दो भाई थे श्री सुग्रीव जी और श्री सुखदेव जी। उन्होंने अंग्रेज़ सरकार से लोहा लिया। जेल गए। करीब ६०० पुस्तकें अंग्रेज़ी, फ्रेंच, हिन्दी और संस्कृत भाषाओं में लिखीं। वे हमारे देश की एक विभूति थे।

मॉरीशस में पं. वासुदेव विष्णुदयाल जी का ऐतिहासिक स्थान

मॉरीशस के जिन महापुरुष ने सभी गांवों, नगरों और कोठियों में जा जाकर समयानुसार लगभग ६ हज़ार भाषण दीये और अपने निवास स्थान राजधानी पोर्ट-लुई में तीन सौ पुस्तकें हिन्दी-संस्कृत में और तीन सौ पुस्तकें अंग्रेज़ी-फ़्रेंच भाषाओं में लिखी हैं उन से पंडित विष्णुदयाल का नाम, जो उच्च कोटि के लेखक, इतिहासकार तथा विचारक थे, हमारे इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायगा । पंडित वासुदेव विष्णुदयाल जी युग पुरुष थे । साहित्य वाचस्पति और आर्य भूषण की उपाधियों से आप को विभूषित किया गया ।

पंडित वासुदेव विष्णुदयाल जी एम.ए. ने ५० वर्षों तक जनता को जगाने का महत्वपूर्ण कार्य किया । आप के कार्यों से प्रभावित होकर संसार की सभी दिशाओं से महान् विचारक, लेखक, समाज-सुधारक, राजनैतिक महापुरुष दर्शनार्थ आते रहते थे और उन मौकों पर उन से पंडित जी घुलमिल कर बातें किया करते थे । और अपनी पुस्तकें उन्हें प्रदान किया करते थे ।

पंडित जी का देहावसान जब गत २३ जून को हुआ तो यह दुःखद समाचार सारे टापू में फैल गया । व्यस्तता के उपरांत भी लोग समय निकाल कर उन महान हस्ती के पावन चरणों में श्रद्धा के पुष्प अर्पित करने आए थे । मॉरीशस के महामहिम गवर्नर जनरल सर विरास्वामी रिंगाडू जी, प्रधान-मन्त्री सर अनिरुद्ध जगनाथ, भारतीय दूतावास के अनेक महानुभाव भी श्रद्धांजलि अर्पित करने आए ।

पंडित वासुदेव विष्णुदयाल जी का जन्म तायाक, रिव्येर-दे-जांगी गाँव में १५ अप्रैल १९०६ में हुआ था। फिर आप बड़े जनों के साथ पोर्ट-लुई चले आए। भारतीय आर्य प्रचारक मेहता जैमिनि यहाँ पर आर्य समाज के उत्थान के लिए पधारे थे। उन की जान-पहचान विष्णुदयाल बन्धुओं से राजधानी में हो गई। तब उन बन्धुओं में से श्री सुग्रीव जी से कहा था कि एक सुयोग्य नौजवान को यदि भारत अध्ययन करने भेजा जायेगा तो बहुत अच्छा होगा। बाद में बड़े भाई सुग्रीव ने पं. वासुदेव जी को प्रेरित किया। १९३३ में आप भारत में अध्ययन करने गए थे। प्रथम तो आप लाहौर में डी.ए.वी. कॉलेज में बी.ए. वज़ीफ़ा पाया। पर वज़ीफ़ा छोड़ कर कलकत्ता नगर में एम.ए. का सफलता के साथ अध्ययन किया। इन्हीं दिनों में आप अधिक से अधिक भारत के राजनैतिक मंच पर कार्यरत शुभ चिन्तकों के संपर्क में आए। १९३९ में वे मॉरीशस लौटे।

आप ने हमारे टापू में जागरण का ऐसा अपूर्व कार्य किया कि हिन्दी को ऊँचे आसन पर बिठा दिया। यही नहीं, गैर हिन्दी भाषियों में भी हिन्दी भाषा का अध्ययन करने की रुचि पैदा की। अपने सारे प्रवचन हिन्दी में देते रहे। आप ने अपने आंदोलन को बल देने के उद्देश्य से 'ज़माना' हिन्दी पत्र भी चलाया था। इस ऐतिहासिक पत्र के अंकों में ऐसे-ऐसे लेख आए हैं जो आज भी अध्ययनशील महानुभावों के लिए उपयोगी हैं और मार्ग दर्शन के कार्य आवेंगे।

जन आंदोलन के कार्यों में १२ दिसंबर सन् १९४३ अति महत्व का दिन माना जाता है, क्योंकि इसी तारीख को इस महायज्ञ में हिन्दुओं ने अपनी एकता का बल प्रदर्शित की।

मॉरीशस में

भारतीय स्वतंत्रता की ५०वीं वर्षगांठ और नये भारतीय उच्चायुक्त जी का स्वागत

स्वागत भाषण आर्य सभा के प्रधान श्री मूलशंकर रामधनी जी ने किया और कहा–आज हमने यहाँ पर, आर्य सभा में दो कार्यों की व्यवस्था की है । प्रथम नौजवानों का पांचवां राष्ट्रीय आर्य युवा दिवस और दूसरा भारत की स्वतंत्रता की ५०वीं वर्षगांठ । इसी मौके पर नये भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री मणिलाल त्रिपाठी जी और उन की धर्म पत्नी श्रीमती शशि त्रिपाठी जी का स्वागत ।

"हमारे बाप दादे भारत से यहाँ पधारे थे और गरीबी की अवस्था में आए थे । उनके खून और पसीने से यह देश आज हरा-भरा है । हमारे देश के प्रधान मंत्री जी के दादा भी वहीं से आए थे । आज़ाद देश में जीने के लिए हमारे पूर्वज अपने बच्चों को शिक्षा भी दे गए ।

महर्षि दयानन्द जी स्वराज्य के लिए कह गए थे । यहाँ पर पं. विष्णुदयाल आदि जनसेवा का काम करते रहे । संसार के बहुत से देशों को आज़ादी मिली पर वे उसका उपयोग ठीक ढंग से नहीं कर सके । वेद में कहा गया है कि मिल कर चलें । अतः उन्होंने नेताओं को धन्यवाद दिया, क्योंकि वे साथ-साथ चल कर काम करते हैं ।

भारत देश हमें अनेक क्षेत्रों में सहायता और सहयोग देता रहा है । अभी हाल में पं. जवाहरलाल नेहरू नामक अस्पताल का निर्माण रोस-बेल में किया गया है तो उसी भारत के सहयोग से ।

यहाँ पर महात्मा गांधी संस्थान का भी निर्माण करने में भारत का पूरा सहयोग रहा । स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने इस की शिलान्यास विधि सन् १९७० ई. में की थी और निर्माण कार्य हो जाने पर उद्घाटन करने यहाँ विराजी थीं । अभी इंदिरा गांधी कल्चरल सेंटर का निर्माण भारत के सहयोग से किया जा रहा है ।

डॉक्टर नवीनचन्द्र रामगुलाम जी ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और मधुर शब्दों में भारत देश की प्रगति की मंगल कामनाएँ प्रकट कीं और कहा- आर्य समाज के लोग बहुत ही समादर के पात्र हैं और वेदों का प्रचार करते हैं । महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति हम आभारी हैं, जिन्होंने ऐसी संस्था को कायम किया । इस सभा द्वारा धर्म का उचित प्रचार किया जाता है और हो रहा है । जवान लोग हमारे भविष्य हैं । ये लोग शक्ति के साथ कार्य करें । हमारे पूर्वजों द्वारा बताए गए कार्यों को मन लगाकर करें, ऐसी मेरी कामना है । अति खुशी की बात है कि भारत की आज़ादी की ५०वीं वर्षगांठ के शुभावसर पर आर्य युवक संघ का ५वाँ युवा-दिवस आज आप लोग मना रहे हैं । गांधी जी ने यहाँ पर आकर जागृति प्रारंभ की ।

इसके बाद आर्य सभा के मंत्री डॉक्टर उदयनारायण गंगू ने कहा कि स्व. डॉक्टर शिवसागर रामगुलाम भूतपूर्व मॉरीशस के प्रधान मंत्री इसी प्रकार आकर हमेशा हमें अच्छी-अच्छी बातें कहते थे ।

नए भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री मणिलाल त्रिपाठी जी ने कहा- आप लोगों ने इस सभा में इतना सम्मान देकर मुझे अति प्रसन्न किया । आज ५०वाँ स्वतंत्रता दिवस है, भारत का । यह अति महान दिन है । आज ही आर्य समाज के युवक गण अपनी सभा का ५वाँ युवा-दिवस मना रहे हैं ।

यह दोहरी प्रसन्नता की बात है । भारत के जन-जन और युवकों की ओर से आप लोगों का अभिनंदन करता हूँ । इस देश के सभी स्वप्न पूरे हों । यही आशा करता हूँ । हमारे देश, भारत के सभी स्वप्न पूरे तो नहीं हो पाए पर बहुत पूरे हो हुए हैं ।

भारत ने अर्थ व्यवस्था को मजबूत किया है । आपसी सद्भाव सुदृढ़ करने में हम लगे हैं । हमारी एकता को याद करके हमें गौरव हो रहा है । मॉरीशस और भारत साथ-साथ चल रहे हैं । इससे हमें बहुत खुशी हो रही है । भविष्य में आने वाली किसी भी चुनौती का सामना मिल-जुल कर करेंगे । हमारे रिश्ते और मधुर हो । इस आशा और विश्वास से अभिनंदन कर रहा हूँ ।

श्रीमती शशि त्रिपाठी जी का भी सम्मान महिला मंडल द्वारा किया गया । आप इन दिनों ज़िम्बाब्वे के भारतीय राजदूत के पद पर हैं । यहाँ पर आप अपने पति जी के साथ विराजी हैं । आप ने इस मौके पर कहा-

आज का दिन भारत के लिए एक अति महान दिन है । आज का दिन आप लोगों ने मेरा भी सम्मान किया । इससे मैं अति प्रसन्न हूँ । भारत में महिलाओं ने भी प्रगति की है । भारत हर क्षेत्र में प्रगति कर रहा है । महिलाएँ भी सभी दिशाओं में भारत की सेवा में लगी हैं । मैं भी यहाँ के युवकों के प्रति मंगल कामनाएँ पेश करती हूँ । आप अफ़्रीका से पूर्व पौलेण्ड में राजदूत थीं ।

श्री मुनीन्द्रनाथ वर्मा एम.ए. ने अनेक पुस्तकें अंग्रेजी और हिन्दी भाषाओं में लिखी हैं । इस बार उन्होंने पं. वासुदेव विष्णुदयाल एम.ए. की जनसेवा कार्यों पर गहन दृष्टी से एक पुस्तक लिखी है । मॉरीशस के प्रधान

मंत्री डॉ. नवीनचन्द्र रामगुलाम जी ने इस पुस्तक का विमोचन किया । अपने कहा पंडित जी ने जीवन भर बहुत प्रचार -कार्य किया । उन्होंने महात्मा गांधी जी, महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाप्रद बातें बतायीं और वेद, गीता, रामायण, उपनिषद् की बातें सरल रीति से जनता को समझायी । वे महान थे । उन्होंने भारत का एक अति सुंदर चित्र हमारे सामने रखा था । विमोचन के बाद मंच पर आसीन नेताओं को आपने एक-एक प्रति भेंट की ।

पोर्ट लुई नगर के महापोर जनाब महम्मद नानक ने कहा– आज यह समझने का प्रयत्न करना चाहिए कि महर्षि दयानन्द जी का जन्म भारत में क्यों हुआ था । उन्होंने ही आर्य समाज का कार्य प्रारंभ किया था वे जीवन भर सामाजिक उन्नति के लिए, जन प्रगति और एकता के लिए भी काम करते रहे । वेदों का प्रचार भी बहुत किया । समाज और राष्ट्र की आशाएँ नौजवान ही हैं । खुशी की बात है कि इनके लिए भी आर्य सभा काम करती है । यही जवान कल हमारे देश के लिए नेता बनेंगे । राजनीतिक और सामाजिक नेता भी बनेंगे । बहुत शिक्षार्थी सभा के साथ हैं । मेरे नगर की म्युनिसिपालिटी भी आप लोगों के साथ है । आर्य समाज ने भारत में और यहाँ पर स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए बहुत काम किया है ।

आर्य सभा के मंत्री डॉक्टर उदयनारायण गंगू जी ने सब कारवाही पेश करने में कमाल का कार्य किया । सभी व्यवस्थाएँ करने-कराने में आर्य सभा के तरुण मैनेजर श्री आनंद बंधन जी ने बहुत परिश्रम और त्याग किया है ।

कवि महानुभावों ने उस मौके पर भारत की शान में अपनी स्वरचित कविताओं का पाठ किया । इन कवियों में डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि, श्री

इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, कुमारी चम्पावती बुम्माजी, पं. मकुनलाल लोकमान, श्री करण कुमार आर्य और श्री हेमराज सुंदर ।

नौजवानों ने इससे पूर्व एक सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया था । इस मौके पर युवा एवं क्रीड़ा मंत्री माननीय सचिनदेव महेश कुमार सुनारायण ने नौजवानों का हौसला बढ़ाने के उद्देश्य से एक प्रभावशाली भाषण दिया और कहा कि सब प्रकार से उनका मंत्रालय सहयोग देने को तैयार है । आर्य युवक संघ के प्रधान श्री उग्रसेन देवपाल कौड़िया ने भी भाषण दिया और आर्य युवक संघ के मंत्री जी श्री राजेंद्र प्रसाद रामजी ने जवानों का कार्यक्रम अच्छी तरह से प्रस्तुत किया । अनेक बहनों ने भी भजन पेश किए और अन्य प्रोग्राम बच्चों के साथ पेश किये । वन्देमातरम् राष्ट्रगीत श्रीमती रश्मी लालबिहारी जी ने पेश किया था । झण्डागीत श्रीमती अनीता शिवगुलाम जी ने वयस्क शिष्याओं के साथ पेश किया ।

मॉरीशस के मोहित परिवार में अति हृदय विदारक दुःख

'मेरा मन बहुत दुःखी हुआ' यह वाक्य मुझे श्री मोहनलाल मोहित जी ने कहा, जिस रोज़ उनके पुत्र सुभाष चंद्र जी की मृत्यु की दूसरी शाम का यज्ञ पूरा हुआ । उस समय मैं बरामदे में उन के पास ही बैठा था और उनके एक पाँव के ऊपरी भाग पर अपना हाथ रखा हुआ था ।

जिस समय लाश घर में पड़ी थी, इस शोक समाचार, आर्य सभा के खजांची श्री राज सोब्रन ने फ़ोन द्वारा मुझे दिया था। मोहित परिवार से मेरी पत्नी सावित्री का सम्बन्ध है। जब हम मृत्यु-स्थल पर पहुँचे तो घर, द्वार और आँगन जन-समुदाय से भरे थे। श्री मोहनलाल मोहित जी बेंच पर शोकातुर बैठे थे। निधन तारीख १० सितंबर सन् १९९७ ई. में हुआ था।

आर्य सभा और अनेक संस्थाओं के नेतागण, विधान-सभा के सदस्य वा राजनैतिक नेता भी आते-जाते दिखाई देते थे। बहुत संख्या में लोग अर्थी उठाने के समय पर शोकातुर अवस्था में वहीं पर थे। अंदर में जहाँ पर मृतक की लाश पड़ी थी, पंडित-पंडिताएँ मन्त्रों का उच्चारण कर रहे थे।

आर्य सभा के प्रधान श्री मूलशंकर रामधनी जी ने शोकातुर हो कहा- 'यह घटना अति दुःखद है। हम अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट कर रहे हैं। हमारा धर्म यही कहता है कि हम धीरज धारण करें। कारण कि आत्मा अमर है। जन्म होता है तो मृत्यु भी अवश्य होगी। पर भरी जवानी में चला जाना एक भारी धक्का है। जब मृतात्मा सुभाष चंद्र भारत में पढ़ते थे तो एक सम्मेलन का आयोजन किया गया था। उसमें सुभाष चंद्र आर्य सभा मॉरीशस के प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए थे। इससे प्रकट होता है कि वे अपने पिता की तरह आर्य सभा से कितने जुड़े थे। हम सब मिल कर प्रार्थना करें कि भगवान मोहित परिवार को धीरज प्रदान करे। सारा देश इस परिवार के साथ है। इस देश के अनेक नेता और राष्ट्रपति जी भी अपनी संवेदना प्रकट करने आए थे।

श्री सुभाष चंद्र जी ने बंबई नगर के आर्य नेता श्री भगवती प्रसाद गुप्ता जी की सुपुत्री वेदव्रती जी से विवाह २९-१२-९४ में किया था। इस

परिवार के तीन बच्चे हैं । वे अभी अध्ययन में लगे हैं । सुभाष जी की अवस्था ५४ वर्ष की थी ।

पर इससे पूर्व जसकरण मोहित जी श्री मोहनलाल मोहित जी के भाई का देहांत गत २१ जुलाई को हुआ था । ये आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान थे और 'आर्योदय' पत्रिका के संपादक भी थे, अंग्रेज़ी और फ्रेंच भाषाओं के वे विद्वान थे । सरकारी स्कूलों में वे अध्यापक के बाद मुख्य अध्यापक के रूप में कार्यरत थे । उम्र ८५ वर्ष की थी । पेन्शन ले चुके थे । 'आर्योदय' पत्रिका के अंग्रेज़ी और फ्रेंच भाग का संपादन करते थे । उन की मृत्यु के दुःखद अवसर पर बड़े भाई श्री मोहनलाल जी ने कहा था कि इन्होंने जीवन भर पारिवारिक और सामाजिक कार्यों में मुझे सहयोग दिया था, अंतिम समय तक ।

श्री जसकरण जी नैरोबी, दक्षिण अफ़्रीका और भारत आर्य सम्मेलनों में अपने बड़े भाई के साथ गए थे वहाँ भाषण भी दिये थे । अनेक सत्रों में बैठ कर बहुमूल्य विचार देते थे । आर्य सभा मॉरीशस के उप-मन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम ने कहा था कि श्री यणकरण जी के अधिकतर लेख ऐतिहासिक होते थे । इनके विवाह की याद में आर्य सभा मॉरीशस ने गत १२ सितंबर को एक श्रद्धांजलि विशेषांक निकाला था । इस में उनकी जीवनी और कार्रवाहियों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है । स्व. जसकरण जी के करीब एक दर्जन लेख अंग्रेज़ी भाषा में छपे हैं जो ऐतिहासिक हैं । आर्य सभा के प्रधान श्री मूलशंकर रामधनी जी, मंत्री डॉ. उदयनारायण गंगू जी, उपमंत्री श्री सत्यदेव प्रीतम जी, श्री बालचन्द चतुर जी, श्री उग्रसेन देवपाल कौड़िया जी, श्री करण कुमार आर्य जी, आप भारत से पधारे हैं । श्री प्रेमपाल

चमन जी, श्री सुखराज बिसेसर जी, श्रीमती उषा सुमन मूरत जी की रचनाएँ हैं ।

अनेक चित्र श्री जसकरण जी के छापे हैं । मॉरीशस के प्रधान मंत्री डॉक्टर नवीनचन्द्र रामगुलाम जी का चित्र उन्हें सम्मानित करते हुए हम ने देखा । श्री जसकरण जी ने हाल में आर्य सभा को 'एक लाख' रुपया निधि के रूप में सामाजिक कार्य करने के लिए दिया है । इस के ब्याज से बहुत काम होगा । इन की अब दो बेटियाँ हैं । शनिवार ता. १३ सितंबर को आर्य सभा में इनकी याद में श्रद्धांजलि सभा लगाई गई थी ।

गत वर्ष १६ जुलाई को श्री मोहनलाल जी का धर्म पत्नी जी का भी देहांत हुआ था । इन पंक्तियों के लेखक का एक संवेदना लेख गत वर्ष के ८ सितंबर के अंक में सार्वदेशिक साप्ताहिक में नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ था ।

शनिवार १३ सितंबर के आर्य सभा के उपदेशक मंडल में इन्हें श्रद्धांजलि समर्पित की गई थी । हमारी भी संवेदना दुःखी परिवार-जनों के प्रति है । श्री मोहनलाल मोहित जी की उम्र ९५ वर्षों की है । श्री मोहनलाल मोहित जी नई दिल्ली में स्थित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि के रूप में आर्य सभा मॉरीशस की अन्तरंग कमेटी में बैठते हैं । आप आर्य रत्न, आर्य भूषण और ओ.बी.ई. हैं । साथ ही मॉरीशस आर्य सभा के भी नेता हैं । आप के सुपुत्र श्री राजेन्द्र मोहित जी आर्य सभा के कोषाध्यक्ष हैं ।

मॉरीशस में सत्यार्थ प्रकाश के १०० वर्ष

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के लिखित ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के आगमन की १००वीं वर्षगाँठ के शुभावसर पर धूमधाम से एक त्रिदिवसीय कार्यक्रम आर्य सभा द्वारा क्युर्पीप के निर्धिन भवन में सन् १९९८ मार्च के मास के अन्त में मनाया गया था ।

तीन दिनों तक आर्य सभा के पुरोहितों द्वारा महा यज्ञ किया गया था । मुख्य पंडित थे, पं. प्रयाग बिका वाचस्पति, पं. देवकीननन गोबिन शास्त्री, पं. शतीश बितुला शास्त्री, पं. सुरेश बद्री, पंडिता कौशल्या लक्ष्मण आदि । हर दिन के यज्ञ के लिए अलग-अलग से विशिष्ट यजमान बिठाए गए थे । मुख्य यजमान अपनी पत्नी के साथ हर रोज़ यज्ञ में उपस्थित हुए थे । यज्ञ के बाद भजनों और प्रवचनों के कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए थे ।

प्रथम दिन आर्य सभा के भूतपूर्व मंत्री श्री सत्यदेव प्रीतम के प्रधानत्व में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ था । द्वितीय दिन आर्य सभा-महिला-मंडल का कार्यक्रम श्रीमती द्रौपदी किन्नू के प्रधानत्व में और अंतिम दिन का कार्यक्रम आर्य सभा के प्रधान श्री मूलशंकर रामधनी के प्रधानत्व में संपन्न हुआ था । आर्य सभा द्वारा यहाँ आयोजित नगर कीर्तन प्रभावशाली था । क्युर्पीप नगर में यह शानदार कार्यक्रम था । यहाँ की म्युनिसिपालिटी का बहुत सहयोग आर्य समाज को मिला था । नगरपालिका के अधिकारी महानुभावों ने सत्यार्थ प्रकाश आगमनोत्सव की आयोजक-कमिटी के प्रधान श्री उग्रसेन देवपाल कौड़िया ने कहा कि जब किसी प्रकार के सहयोग की ज़रूरत आर्य समाज

को पड़ेगी तो ज़रूर अनुरोध करें और वे सहयोग देने उचित कदम उठाएँगे। आयोजक-कमिटी के मंत्री श्री राजेश्वर नुनाराम जी हैं। इतने लोगों की इस भवन में जल-पान और खान-पान की व्यवस्था की गई थी। इस काम में बहनों ने पूरा सहयोग दिया था।

जुलूस में करीब ३,००० लोग थे, जिनमें नर-नारी और बच्चे सारे टापू के कोने-कोने से आये थे। आर्य सभा की टापू में ४५५ शाखाएँ हैं। इन में आर्य महिला मंडल की अध्यक्षा हैं श्रीमती धनवन्ती रामचरण, श्रीमती विद्यावती कस्यान और आर्य युवक-संघ के प्रधान श्री उग्रसेन देवपाल कौड़िया हैं, मंत्री श्री राजेन्द्रप्रसाद रामजी।

स्थानीय दूरदर्शन एवं रेडियो पर एक मास तक अनेक कार्यक्रम पेश किए गए थे। 'आर्योदय' पत्र पर हमारे टापू के लेखक श्री प्रह्लाद रामशरण ने और अन्य लेखकों ने सत्यार्थ प्रकाश पर अनेक लेख लिखे। पण्डिताओं ने गाँव-गाँव और समाज-समाज में जाकर सत्यार्थ प्रकाश के आगमन के संबंध में जनता को बताया और आर्य समाज की कार्रवाहियों पर भी प्रकाश डाला।

क्युर्पीप में हुए नगर-कीर्तन में मॉरीशस के उप-प्रधान मंत्री माननीय श्री राजकेश्वर प्रयाग, भारतीय उच्चायुक्त श्री मणिलाल त्रिपाठी, आर्य सभा के प्रधान श्री मूलशंकर रामधनी ने भी भाग लिया। क्युर्पीप नगरपालिका द्वारा बनाये गये "फ़ोरम" में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ था, जिस के लिए हम नगरपालिका के प्रति आभारी हैं।

यह सांस्कृतिक कार्यक्रम आर्य सभा के प्रधान श्री मूलशंकर रामधनी की अध्यक्षता में किया गया था। उस मौके पर आर्य जगत के स्थानीय नेता

वयोवृद्ध श्री मोहनलाल मोहित जी भी उपस्थित थे । आप मंच पर अनेक आगंतुक राजनीतिक नेताओं के साथ आसीन थे । आर्य सभा के मंत्री डॉ. उदयनारायण गंगू ने श्री मोहित जी की आर्य जगत को दी गई सेवाओं का बखान किया ।

मॉरीशस के उप-प्रधान मंत्री माननीय श्री राजकेश्वर प्रयाग ने अपने भाषण में कहा कि "आज हम गर्व के साथ मॉरीशस में सत्यार्थ प्रकाश के आगमन की शताब्दी मना रहे हैं । पर आप लोगों को यह ध्यान से जानना चाहिए कि इस ग्रन्थ में क्या-क्या हैं ? जब यह पुस्तक यहाँ पर आई थी तो हमारे पूर्वजों का जीवन अति दयनीय था । वे भारी कठिनाई में थे । इस ग्रंथ को पढ़-पढ़ कर लोग समाज में सुधार लाए । आज भी हमें वैसा मूल्यवान काम मिल-जुल कर दोहराना चाहिए । हमारे बीच में जो समस्याएँ हैं, इन पर विचार भी करना चाहिए । साथ ही क्या कमी है, उसे दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए । हमें एक दूसरे पर पूरा विश्वास करना चाहिए । यह कार्य आप लोगों के लिए आसान है, क्योंकि आप की शाखाएँ सर्वत्र हैं । आज भी सुधार कार्य आवश्यक है, ताकि जो नौजवान भटक कर कहीं और जा रहे हैं, हम उन्हें अपने पास ला सकें ।

भारतीय आयुक्त श्री मणिलाल त्रिपाठी ने सत्यार्थ प्रकाश के आगमन का इतिहास सुनाते समय कहा कि "इस अवसर पर आप लोगों ने मुझे आमंत्रण दिया है । इस के लिए मैं बहुत आभारी हूँ । महर्षि दयानन्द के विचार हमारी संस्कृति को बढ़ाने में मदद देते हैं । सामाजिक बुराइयों को दूर करने में भी उनसे मदद मिलती है । सौ वर्ष पहले कुछ भारतीय सिपाही यहाँ पर आए थे । इन में कुछ प्रतिभाशाली लोग भी थे । जब सन् १८९८

में वे जाने लगे थे तो सत्यार्थ प्रकाश यहाँ पर छोड़ गए थे । यहीं से मॉरीशस में आर्य समाज का इतिहास शुरू होता है । शोषित, पराधीन जन समुदाय में जागरण आने लगा । खेमलाल लाला, दलजीत लाल, डॉ. भारद्वाज, पं. काशीनाथ किष्टो, पं. गयासिंह, श्री मोहनलाल मोहित जैसे सामाजिक कार्यकर्ताओं को हमेशा स्मरण करना चाहिए, जिन्होंने यहाँ जागरण लाने में कोई कसर न छोड़ी । आज की इस खुशी के मौके पर ईश्वर से यही मेरी प्रार्थना है ।"

क्युर्पीप नगरपालिका के महा पौर श्री ज़ोर्ज़ मोएर ने कहा कि "यह स्थान आप ही लोगों के लिए है । सत्यार्थ प्रकाश के आगमन की १००वीं वर्षगाँठ के मौके पर आप लोगों को इतनी भारी संख्या में देख कर गौरव हो रहा है । आप लोग तीन दिनों से इस नगर में प्रार्थना कर रहे हैं । इस से हमें और आनंन्द हो रहा है । श्री मोहनलाल मोहित को उन के सामाजिक कार्यों के लिए मैं भी बधाई देता हूँ, आप के माध्यम से आर्य समाज ने बहुत कार्य किया है और करते आ रहा है ।" शिक्षा की दिशा में भी आप लोगों ने प्रभावशाली कार्य किया और कर रहे हैं, जो स्वयं में स्तुत्य है ।

श्रीमती मधु गजाधर विवाह करके भारत से मॉरीशस आई हैं । आप ने कहा कि "मैं विदुषी नहीं हूँ । मैं साधारण महिला हूँ । जिस देश से मैं यहाँ आई हूँ, वहाँ पर एक संस्कृति है । मेरा यहाँ पर आकर खड़ा होना एक साधारण बात नहीं है । यदि हम घर की चहार दीवारी से निकल कर आई हैं तो यह महर्षि दयानन्द की दी गई शिक्षा का फल है । एक समय था जब कि महिलाओं को घर में बंद कर दिया गया था । नारियों से बहुत भेदभाव और शोषण किया गया । पर आज हम ने प्रगति का लंबा रास्ता तय किया

है । पर एक समय सती प्रथा थी । सती प्रथा में खुद मेरी माँ के परिवार में एक महिला को गुज़रना पड़ा था । उन के पति की मृत्यु हो गई थी और उसे अंधविश्वास के कारण सती बनना पड़ा था । जिन्होंने नारियों का उद्धार किया, हम उन्हें कैसे भूल सकती हैं । आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने हमारी आँखें खोलीं । वे महान थे । घर को सम्भालने वाली नारी है, यह उन्होंने बताया । नारी ही माँ है, माँ के रूप में वह बच्चों में सुसंस्कार भर देती है और उन्हें सभ्य बनाती है ।

प्रोफ़ेसर राम प्रकाश एम.ए. ने नवीन हिन्दी में लिखा है कि "माँ की गोद बच्चों के लिए विश्वविद्यालय होती है ।" अन्त में कहा कि आइए मिल-जुल कर महर्षि दयानन्द के विचारों को हम सदा अपनाएँ । धर्म की राह पर चलें ।

आर्य सभा के प्रधान श्री मूलशंकर रामधनी ने कहा आप की लगन और उत्साह देखकर हमें बड़ी खुशी हो रही है । महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की और सत्यार्थ प्रकाश की रचना की । इन दोनों महान कार्यों को करके उन्होंने असाधारण कार्य किया है । उन का मंतव्य रहा है कि दुनिया में जितने भी लोग हैं, उन्हें पवित्र बनाना, आर्य बनाना । संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है । जो अन्याय सह रहे हैं, जो धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं, उन को हमें बचाकर श्रेष्ठ बनाना चाहिए । स्वामी दयानन्द ने माता-बहनों को भी शिक्षा देने की हमें प्रेरणा दी है । इस काम को हमें सदा करते रहना चाहिए । हमें वेदों को आधार मानकर सुधार-कार्य करते रहना चाहिए ।

भारत के आन्ध्र प्रदेश राज्य से पधारे हुए डॉ. हरीशचन्द्र जी ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश से हमें समाज में सत्यता लानी चाहिए । महर्षि दयानन्द को सब कुछ पढ़ने और देखने के बाद सत्यता मिली थी । डॉ. हरीशचन्द्र ने कहा कि मेरी जानकारी में ऐसे भी व्यक्ति हुए हैं जो १८ बार इस महान ग्रंथ को पढ़ चुके हैं । आप ने भारत के क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन की घटनाएँ भी सुनाई थीं । यही नहीं, आप ने यह भी बताया कि सत्यार्थ प्रकाश संसार के जिस भाग में गया है, वहाँ पर क्रांति आई है । महर्षि दयानन्द ने हम सब को जागृत किया है । उन्होंने वेदों का यथार्थ रूप में अध्ययन किया । वेदों में हम सब के लिए एकता का संदेश है । उस में बताया गया है कि मानव को फूट से लाभ नहीं होता है ।

आर्य सभा के वयोवृद्ध पंडित भरत कौड़िया जी की जीवनी, और सेवा भावना के बारे में स्थानीय आर्य समाज के अध्यक्ष श्री विष्णुदेव बिदेशी ने कहा कि उन को वहीं सभा ने सम्मानित किया है । उल्लेखनीय है सब का भोजन और शर्बत से सत्कार किया गया था । श्रद्धालु लोगों ने बहुत प्रेम और मैत्री के साथ बैठकर भोजन ग्रहण किया । आर्य सभा के मंत्री डॉ. उदयनारायण गंगू ने कार्य-संचालन को प्रभावशाली रूप में किया था । आर्य सभा के मैनेजर श्री आनंद बंधन ने सभी उचित व्यवस्था की थी । और, श्री सुबिराज सोब्रन से उन्हें पूरा सहयोग मिला । आयोजक कमिटी के प्रधान श्री उग्रसेन देवपाल कौड़िया थे ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

शनिवार की शाम में सांस्कृतिक कार्यक्रम श्री चंद्रमणि रामधनी के प्रधानत्व में संपन्न हुआ था । मंत्री थे श्री सत्यदेव प्रीतम । उस मौके पर

आर्य सभा के पंडित सतीश बितुला शास्त्री, ओ.बी.ई., ने यज्ञ की व्याख्या करते समय कहा, मनुष्य की आत्मा पवित्र है । हमें सत्य और असत्य में भेद करने की योग्यता प्राप्त करनी चाहिए । विद्या और अविद्या के भेद की तार्किक भाव से व्याख्या की । सत्यार्थ प्रकाश के नवें सम्मुलास पर आप ने जन समुदाय के लिए अच्छा प्रकाश डाला । आप ने अन्त में कहा कि सत्य के आधार पर हमें जीवन ले चलना चाहिए ।"

"ओ३म सूर्य ज्योति" का तात्पर्य हमें बताकर कहा कि यदि इसी प्रकार से किसी चीज़ से हम काम लेंगे तो हमें बहुत लाभ होगा । प्रातःकाल में सवेरे उठने से मानव को कैसा लाभ होता है, उन्होंने यह बताया । फिर कहा कि सवेरे धरती पर नंगे पाँव चलने से और ठंडी वायु का सेवन करने से मनुष्य मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहता है । आप ने इस बात के लिए दुख प्रगट किया कि आज-कल बहुत से ऐसे लोग हैं जो प्रातःकाल जूते पैरों में डाल लेते हैं और केवल शाम या रात को भोजन के समय जूते निकालते हैं । दूरदर्शन देखने के बाद आज बस सोने के लिए लोग पलंग पर चढ़ जाते हैं । परिवारों के साथ में बैठ कर खाना खाने और बातचीत करने की आदत जाती रही है ।

हमारी ओर, यज्ञ में जिस सामग्री का प्रयोग किया जाता है, यह नहीं देखा जाता कि विद्वानों और पुस्तकों के कहे गए विचारों के अनुसार उस सामग्री की तैयारी हुई या नहीं । शुद्ध सामग्री यज्ञ में इस्तेमाल करने से बहुत लाभ होता । वेद ज्ञान का भंडार है । इस का मन लगाकर पठन-पाठन करने से जीवन का सच्चा मूल्य मालूम होता है ।

आर्य महिला मंडल द्वारा एक सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया गया था । श्रीमती द्रौपदी किन्नू ने सब का स्वागत किया था । फिर श्रीमती र. पुचवा ने बारी-बारी से सब को पेश किया था । श्रीमती चन्द्रानी बखोरी, श्रीमती धनवन्ती रामचरण, पंडिता सत्यवती पेलाडुवा ने नारियों के ऊपर किये जा रहे अत्याचारों पर प्रकाश डाला ।

यह सर्वविदित है कि आरम्भ में लड़कियों की शिक्षा के लिए आर्य समाज ने कन्या पाठशालाएँ सर्वत्र खोली थीं । कारण कि माँ बच्चों की शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । कारण कि नारियाँ पढ़ने में पीछे नहीं हैं । बच्चे माँ-बाप से बहुत कुछ सीखते हैं । इसीलिए परिवार का शिक्षित होना परम आवश्यक है । पंडिता कौशल्या लक्ष्मण ने सुंदर रूप में प्रार्थना की और श्रीमती सीता रामयाद ने अंत में सब को धन्यवाद किया । बहनों ने शांति-पाठ के साथ कार्य की समाप्ति की । तीन दिनों तक मिलकर रहने में सब को बहुत अच्छा लगा । इस समाज के मंत्री श्री देवराज हारूजी हैं । उसी मौके पर विद्वानों और विदुषियों ने आर्य समाज के शिक्षा-कला-कौशल के कार्यों पर भी बहुत सारगर्भित विचार व्यक्त किया । स्मरणीय है कि ६० वर्ष पूर्व भगीरथी- भाइयों और शिवगोविन्द-भाइयों के सहयोग से आर्य समाज का यह कार्य शुरू किया गया था । पं. नंदलाल, श्री दर्शन बोनोमाली, रोज़ हिल के श्री रामधन पूरण, रिव्येर-दे-जांगी के श्री मोती मास्टर, पं. महावीर किन्नू, पं. शिवलगन बहोरण, श्री कृष्ण घूरा, माहेबर्ग के पं. यशकरण शाहज़ादा, मोताँई ब्लाँश के पं. भोला आदि महानुभावों ने आर्य नेताओं के साथ मिल कर गाँवों में भी बहुत कार्य किया था । आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व मंत्री श्री राम सुभग गोबर्धन हमें ये सब बातें सुना रहे थे । हाल में आप

ने आर्य जगत के लिए एक सुंदर पुस्तक प्रकाशित की है, जो पठनीय है । याद रहे कि यदि सन् १८९८ में सत्यार्थ प्रकाश का आगमन, हवलदार श्री भोलाराम तिवारी द्वारा नहीं हुआ होता तो आर्य समाज का कार्य मालूम नहीं कब प्रारंभ होता । गत वर्ष से आर्य सभा सत्यार्थ प्रकाश आगमन मना रही है । मैं ने उसके सभी उत्सवों में अपनी सत्यार्थ प्रकाश पर सब रचित कविताएँ पढ़ी थीं ।

मॉरीशस प्रसारण केंद्र द्वारा हिन्दी भाषा का प्रचार

यहाँ पर पारिवारिक रूप में बो-बासें नगर में एक लघु प्रसारण केंद्र स्थापित किया गया था । उस समय में हिन्दी में कार्यक्रम नहीं किया जाता था, लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के समय जनता को युद्ध-स्थिति का समाचार देने के विचार से हिन्दी भाषा में ५ मिनट का समाचार दैनिक प्रसारित किया जाता था । सर्वप्रथम हिन्दी प्रसारक श्री प्रसाद रीटू अपने पाँच मिनट के हिन्दी-कार्यक्रम के कारण मॉरीशस के रेडियो-इतिहास में आ गए । कालांतर में पंडित रामलगन शर्मा शिवगोबिन्द भी अनुवादक (अंग्रेज़ी-हिन्दी) के रूप में नियुक्त हुए और वह भी प्रसारण कार्य में लग गए ।

धीरे-धीरे जब मॉरीशस का प्रसारण केंन्द्र फोरेस्त साईड आया तो हिन्दी भाषा में अधिक समाचार दिए जाने लगे और बाद में फिल्मी गीत भी

आने लगे । दिवाली, होली, संक्रान्ति आदि उत्सवों में हिन्दी में वार्त्ताएँ आने लगीं । जब सन् १९५० में श्री श्रवणसिंह और उमाशंकर गिरजानन्द ने इस कार्य में प्रवेश किया तो और अधिक वार्त्ताएँ हिन्दी में होने लगीं । सन् १९५२ से गीतों भरी कहानियाँ और नाटिकाएँ भी वहाँ प्रसारित होने लगीं । सुंदर-सुंदर फिल्मी गीतों को और कहानियों को सुनने के लिए लोग अधिकाधिक संख्या में कार्यक्रम पसंद करने लगे ।

प्रारंभिक दिनों में सन् ५० के दशक में श्री जयनारायण राय, पं. श्रीनिवास जगदत्त और डॉ. लक्ष्मीप्रसाद रामयाद, मुंशी प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि पर कार्यक्रम किया करते थे । इन सब से हमारे प्रसारण-केंद्र द्वारा हमारी भाषा के भी प्रचार-प्रसार में बल मिलता रहा । तायाक, रिव्येर-दे-जांगी के श्री फ़्रांस और सें-पोल गाँव के श्री ज़ोज़े मिनेर्व प्रसारित फिल्मी गीतों का अभ्यास करते थे और हिन्दी गीत गाते भी थे । श्री मिनेर्व को बाद में स्थानीय कवियों के रचे हुए गीत गाने का मौका भी मिला । काँजाब के श्री मणिलाल ने रेडियो द्वारा प्रसारित सहगल के गीत सुन-सुन कर अभ्यास किया और शादी व कथा के अवसर पर पंडाल में वह वे गीत गाया करते थे । सहगल के गीत वह हूबहू गाते थे और कभी-कभी तो उनकी आँखों से उनके आँसू टपक पड़ते थे । गीत सुनने वाले लोग उन्हें शबाशी दिया करते थे । दुर्भाग्यवश जीवन के अन्तिम दिनों में वह अंधे हो गये और अंत में बोबासें के नैनहीनों के आश्रम में प्रवेश किया । सन् १९६५ से मॉरीशस में दूरदर्शन का प्रसारण शुरू हो गया । सप्ताह में केवल एक दिन ३० मिनट के कार्यक्रम में प्रसारण प्रारंभ हुआ था । आज हर रोज़ हिन्दी सीरियल प्रसारित होता है । सप्ताह में ७-८ हिन्दी फ़िल्में भी प्रसारित

होती हैं । स्थानीय नाटक भी कभी-कभी रेडियो और टेलीविजन में प्रसारित होते हैं । आर्य समाज, आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा, कबीर संस्थान, रामकृष्ण मिशन, सनातन धर्म टेम्पल्स फ़ेडेरेशन, सनातन धर्म मंदिर परिषद आदि संस्थाओं द्वारा धार्मिक कार्यक्रम प्रसारित होते हैं । हिन्दी लेखक संघ, हिन्दी प्रचारिणी सभा द्वारा भी कभी-कभी साहित्यिक कार्यक्रम होते आते हैं । कभी हिन्दी परिषद साहित्यिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती थी । इस के अलावा ह्युमन सर्विस ट्रस्ट द्वारा भी कार्यक्रम हिन्दी में होते रहे हैं । रामायण, महाभारत, श्रीकृष्ण जैसे धार्मिक धारावाहिक भी प्रस्तुत हुए ।

इस से पता चलता है कि मॉरीशस के प्रसारण केंद्र में हिन्दी भाषा और संस्कृति का अच्छा प्रचार-प्रसार होता है ।

खून दान, महा दान

रविवार ता. १ मार्च सन् १९९८ ई. को बोनाकेई प्रांत के नौजवानों ने खून दान किया था । उनकी संख्या पचास से अधिक थी । मरीज़ों के स्वास्थ्य लाभ को दृष्टि में रख कर ऐसा दान किया गया । निस्वार्थ सेवा से ऐसा महान तथा पवित्र कार्य नौजवानों ने किया ।

अतः बोनाकेई गाँव में, आशा है कि ऐसा कार्य भविष्य में और स्थानों में होगा । उल्लेखनीय है कि सामाजिक सुरक्षा मंत्री माननीय सरत लाला भी वहाँ पधारे थे, जिसके लिए हम उन्हें धन्यवाद देते हैं ।

श्री आनंद बंधन वहाँ के आर्य समाज के प्रधान और आर्य सभा के मैनेजर हैं । अपने गाँव के नौजवानों के साथ नेक काम करते हैं । और, आप आर्य सभा के मैनेजर की हैसियत से भी सारे देश की जनता से प्रेम से रहते हैं । जो भी आर्य भवन में आते हैं, उन्हें आप सहयोग प्रदान करते हैं । इसके अलावा आप का संपर्क अनेक देशों के धार्मिक नेताओं से भी होता रहता है ।

इस क्लब के मंत्री श्री सनतकुमार कौलेशर और कोषाध्यक्ष सुरेश ओकाजन हैं ।

इस कार्य में स्वास्थ्य मन्त्रालय के कनिष्ठ मंत्री विष्णु बंधन जी भी उपस्थित थे । इस मंत्रालय के कार्यकर्ताओं ने प्रेम से इस कार्य में हाथ बँटाया था । वे सब के सब धन्यवाद के पात्र हैं । उन्होंने वड़ी श्रद्धा से सब की सेवा की ।

ऐसे कार्यो से हमारे देश के नौजवानों में एकता, भाईचारे की तथा सहयोग की भावना जागृत होती है । नौजवानों की ओर से राष्ट्रनिर्माण की दिशा में एक कारगर कदम है । इन ऐसे ही नौजवानों के पूर्वजों के सहयोग से डॉ. शिवसागर रामगुलाम ने मोरिशस को स्वतंत्र कराया था ।

आर्य भवन में
दो भारतीय कवियों का शानदार स्वागत

शनिवार ता. १२ जुलाई को दिवसकाल में आर्य महिला मंडल ने सत्यार्थ प्रकाश आगमन के संदर्भ में और श्रावणी उपाकर्म समारोह के शुभावसर पर आर्य महिला समाज ने एक शानदार उत्सव आर्य भवन, पोर्ट लुई में किया था ।

स्थानापन्न प्रधान मंत्री माननीय राजकेश्वर प्रयाग, नारी कल्याण एवं बाल विकास मंत्री माननीय सावित्री ठाकुर सिदाया, सभा प्रधान श्री मूलशंकर रामधनी, डॉ. उदयनारायण गंगू, श्रीमती धनवन्ती रामचरण, श्रीमती रेशमी लालबिहारी आदि के जोशीले भाषण, आर्य समाज के कार्यों और सत्यार्थ प्रकाश के आगमन पर हुए । नारियों की कठिनाइयों पर भी प्रकाश डाला गया । शिक्षा को भी अछूता न छोड़ा गया ।

प्रयाग जी ने मार्के की बात यह भी कही कि वे अति प्रसन्न होते हैं, जब लोगों को अपनी मातृ भाषा भोजपुरी और हिन्दी भाषा में बातें करते देखते हैं ।

"हिन्दी लेखक संघ" द्वारा आयोजित स्वागत कार्यक्रम दो महान साहित्यकारों के लिए हुआ था । वे थे भारतीय साहित्यकार श्रीमती गगन गिल जी और श्री मंगलेश दब्राल । आप लोगों ने खुल कर अपनी-अपनी कविताएँ सुनाईं । वे भारत के जाने-माने पत्रकार और लेखक भी हैं ।

लेखक संघ की ओर से श्रीमती सीता रामयाद ने और कुमारी चम्पावती बुम्मा ने फूलों के गुच्छे पेश किए थे । हिन्दी लेखक संघ के मान्य प्रधान डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि ने उन साहित्यकारों का परिचय दिया और उन की साहित्य साधना पर प्रकाश डाला । जल-पान-व्यवस्था में भी वे प्रसन्नता के साथ शामिल हुए थे । कुमारी अनुपमा चमन सर्वत्र कला एवं संस्कृति मंत्रालय की ओर से उन के साथ जाती हैं और मंत्रालय द्वारा तैयार योजनाओं के आधार पर कार्रवाही करती हैं । आप विगत वर्ष आर्य सभा में पंडित और पंडिताओं को संस्कृत का शिक्षण उसी भाषा के माध्यम से देती रहीं ।

जल पान व्यवस्थाओं में हमारे मंत्री माननीय श्री सान मान किंग, मंत्रालय के ओहदेदार श्री. ओ.के. देबिदिन और श्री ग. सुभाष आदि महानुभावों से मिलने और बातें करने का शुभ अवसर प्राप्त होता रहता था ।

भारतीय उच्चायोग, हिन्दी संगठन और कला एवं संस्कृति मंत्रालय के सहयोग और सौजन्य से भारतीय कवि गण मॉरीशस पधारे थे । डॉ. एम. चिन्तामणि हिन्दी लेखक संघ के मान्य प्रधान और हिन्दी संगठन के प्रधान हैं । हिन्दी संगठन की कमिटी की बैठक प्रति मास भारतीय उच्चायोग राजधानी में लगती है । आर्य भवन में भारतीय उच्चायोग के प्रतिनिधि गण पधारे थे और हमेशा विराजते हैं ।

भारतीय उच्चायोग का अच्छा सहयोग हमेशा से मॉरीशस की संस्थाओं को मिलता है, जो सराहनीय है । हम उस के प्रति आभारी हैं ।

गत वर्ष हिन्दी लेखक संघ द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र, कात्र बोर्न में किया गया था । उस मौके पर भारतीय उच्चायुक्त श्री मणिलाल त्रिपाठी जी का स्वागत किया गया था । यह कहना उचित होगा कि केंद्र के निर्देशक डॉ. अमरेन्द्र मिश्र और भारतीय उच्चायोग के श्री नवल किशोर शर्मा से हमेशा सहयोग प्राप्त होता है ।

विभिन्न समितियाँ

वेद प्रचार समिति

वेद प्रचार समिति वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की देश के कोने-कोने में व्यवस्था करती है । नए प्रतिनिधियों पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाता है । इस के बाद उन्हें वेद-प्रचार समिति के सदस्य-सदस्याएँ बनाया जाता है ।

समिति का गठन निम्न प्रकार रहा

प्रधान : श्री सत्यदेव प्रीतम ओ.एस.के.

उपप्रधान : पं. राजमन रामसाहा

सदस्य : आचार्य दीपक आर्य, श्री सन्तोष जगरनाथ, श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण एम.एस.के., श्री धनीलाल लूट, श्री केशवदत्त चिंतामणि, श्री विष्णुदेव बिसेसर, श्री कृष्णदत्त रामचर्ण, श्री मूलशंकर रामधनी, एम.बी.ई. श्री जगदीश मकुनलाल,

श्री चन्द्रदत्त प्रभु, श्री चन्द्रमणि रामधनी, एम.बी.ई., सभा प्रधान
श्री जसकरण मोहित - एक्स ओफ़िस्यो मेम्बर ।

गतिविधियाँ निम्न प्रकार रहीं

१. समय-समय पर परिषदों के अधिकारियों के साथ जुटाव करके पर्वों को मनाने की व्यवस्था आदि पर विचार-विनिमय होता है और साथ-साथ शाखा-समाजों के आयोजित प्रवचनों, महायज्ञों आदि पर सहयोग भी दिया जाता है ।

२. संध्या करने का प्रचार हर आर्य परिवार एवं अन्य भाई-बहनों के गृहों पर किया जाता है ।

३. पंडित राजमन रामसाहा, पंडित धर्मेन्द्र रिकाई, पंडित माणिकचन्द बुधु, आचार्य दीपक आर्य, पंडित सतीश बितुला शास्त्री, आर्य सभा के पंडित-पंडिताओं और अनेक विद्वान-विदुषियों द्वारा शाखा-समाजों में और अनेक परिवारों में और अन्य स्थानों में वेदों पर प्रवचन किये जाते हैं ।

विद्या समिति

इस समिति द्वारा देश भर के आर्य समाजों की हिन्दी पाठशालाओं की गतिविधियों का संचालन किया जाता है । शिक्षण, निरीक्षण तथा परीक्षा के कार्यों का आयोजन आर्य सभा की विद्या समिति ही करती है । विद्या के प्रचार-प्रसार का पूरा प्रबन्ध इसी समिति के माध्यम से किया जाता है ।

सन् १९९६ में विद्या-समिति का गठन निम्न प्रकार था :-

प्रधान : श्री सत्यदेव प्रीतम, ओ.एस.के.
उपप्रधान : श्री शीतलप्रसाद प्रोआग, आर्य भूषण
मन्त्री : श्री सुग्रीम दलीप

उपमन्त्री : श्री जयपति पुनीत

कोषाध्यक्ष : श्रीमती राजकुमारी बिलट

सदस्य : श्री मूलशंकर रामधनी एम.बी.ई., आर्य भूषण, श्री प्रेमदत्त फ़ागू, श्री देवदत्त देबिया, श्री ज्ञान धनुकचन्द, श्री नारायणदत्त भवन, श्री महादेव रितू, श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, श्री मोनन्जय चमन, श्रीमती विद्यावती कास्यान और सभा प्रधान श्री जसकरण मोहित आर्य भूषण - एक्स ओफ़िस्यो मेम्बर ।

१. इस समिति की बैठक प्रति मास होती है और यदि आवश्यक कार्य पड़ जाता है, तो मास में दो-तीन बैठकें भी होती हैं ।

२. इस समिति के मार्ग-दर्शन से आर्य समाज मन्दिरों में हिन्दी की पढ़ाई होती है । वर्तमान में लगभग १२५ पाठशालाएँ हैं ।

छठी कक्षा की परीक्षा में १,१०० बच्चों ने भाग लिया था । परीक्षा-फल अच्छा था और सभी बच्चों को धार्मिक एवं साहित्यिक शिक्षा भी दी जाती है ।

निरीक्षक निम्न प्रकार हैं :

	नाम		*ज़िले*
१.	श्री सुग्रीम दलीप	-	पोर्ट लुई/पाँप्लेमुस
२.	श्री इन्द्रमन टीमल	-	रिव्येर जु राँपार
३.	श्री प्रभाकर जीऊत	-	फ़्लाक
४.	श्री अशोक कुमार रामप्रोसन	-	फ़्लाक
५.	श्री ईश्वरलाल रामखेलावन	-	फ़्लाक
६.	श्री चित्रसेन गोकुल	-	ग्राँ पोर

७. श्री ज्ञानदेव लिच्छू - ग्राँ पोर
८. श्री हरिदत्त लोफर - सावान
९. श्री जयपाल किसुन - मोका
१०. श्री देवव्रत सिरत्तन - प्लेन विलियेम्स

इन सभी निरीक्षकों का यह उत्तरदायित्व होता है कि वे देखें कि सभी सामाजिक पाठशालाओं में नियमित रूप से पढ़ाई हो रही है । पढ़ाई आर्य सभा के पाठ्यक्रम के मुताबिक होता है और यज्ञ-हवन, सन्ध्या आदि भी सिखाये जाते हैं । उन पाठशालाओं के अध्यापक-अध्यापिकाओं का मार्ग-दर्शन करें ।

यह समिति धार्मिक शिक्षा की पढ़ाई पर विशेष ध्यान देती है । परीक्षाएँ डी.ए.वी. कॉलिज, पोर्ट लुई, प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल कॉलिज, सेन्ट्रल फ़्लाक और प्रेज़िडन्सी कॉलिज में ली जाती है । विद्या विनोद, विद्या रत्न, विद्या विशारद और विद्या वाचस्पति की परीक्षाओं में ३०० से अधिक विद्यार्थी थे ।

पुस्तक लेखन

विद्या समिति के सहयोग से आर्य सभा ने गत वर्ष कक्षा I, II और III के लिए पुस्तकें छपवाई ।

श्री सत्यदेव प्रीतम और श्री महादेव ऋतु ने विद्या-समिति के अध्यापकों-परीक्षकों के सहयोग से चोथी पुस्तक की तैयारी कर दी है ।

श्री महादेव ऋतु ने मुझे बताया कि प्रकाशन के लिए प्रकाशक श्री अनिल वर्मा के पास 'स्टार प्रिंटिंग' आसफ़ अली गली, नई दिल्ली, भारत में पुस्तक पांडु लिपि भेजी गयी है ।

प्रेस समिति

पहले इस समिति के द्वारा श्रद्धानन्द प्रेस का संचालन तथा 'आर्योदय' पत्रिका के नियमित प्रकाशन का कार्य किया जाता है । वर्ष भर के अन्दर लगभग 'आर्योदय' के १५ अंक प्रकाशित किये गये । प्रत्येक मास के अन्त में 'आर्योदय' प्रकाशित किया जाता है । इस में ३६ पृष्ठ हैं । हर अंक की २,२०० प्रतियाँ छपती हैं । २,१०० तक ग्राहक हैं । हमारा 'आर्योदय' विदेशों में भी भेजा जाता है । सम्पादक मण्डल सेवा की भावना से निःशुल्क सम्पादन करता है ।

प्रेस-समिति का गठन निम्न प्रकार रहा :

प्रधान : श्री मूलशंकर रामधनी, एम.बी.ई., आर्य भूषण

सदस्य : श्री मोहनलाल मोहित ओ.बी.ई., आर्य रत्न

श्री सत्यदेव प्रीतम ओ.एस.के., सी.एस.के.

श्री विनयदत्त रामकिसुन, श्री शीतलप्रसाद प्रोआग, श्री जयचन्द लालबिहारी, एम.ए.एम.एड., पं. राजमन रामसाहा, पंडित धर्मवीर घूरा एम.बी.ई., ओ.एस.के., पंडित बेणीमाधव रामखेलावन, आचार्य दीपक आर्य, श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, श्री राजनारायण गति, श्री सन्तोष जगरनाथ और सभा प्रधान श्री जसकरण मोहित (दिवंगत) - एक्स ओफ़स्यो मेम्बर ।

समिति का मन्त्रित्व-दायित्व श्री आनन्द बंधन ने किया ।

सम्पादक मण्डल

प्रधान सम्पादक - श्री मोहनलाल मोहित, ओ.बी.ई. आर्य रत्न

(अब अवकाश पर हैं)

नोट : नवम्बर मास से श्री मूलशंकर रामधनी, आर्य भूषण, एम.बी.ई. प्रधान सम्पादक बने हैं ।

सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम, ओ.एस.के., सी.एस.के.

पं. राजमन रामसाहा

(क) प्रेस-समिति के श्री नारायणपत दसोई, पंडित विष्णुदेव मेघराज, पंडित उमा विरजानन्द और श्री आनन्द बन्धन 'आर्योदय' की प्रूफ़ रीडिंग करते हैं ।

डी.ए.वी. कॉलिज समिति

डी.ए.वी. कॉलिज १९६५ में स्थापित किया गया । कॉलिज के संचालन के लिए एक कमिटी का गठन किया गया है ।

सन् १९९६ में कमिटी की ६ बैठकों हुईं । कमिटी का गठन निम्न प्रकार रहा :

प्रधान : डा. हरिदत्त घूरा, आर्य भूषण

मैनेजर : श्री मूलशंकर रामधनी, एम.बी.ई., आर्य भूषण

प्रिंसिपल : श्रीमती रत्नभूषिता पुचुवा

उप-प्रिंसिपल : श्री धर्मदेव मोहेर

सचिव : श्रीमती नंदिनी श्रीमन्नतो

सदस्य : डॉ. रुद्रसेन नीऊर, श्री अशोक सिबरण, माननीय सुरेन्द्र दयाल, श्री देवऋषि बुलेल, ओ.एस.के., आर्य भूषण, श्री सत्येन्द्रलाल बन्धन, श्री उग्रसेन ओचराज, श्री चन्द्रदत्त प्रभु, श्री चन्द्रमणि रामधनी, एम.बी.ई., श्री प्रेमलाल चमन, श्री वीरेन्द्र मोहित, श्री प्रेमहंस श्रीकिसुन, श्री यशवन्तराय अमृतलाल पत्ति, श्रीमती नादिया कुपुसामी ।

हिन्दू एज्युकेशन ओथोरिटी समिति

आर्य सभा मोरिशस की दो प्राथमिक पाठशालाएँ हैं – वाक्वा में पंडित काशीनाथ किश्टो आर्यन वैदिक एडड स्कूल और लावाँचीर में रामसारूप रामगति आर्यन वैदिक एडड स्कूल ।

इस समिति की देख-रेख में इन दोनों प्राथमिक पाठशालाओं का संचालन किया जाता है ।

समिति का गठन निम्न प्रकार रहा :

प्रधान : श्री जयकृष्ण रामगति

उप-प्रधान : डॉ. जगदीशचन्द्र मोहित, सी.बी.ई.

मन्त्री : श्री विनेश कुञ्जल

सदस्य : श्री सत्यदेव प्रीतम बी.ए., ओ.एस.के., श्री रामसुभग गोबरधन, आर्य भूषण, श्रीमती मोक्षदा किश्टो, एम.ए., श्रीमती सन्ध्या चाकुवा, श्री मूलशंकर रामधनी, एम.बी.ई., श्री वेदमित्र जगेसर, श्री सन्तोष जगरनाथ, श्री देवपाल कौड़िया, श्री विद्यानन्द देवकरण, श्री सुदेश रूपन, श्री श्रद्धानन्द रामखेलावन, सी.एस.के. (दिवंगत), श्री महादेव ऋतु, पंडित धर्मवीर घूरा, एम.बी.ई. और सभा के प्रधान जसकरण मोहित (दिवंगत) आर्य भूषण एक्स ओफिस्यो मेम्बर ।

वाक्वा की पाठशाला में मैनेजर - श्री विनेश कुञ्जल जी हैं ।

१. ओथोरिटी के सुप्रबन्ध से आर्य भाई-बहनों के बच्चों को पहली कक्षा में दाख़िला मिला ।

हिन्दू एज्युकेशन ओथोरिटी ने बच्चों के हित के लिए अपना पूरा सहयोग दिया ।

रामसारूप रामगति आर्यन वैदिक स्कूल में गतिविधियों का आयोजन भी किया गया ।

मैनेजर - श्री जयकृष्ण रामगति ।

सभी पाठशालाओं के संचालन के लिए एक समिति का गठन किया गया जो निम्न प्रकार हैं :

प्रधान : श्री सन्तोष जगरनाथ

सदस्य : श्री नारायणदत्त भवन, श्री चन्द्रदत्त प्रभु, श्री धर्मजय डोमा, श्री अनिल मोहेर, श्री राजमन जगरनाथ, श्री अशोक सिबोरथ, श्री ज्ञानदेव लिच्छू, श्री बिसुन बुलाकी और सभा के प्रधान श्री जसकरण मोहित (दिवंगत) ।

१. समिति की ओर से पाठशालाओं की स्थिति की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए निरीक्षण-कार्य किया जाता है । अध्यापकों को शिक्षण सम्बन्धी सुझाव भी दिये जाते हैं ।

मोरिशस आर्य पुरोहित मण्डल

सलाहकार : डॉ. उदयनारायण गंगू

मान्य प्रधान : पंडित धर्मवीर घूरा, एम.बी.ई., ओ.एस.के.

प्रधान : पंडित प्रयाग बीका, आर्य भूषण, वि. वाचस्पति

उप-प्रधान : पंडिता धनवन्दी पोखराज

उप-प्रधान : पंडित राजमन बन्धन

मन्त्री : पंडित धर्मेन्द्र रिकाई

उप-मन्त्री : पंडिता दमयन्ती चिन्तामणि

कोषाध्यक्ष : पंडित मुखलाल लोकमान

उप-कोषाध्यक्ष : पंडित गुरुदेव चतुरी

उप-कोषाध्यक्ष : पंडिता कौशल्या लक्ष्मण

पड़तालक : पंडित माणिकचन्द बुधु

अंतरंग सदस्य : पंडित सहदेव बन्धन

पंडिता सुभावती बन्धन

सदस्य : सभी पुरोहित गण

आर्य पुरोहित मण्डल की बैठक हर महीने के प्रथम शनिवार को लगती है । सन् १९९७ में १२ बैठकें लगीं । हर बैठक में सत्यार्थ प्रकाश के एक-एक समुल्लास पर किसी एक पंडित या पंडिता द्वारा प्रकाश डाला गया । विचारों का आदान-प्रदान हुआ । हमेशा की तरह पर्वों को समाज मंदिरों में किस प्रकार मनाया जाए इस पर सलाह दी जाती है ।

शनिवार ६ दिसम्बर १९९७ की बैठक में विवाह से पूर्व युवकों और युवतियों को वैवाहिक जीवन के विषय पर परामर्श दिया जाता है । श्रीमती चन्द्रानी बखोरी ने इस विषय पर सुचारू रूप से कार्य किया है ।

हरेक बैठक में पुरोहित मण्डल के सलाहकार डॉ. उदयनारायण गंगू पंडितों एवं पंडिताओं को इस विषय पर सलाह देते रहे ।

हर वर्ष की तरह पुरोहित मण्डल की ओर से आर्य भवन में तीन अवसरों पर विशेष यज्ञ हुआ । जनवरी की बैठक में, श्रावणी के आरम्भ में आर्य भवन में और दिसम्बर में अंतिम बार में आर्य सभा द्वारा पंडितों एवं पंडिताओं को नव वर्ष के आगमन का उपहार दिया जाता है ।

७ जून १९९७ की बैठक में दिल्ली विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक महेन्द्र कुमर का जो पिछले तीन वर्षों से बी.ए. परीक्षा की देख-रेख के लिए मॉरीशस आए हुए थे, स्वागत एवं उद्‌बोधन हुआ ।

पुरोहित प्रशिक्षण समिति

इस समिति द्वारा नवोदित पुरोहितों को प्रशिक्षण देने का कार्य होता है ।

समिति का गठन निम्न प्रकार रहा :

प्रधान : श्री मूलशंकर रामधनी, एम.बी.ई., आर्य भूषण

सदस्य : श्री मोहनलाल मोहित, ओ.बी.ई., आर्य रत्न, पंडित राजमन रामसाहा, पंडित धर्मेन्द्र रिकाई, श्री मोहरलाल चमन, आचार्य दीपक आर्य, डॉ. देवलाल सोब्रन, श्री श्रद्धानन्द रामखेलावन (दिवंगत), ओ.एस.के., श्री सत्यदेव प्रीतम, ओ.एस.के., मन्त्री का कार्यभार श्री आनन्द बन्धन ने सम्भाला ।

समिति द्वारा प्रति शनिवार को प्रातः काल प्रशिक्षण दिया जाता है । रिफ्रेशर कोर्स, सभा के पुरोहितों के लिए किया जाता है ।

समय-सारिणी निम्न प्रकार थी :

संगीत	-	श्री मोहरलाल चमन
कर्मकाण्ड	-	पंडित राजमन रामसाहा
छुट्टी	-	
सामाजिक मनोविज्ञान/भाषा विज्ञान	-	श्री मूलशंकर रामधनी
रचना और व्याकरण	-	श्री सत्यदेव प्रीतम
संस्कृत	-	पंडित धर्मेन्द्र रिकाई

वर्ष के अन्त के जुटाव में नियमित रूप से प्रशिक्षण प्राप्त पुरोहितों-पुरोहिताओं को प्रमाण पत्र दिए गए ।

प्रत्येक शनिवार को प्रातःकाल ९.०० बजे से ११.३० बजे तक संस्कृत शिक्षा पंडित रोहित बिखारी द्वारा दी जाती थी ।

प्रत्येक शनिवार को प्रातःकाल ९.०० से १२.०० बजे तक आचार्य गण कुछ पुरोहितों एवं वैदिक धर्म में रुचि रखने वाले छात्र-छात्राओं को मन्त्र पाठ, श्लोकों का उच्चारण आदि सिखाते थे । अनेक महानुभावों ने इस पढ़ाई से लाभ उठाया है ।

पंडित सतीश बितुला शास्त्री द्वारा विभिन्न प्रन्तों के आर्य मन्दिरों में धार्मिक कक्षाओं का आयोजन हुआ । वे सन्ध्या और मन्त्र पाठ के उच्चारण का अभ्यास कराते थे । छोटे से बड़े सभी ने कक्षाओं से लाभ उठाया । लगभग ४०० से अधिक युवक और युवतियों ने इस सन्ध्या-मन्त्र-पाठ-कोर्स से लाभ उठाया ।

पुरोहित-प्रशिक्षण-समिति का प्रशिक्षण ओयोजित करने का उद्देश्य था कि छात्रों में पवित्रता और धर्म की भावना जागृत हो । चरित्र-निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक और सामाजिक कर्त्तव्य की भावना जागृत की जाए, सामाजिक और राष्ट्रीय संस्कृति के विकास का भाव विकसित किया जाए ।

गयासिंह आश्रम समिति

गयासिंह आश्रम की स्थापना १९४४ में किया गया था । निराश्रित एवं दुःखी, अनाथ महिलाओं की देख-रेख के लिए यह आश्रम आज तक सेवा रत है । आश्रम के संचालन के लिए एक समिति है जिसका गठन इस प्रकार हुआ :

प्रधान : श्री चन्द्रमणि रामधनी, एम.बी.ई.

उप-प्रधान : श्री बाल्मीक चूनी, एम.एस.के.

मन्त्री : श्री जगत प्रकाश तोरल एम.बी.ई.

उप-मन्त्री : पंडित बाल्मीक नरजन्द्वा

सदस्य : श्रीमती जानकी नागावा, श्रीमती सौभाग्यवती पावाकेल (दिवंगत), आर्य भूषण, श्री प्रिय रोशनी, श्री शिवदत्त भवानी, डॉ. यशवन्त बिसुनाथ, श्री जगदेव स्वयंबर, श्री उग्रसेन सोनागी ।

मैनेजर : श्री दैव ऋषि बुलेल, आर्य भूषण

उप-प्रबन्धक : श्री बिसुनदयाल गुलोब

प्रधान निरीक्षिका : श्रीमती जानकी बुलेल

उप-निरीक्षिका : श्रीमती सरस्वती पिनीत आर्य भूषण

आश्रम का कर्मचारी वर्ग

अधिष्ठात्री (Matron) - श्रीमती राधिका मणि

उपाधिष्ठात्री - श्रीमती मिला हनुमान

सेविकाएँ - श्रीमती जयन्ती मादुरापेन,
कुमारी अनीता रामफल और
कुमारी गीता सुखलाल

मुख्य रसोइया - श्रीमती सरोज वीराभाद्रेन

उप-रसोइया - श्रीमती अंजनी रुकुनी

आश्रितों की कुल संख्या १२० हैं । (अल्पवस्यक - ५, युवतियाँ - ३, बालिग आश्रिताएँ - ११२)

शिक्षण विभाग

३ बाल-आश्रिताएँ पूर्व प्राथमिक कक्षा में पढ़ रही हैं

२ बाल-आश्रिताएँ सी.पी.ई. की प्राथमिक कक्षा में पढ़ रही हैं ।

२ किशोर-आश्रिताएँ माध्यमिक स्तर पर (Form IV) में D.A.V. College में पढ़ रही हैं ।

आश्रम में हुई गतिविधियाँ

(क) श्रीमती राधिका मणि प्राथमिक स्तर से हिन्दी की पहली कक्षा से छठी कक्षा तक और माध्यमिक स्तर पर (प्रवेशिका से विद्या विशारद) तक आश्रितों को पढ़ाती हैं ।

(ख) सिलाई-शिक्षण - श्रीमती नवीना तपोस्या ।

(ग) सवेरे-शाम सन्ध्या होती है ।

(घ) प्रति रविवार को प्रातःकाल यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता है । यज्ञ के पश्चात् उपदेश, भजन, कीर्तन और सत्संग का प्रबन्ध किया जाता है ।

(ड.) समय-समय पर शाखा-समाजों एवं अन्य संस्थाओं द्वारा धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन आश्रितों की खुशियों के लिए किया जाता है । साथ-साथ आश्रितों के मनोरंजनार्थ, बसों की सुविधा दी जाती है जिससे वे देश के कोने-कोने में भ्रमण करने जाते हैं ।

(च) इस वर्ष में कुमारी सुनिता चुड़ामणि का विवाह श्री धर्मदेव जग्गू के साथ किया गया । विवाह खुशी के समां में सम्पन्न हुआ ।

जदुननन बालगोबिन आश्रम समिति

२६ आगस्त १९९५ में जदुननन बालगोबिन आश्रम का उद्घाटन हुआ । आश्रम के संचालन के लिए एक कमिटी का गठन किया गया है । श्री मोहनलाल मोहित जी, आर्य भूषण, आर्य रत्न, ने आश्रम का उद्घाटन किया ।

अध्यक्ष - श्री देव ऋषि बुलेल, ओ.एस.के., आर्य भूषण

उप-प्रधान - डॉ. नरदेव् जयपोल

मन्त्री - श्री सन्तो जगरनाथ

उप-मन्त्री - श्री राज पेडिगाडू

सदस्य - श्री राकेश बालगोबिन, श्री ईश्वरदत्त दसोई, श्री सतीश जहाजिया, श्री राजमन मिदिदीन, श्री मोतीलाल नन्कू, श्री सत्यदेव प्रीतम, ओ.एस.के., सी.एस.के., श्री मूलशंकर रामधनी, एम.बी.ई., डॉ. विश्वमित्र शर्मा जगेसर, श्री विद्यानन्द देवकरण, श्री जसकरण मोहित (दिवंगत) आर्य भूषण - सभा प्रधान के एक्स ओफ़िस्यो मेम्बर ।

जायदाद / बिल्डिंग समिति

भवनों तथा आर्य मन्दिरों के निर्माण तथा मरम्मत के कार्यों का भार इस समिति के उत्तरदायित्व पर है । साथ-साथ ज़मीनों की देख-रेख करती है ।

समिति का गठन निम्न प्रकार रहा :

प्रधान - श्री प्रेमहंस श्रीकिसुन

सदस्य - श्री सन्तोष जगरनाथ, श्री विजय लक्ष्मण, श्री श्रद्धानन्द

रामखेलावन (दिवंगत), सी.एस.के., श्री देवपाल कौड़िया, श्री केशवदत्त चिन्तामणि, श्री उदेश डोमा, श्री प्रवीणं डोमा, डॉ. रुद्रसेन नीऊर, श्री राजेन्द्रचन्द मोहित, श्री. शीतलप्रसाद प्रोआग, श्री मूलशंकर रामधनी, एम.बी.ई., श्री ईश्वरदत्त दसोई, श्री देव ऋषि बुलेल, ओ.एस.के., आर्य भूषण, सभा प्रधान श्री जसकरण मोहित (दिवंगत) आर्य भूषण ।

संग्राम सेवा सदन समिति

आर्य सभा मोरिशस ने ५ दिसम्बर १९९६ सो शराब, नशीली दवाओं, आदि बुराइयों से लोगों की रक्षा के लिए एक केन्द्र की स्थापना सें-पोल में की है, जो संग्राम सेवा सदन नाम से जाना जाता है । वहाँ शराब, नशीली दवाओं आदि से ग्रस्त लोगों की सेवा की जा रही है । इस के संचालन के लिए एक समिति का गठन किया गया जो निम्न प्रकार है ।

प्रधान - डॉ. रुद्रसेन नीऊर

मन्त्री - श्री मूलशंकर रामधनी, एम.बी.ई., आर्य भूषण

सदस्य - श्री सत्यदेव प्रीतम, ओ.एस.के., श्री विद्यानन्द देवकरण, डॉ. सतीश बुलेल, डॉ. उदयशंकर रामजतन, डॉ. केशव दिलचन्द, सभा प्रधान श्री जसकरण मोहित (दिवंगत) आर्य भूषण ।

संग्राम सेवा सदन प्रातःकाल ८.३० बजे से ६.०० बजे शाम तक खुला रहता है । निम्न डाक्टरों द्वारा निःशुल्क सेवा की जाती है ।

(क) सोमवार को प्रातःकाल ९.०० बजे से १२.०० बजे तक - डॉ. यशवन्त बिसुनाथ

(ख) मंगलवार को शाम के ३.०० बजे से ६.०० बजे तक - डॉ. स्वागत पूरण

(ग) शुक्रवार को शाम के ४.०० बजे से ६.०० बजे तक - डॉ. रुद्रसेन नीऊर

इस वर्ष में ५०० से अधिक व्यक्तियों को स्वास्थ्य लाभ हुआ ।

संग्राम सेवा सदन में निम्न कर्मचारी पूरे समय कार्य करते हैं ।

Officer in charge	-	श्री धरमदत्त शिवशंकर
Secretary/Typist	-	श्रीमती अमिता जोयकरण
Social Worker	-	श्री हरिदत्त चमन, एम.एस.के.
"	-	पं. रविन रामदोवर
Cleaner	-	श्रीमती कमलावती भगनी
Watchman	-	श्री राजेन्द्र कुमार भगनी
Co-ordinator from Arya Sabha	-	श्री आनन्द बन्धन

Trust Fund की ओर से श्रीमती परबतिया रघुपत्त, श्रीमती विमला जदुननन, श्रीमती सरस्वती मुसाफिर आदि कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त हुआ ।

आर्य सभा मोरिशस सभी डाक्टरों, श्री एदी रोज़, श्री वेद बखररिया और अन्य महानुभावों ने जो सेवा-सदन के हित में अपना सहयोग दिया, उन सभी को कृतज्ञता प्रकट करती है । आशा है कि देश को इन सभी बुराइयों से वंचित रखने के लिए सभी भाई-बहनों का सहयोग प्राप्त होगा ।

ध्रुवानन्द पुस्तकालय समिति

इस समिति के द्वारा आर्य सभा के उपर्युक्त पुस्तकालय पर विचार विनिमय किया जाता है ।

समिति का गठन निम्न प्रकार रहा :

प्रधान - डॉ. हरिदत्त घूरा आर्य भूषण

मन्त्री - श्री आत्मदेव शिवटहल

सदस्य - श्री जगदीश मकुनलाल, श्री विष्णु आपाडू,
श्री शीतल प्रसाद प्रोआग, आर्य भूषण
श्री श्याम पत्ति, श्री गिरजानंद तिलक,
श्री नारायणपत दसोई, श्री सत्यदेव प्रीतम, ओ.एस.के., सी.एस.के.
श्री मूलशंकर रामधनी, एम.बी.ई.,
श्री जयचन्द लालबिहारी, एम.ए., एम.डी.

आर्य महिला मण्डल

इस समिति के द्वारा देश भर की आर्य महिलाओं तथा युवतियों के मानसिक, आत्मिक, बौद्धिक तथा शारीरिक विकास के लिए विचार विमर्श किया जाता है ।

समिति का गठन निम्न प्रकार रहा :

मान्य प्रधान - श्रीमती कौशल्या लक्ष्मण

" - श्रीमती सरस्वती पिनीत आर्य भूषण

प्रधान - श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, एम.एस.के.

उप-प्रधान - श्रीमती डॉ. लक्ष्मी जोधन

"	-	श्रीमती सुभावती बन्धन
मन्त्री	-	श्रीमती धनवन्ती सालिक
उप-मन्त्री	-	श्रीमती अनीता बिलत
"	-	श्रीमती दमयन्ती चिंतामणि
कोषाध्यक्ष	-	श्रीमती सुशीला श्रीकिसुन
उप-कोषाध्यक्ष	-	श्रीमती निमावती कुंजल
पड़तालक	-	श्रीमती प्रभा जगरनाथ
"	-	श्रीमती रेशमी कुमारी बालक
सदस्य	-	श्रीमती बालिका कुंजल, श्रीमती सुखदा रामशरण, श्रीमती लाछो शिवशंकर, एम.बी.ई., श्रीमती धनवन्ती पोखराज, श्रीमती सत्यभामा प्रगास, श्रीमती बिन्दा जाहाल, श्रीमती सौभाग्यवती पावाकेल (दिवंगत) आर्य भूषण और श्रीमती पार्वती लक्ष्मण ।

आर्य महिला सेवा समिति

आर्य महिला सेवा समिति का गठन २८ जुलाई १९९६ में किया गया था । समिति का उद्देश्य–

(१) महिलाओं एवं युवतियों के उत्थान में योगदान देना है ।

(२) वैवाहिक और पूर्व वैवाहिक कोर्स का प्रबन्ध करना, जिससे नवविवाहित वर-वधू अपने वैवाहिक जीवन को अच्छी तरह से बीता सकें और अपने बच्चों को सुसंस्कृत बना सकें ।

इस समिति में ३२ सदस्याएँ हैं । समिति का गठन निम्न प्रकार रहा ।

प्रधान - श्रीमती चन्द्रानी बखोरी

उप-प्रधान - श्रीमती ज्ञानमती घूरा, ओ.बी.ई.

उप-प्रधान - श्रीमती प्रतिभा भोला

मन्त्री - श्रीमती रत्नभूषिता पुचुवा

उप-मन्त्री - श्रीमती राजकुमारी बिलट

कोषाध्यक्ष - श्रीमती नलिनी घूरा नन्कू

उप-कोषाध्यक्ष - कुमारी सुधा बसगीत

पड़ताकल - श्रीमती लक्ष्मी शान्ता और श्रीमती विमला बसगीत

सदस्याएँ - श्रीमती रनिता बखोरी, डॉ. लक्ष्मी जोधन, श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, एम.एस.के. श्रीमती ल. चमन बुजुहोरी, श्रीमती द. देबी, श्रीमती सन्योगिता गंगाफल, श्रीमती द. मानराज, श्रीमती एस. मोहेर, श्रीमती आ. प्रयाग, श्रीमती इ. वर्मा ।

मोरिशस आर्य युवक संघ

आर्य भाई-बहनों को नौजवान लड़कों और लड़कियों को वैदिक धर्म की ओर लाने के लिए तथा युवकों को सही मार्ग दर्शन देने के लिए आर्य सभा ने मोरिशस आर्य युवक संघ की पुनः स्थापना की है ।

मोरिशस आर्य युवक संघ ने युवकों-युवतियों के चरित्र-निर्माण, शिक्षा, व्यवहार, धर्म, शिक्षा आदि उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए कार्य किया है । इसकी समिति का गठन इस प्रकार था :

प्रधान	-	श्री राजेन्द्र प्रसाद रामजी, एम.एस.के.
उप-प्रधान	-	श्री रवीन्द्रनाथ टीमल
'	-	श्रीमती उमा गोकुल
मन्त्री	-	श्री विनयदत्त रामकिसुन
उप-मन्त्री	-	श्रीमती राजकुमारी बिलट
'	-	श्रीमती साधना जहाज़िया
कोषाध्यक्ष	-	श्री सतीश सोब्रन
उप-कोषाध्यक्ष	-	श्री देवराज रघुबर
'	-	श्री वेदपाल कन्हाई
जन सम्पर्क अधिकारी	-	श्री सुखराज बिसेसर
' ' '	-	श्री प्रेमचन्द जीतन
संस्कृति अधिकारी	-	श्री सोननजय चमन
खेल-खूद अधिकारी	-	श्री शिवराज दमरी
बालचर-समूह-संगठन-कार्य	-	श्री देवपाल कौड़िया
सलाहकार	-	श्री विनेश कुञ्जल
सदस्य	-	श्री धरमवीर गंगू, कुमारी रूपा ओकेज़, कुमारी अरुणी बसगीत, श्री नन्दकुमार झब्बू, श्री राजेन हरगोबिन, श्री सतीश जहाज़िया, श्री किरण महादुवा, सभा प्रधान श्री जसकरण मोहित (दिवंगत) अक्स ओफ़िस्यो मेम्बर ।

गतिविधियाँ निम्न प्रकार रहीं

१. मोरिशस आर्य युवा संघ ने युवक-युवती संघों के साथ बैठकें कीं जिससे एकरूपता की योजनाओं की तैयारी की जा सकी ।

२. अनेक स्थानीय युवक संघों के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मोरिशस आर्य युवा संघ ने सहयोग प्रदान किया उदाहरण निम्न संघों को - पाई, बोनोकेई, शामुनी, माहेबर्ग आदि ।

३. अनेक युवक संघों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं प्रवचन आदि के कार्यक्रमों का आयोजन किया । मोरिशस आर्य युवा संघ ने सहायता प्रदान की- ऐरनेस फ़्लोराँ, तायाक, शेमें ग्रेनियें, माहेबर्ग, क्युर्पीप रोड आदि समाजों को ।

वैदिक वाणी समिति

प्रत्येक रविवार को प्रातःकाल ६.०० बजे रेडियो पर होने वाले वैदिक वाणी कार्यक्रम की देख-रेख इस समिति का उत्तरदायित्व है । साथ-साथ कुछ विशिष्ट अवसरों पर प्रोग्राम प्रस्तुत करने के लिए भी ज़िम्मेदार है । उदाहरणार्थ ऋषि बोध, श्रावणी उपाकर्म एवं दीपावली और ऋषि निर्वाण ।

इस समिति का गठन निम्न प्रकार रहा :

प्रधान - श्री मूलशंकर रामधनी, एम.बी.ई., आर्य भूषण
उप-प्रधान - श्री शीतलप्रसाद प्रोआग, आर्य भूषण
सदस्य - श्री सन्तोष जगरनाथ, पंडित धर्मेन्द्र रिकाई, श्री सत्यदेव प्रीतम, ओ.एस.के., श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, एम.एस.के., पंडित सत्यप्रकाश भृगु, श्री श्रद्धानन्द रामखेलावन,

सी.एस.के., श्री चन्द्रमणि रामधनी, एम.बी.ई., श्री जसकरण मोहित, आर्य भूषण, सभा प्रधान - एक्स ओफ़िस्यो मेम्बर ।

मन्त्री का कार्य श्री आनन्द बन्धन जी ने सम्भाला ।

वैदिक विषयक भाषणों को प्रसारण-केन्द्रों द्वारा पेश करना इस समिति का कार्य है ।

संगीत समिति

वैदिक धर्म के प्रचार कार्य में संगीत का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है । यज्ञ तथा सन्ध्या आदि के बाद जो भजन गाये जाते हैं, जिन से श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव पड़े और साथ-साथ भक्तिपूर्ण वातावरण पैदा हो ।

समिति का गठन निम्न प्रकार रहा :

प्रधान - श्री बिनयदत्त रामकिसुन

उप-प्रधान - कुमारी सन्ध्या अंचराज

मन्त्री - श्रीमती विदवन्ती जहाल

उप-मन्त्री - श्री ओमप्रकाश शंकर

कोषाध्यक्ष - श्री रवीन्द्रनाथ टीमल

उप-कोषाध्यक्ष - श्रीमती सुभावती बन्धन

सदस्य - श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, एम.एस.के., श्री सतीश सोब्रन, श्री गोबरधनसिंह फ़ौदार, श्री देवराज रघुबर, श्री विनोद शिवदत्त, श्रीमती पार्वती लक्ष्मण

सलाहकार - श्री मोहरलाल चमन

पोर्ट लुई आर्य ज़िला परिषद्

पोर्ट लुई आर्य ज़िला परिषद् की बैठक प्रत्येक मास को आर्य-भवन, पोर्ट लुई में होता है ।

परिषद्-समिति का गठन निम्न प्रकार है :

माननीय प्रधान - डॉ. राजेन्द्र हरि

प्रधान - श्री धनीलाल लूट

उप-प्रधान - श्रीमती सौभाग्यवती पावाकेल (दिवंगत) आर्य भूषण

मन्त्री - श्री धरमदेव मोहेर

उपमन्त्री - श्रीमती सरस्वती पिनित

कोषाध्यक्ष - श्री सूर्यदेव रघुनाथ

उप-कोषाध्यक्ष - श्री बालकिसुन चुड़ामणि

सदस्य - श्रीमती सुदेवी बिका, श्रीमती शान्ति पदारथ, श्री सतीश सोब्रन, श्री राज सोब्रन, श्री सच्चिदानन्द भोयरब, श्रीमती जानकी नागावा, श्रीमती शोभा रूपन, श्री इन्दर प्रगास, श्री धनीलाल धनपत्त

सलाहकार - पं. मोहनलाल रुपन

पांप्लेमूस आर्य ज़िला परिषद्

इस परिषद् की बैठक प्रति मास और आवश्यकता पड़ने पर मास में दो-तीन बार भी लगती है ।

परिषद्-समिति का गठन निम्न प्रकार रहा :

मान्य प्रधान - श्री राजनारायण गति

प्रधान - श्री केशवदत्त चिंतामणि

उप-प्रधान - श्री प्रेमहंस श्रीकिसुन

उप-प्रधान - श्री परमानन्द शंकर

मन्त्री - श्री जयचन्द लालबिहारी, एम.ए.एम.डी.

उप-मन्त्री - श्रीमती रश्मि लालबिहारी

उप-मन्त्री - श्री रामचन्द्र सुकन

कोषाध्यक्ष - श्री जवाहरलाल जुटना

उप-कोषाध्यक्ष - श्रीमती सुशीला श्रीकिसुन

' ' - श्री देवदत्त खिरोधर

सदस्य - श्री सुमन रामचरण, श्रीमती निर्मला रामजतन, श्री धर्मानन्द ओचायबार

पड़तालक - श्री जगदीश ठाकुर और श्री छत्रदत्त हीरामन

रिव्येर जु रौंपार आर्य ज़िला परिषद्

इस परिषद् की बैठक लगभग प्रति मास होती रही । कभी-कभी आवश्यकता पड़ने पर अधिक बैठकें बुलानी पड़ीं ।

इस के अलावा तीन अवसरों पर बृहद् जुटाव भी हुआ ।

परिषद् का गठन निम्न प्रकार रहा :

मान्य प्रधान - श्री देवचन्द गोबरधन

प्रधान - श्री विष्णुदेव बिसेसर

उप-प्रधान - श्री हरिदेव हरजान

' ' - श्री आनंदत्त नबाब

मन्त्री - श्री सनत कुमार रामधन, एम.ए.

उप-मन्त्री - श्रीमती सावित्री रहजान

' ' - श्री सुरुजदेव दावराज

कोषाध्यक्ष - श्री रवीन्द्रनाथ टीमल

उप-कोषाध्यक्ष - श्री सुरेश कान्दरसिंह

सदस्य - श्रीमती लाछो शिवशंकर, एम.बी.ई., श्री सुनीलदत्त भोला, श्री भरद्वाज जोगी, श्री महेनजी सुचिता ।

फ़्लाक आर्य ज़िला परिषद्

इस परिषद् की बठक प्रति मास होती है और आवश्यकता पड़ने पर मास में अधिक बैठकें की गयीं । सन् १९९६ में परिषद् की १५ बैठकें लगीं ।

परिषद् का गठन निम्न प्रकार रहा :

मान्य प्रधान - श्री बालमीक चुनी

प्रधान - श्री कृष्णदत्त रामचर्ण

उप-प्रधान - श्री देवदत देबिया

' ' - श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, एम.एस.के.

मन्त्री - श्रीमती विद्यावती कास्यान

उप-मन्त्री - श्री अशोक कुमार रामप्रोसन

' ' - श्री सोनालाल नेमधारी

कोषाध्यक्ष - श्री धर्मराज डोमा

उप-कोषाध्यक्ष - श्री केवल नायक

' ' - श्री इन्द्रदेव बालगोबिन

पुस्तकाध्यक्ष - श्री सुखदेव जीतन

सदस्य - श्री विजय कुमार गोकुल, श्री गुरुदत्त बृजमोहन, श्रीमती राजवन्ती सन्धु, श्री प्रेमचन्द करमचन्द, श्रीमती निर्मला प्रयाग, श्रीमती ज्ञानती बालदन

सलाहकार - श्री शीतलप्रसाद प्रोआग

मोका आर्य ज़िला-परिषद्

इस परिषद् की बैठक प्रति मास होती है और आवश्यकता पड़ने पर मास में अधिक बैठकें बुलायी गयीं । सन् १९९६ में परिषद् का गठन निम्न प्रकार रहा ::

मान्य प्रधान - श्री जसकरण मोहित, आर्य भूषण

प्रधान - श्री चन्द्रमणि रामधनी, एम.बी.ई.

उप-प्रधान - श्री हंसराज हंस्ताबीर

उप-प्रधान - श्री चन्द्रदत्त प्रभु

मन्त्री - श्री हंसराज मंगर

उप-मन्त्री - श्री विद्यादत्त प्रभु

कोषाध्यक्ष - श्री कृष्णदत्त सिबरण

सदस्य - श्री बालचन्द तानाकूर, श्री जयपाल किसुन, श्रीमती इन्द्रावती भरोशी, श्रीमती धनवन्ती सालिक, श्रीमती सत्यवन्ती सालिक, श्री नन्द कुमार झब्बू

सलाहकार - डॉ. उदयनारायण गंगू, एम.ए.पी.एच.डी. और प्रान्त के सभी पंडित-पंडिताएँ ।

प्लेन विलियेम्स आर्य ज़िला परिषद्

इस परिषद् की बैठक लगभग प्रति मास होती है । सन् १९९६ में परिषद् का गठन निम्न प्रकार रहा :

मान्य प्रधान	-	श्री दुखराम नन्दलोल
प्रधान	-	श्री सत्यदेव प्रीतम, ओ.एस.के.
उप-प्रधान	-	श्रीमती राजकुमारी बिलट
मन्त्री	-	श्री सन्तोष जगरनाथ
उप-मन्त्री	-	श्री बिनयदत्त रामकिसुन
कोषाध्यक्ष	-	श्रीमती सत्यवती (सीता) रामयाद
सदस्य	-	श्री जीवन भीमा, आर्य भूषण, श्री मोतीलाल नन्कू, श्री विद्या स्वरूप रामदीन, श्रीमती भग्रती बालगोबिन, श्री महादेव ऋतु, श्री जयराम महादिया, श्री देवदत्त मितू, श्री दताराम मातापलट, श्री विरजानन्द सहोदरी, श्री हरिप्रसाद खेदू, श्री प्रह्लाद रामशरण
सलाहकार	-	ज़िले के सभी उपदेशक-उपदेशिकाएँ

ग्राँ पोर आर्य ज़िला परिषद्

इस परिषद् की बैठक हर मास के अन्तिम रविवार को होती है ।

परिषद् का गठन निम्न प्रकार रहा :

मान्य प्रधान	-	श्री धनपत्त रामधनी
प्रधान	-	श्री मूलशंकर रामधनी, एम.बी.ई.
उप-प्रधान	-	श्री भरत मंगरु
' '	-	श्री हरिदेव रामधनी
मन्त्री	-	श्री चित्रसेन गोकुल
उप-मन्त्री	-	श्री घनश्याम हेमराज
' '	-	पंडित सत्यप्रकाश बिगू

कोषाध्यक्ष - श्री सत्यव्रत शाहज़ादा

पड़तालक - पंडित श्याम धनेश्वर दायबू

सदस्य - स्वर्गीय श्री हरिप्रसाद गया, श्री श्रद्धानन्द एतवारी, श्री बेणीमाधव सुनकसिंह, श्री सुदन जीतन, श्री कुंजबिहारी सोमन, श्री राजनाथ नाईको

परिषद् के कार्यक्रमों में गति लाने के लिए पाँच उपसमितियों का गठन किया गया, जो निम्न प्रकार हैं :

१. परोहित समिति
२. प्रचार समिति
३. आर्य महिला समिति
४. संगीत समिति
५. आर्य युवक संघ समिति

सावान आर्य ज़िला-परिषद्

सावान आर्य-ज़िला परिषद् की बैठक हर मास के अन्तिम शनिवार को होती है । आवश्यक कार्य होने पर कभी-कभी मास में दो या तीन बैठकें भी बुलायी गयीं ।

सन् १९९६ में कमिटी का गठन निम्न प्रकार रहा :

प्रधान - राजेन्द्र प्रसाद रामजी

उप-प्रधान - श्री जगदीश मकुनलाल

' ' - श्री नारायणदत्त चितामन

मन्त्री - श्री भगवानदास बुलाकी

उप-मन्त्री - श्री सोननजय चमन

' '	-	श्री महीदत्त नेमा
कोषाध्यक्ष	-	श्री धर्मजय अबदूत
उप-कोषाध्यक्ष	-	श्रीमती रेशमा कुमारी बालक
सदस्य	-	श्री देवराज रघुबर, श्री लालमून जगरूप, श्री लक्ष्मीनारायण हरपाल, धीरज श्रीमन्नतो
पड़तालक	-	श्री सुरूजलाल भंजन
सलाहकार	-	प्रान्त के सभी पंडित-पंडिताएँ

ब्लाक रिवर आर्य ज़िला परिषद्

गत वर्ष आर्य सभा मोरिशस ने ब्लाक रिवर ज़िले में हिन्दू परिवार एवं अन्य भाई-बहनों में वैदिक धर्म का ज्ञान प्रदान करने के लिए एक योजना बनाई थी, जिससे वे अपने धर्म को समझ सकें और दूसरे धर्म को न अपनावें ।

इस निमित्त एक दो स्थानों पर प्रचार कार्य का आयोजन किया गया और इस की प्रतिक्रिया यह रही कि बेल ओम्ब्र में एक आर्य समाज और एक आर्य महिला समाज की शाखाएँ खोली गईं । एक भवन का निर्माण भी किया गया, जिसका उद्घाटन दिसम्बर मास के अन्त में किया गया । चुनाव क्षेत्र नं. १४ के प्रतिनिधीगण और अनेक महानुभावों ने अपनी उपस्थिति दी थी ।

इस योजना को सफल बनाने में श्री राजेन्द्र प्रसाद रामजी, सावान आर्य ज़िला-परिषद् के सदस्य, पंडित सोमारू, पंडित उमा और अन्य पंडितों का सहयोग प्राप्त हुआ ।

आर्य सभा मोरिशस

आर्य भवन, १, महर्षि दयानन्द गली, पोर्ट लुई, फ़ोन २१२-२७३०, फ़ाक्स : २१०-३७७८

१५ मई १९९७ को आर्य सभा मोरिशस की कार्यकारिणी समिति (अंतरंग सभा) का गठन सन् १९९७-१९९८ ई. के लिए निम्न प्रकार हुआ है :

नेता	-	श्री मोहनलाल मोहित, ओ.बी.ई., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न, आर्य भूषण, (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रतिनिधि)
प्रधान	-	श्री मूलशंकर रामधनी, एम.बी.ई., आर्य भूषण
उप-प्रधान	-	डॉ. रुद्रसेन नीऊर
‘ ‘	-	श्री चन्द्रमणि रामधनी, एम.बी.ई.
‘ ‘	-	श्री प्रेमहंस श्रीकिसुन
मन्त्री	-	डॉ. उदयनारायण गंगू, एम.ए., पी.एच.डी.
उप-मन्त्री	-	श्री सत्यदेव प्रीतम, ओ.एस.के. सी.एस.के.
‘ ‘	-	श्री जयचन्द लालबिहारी, एम.ए.एम.डी.
कोषाध्यक्ष	-	श्री राजेन्द्र चन्द मोहित
उप-कोषाध्यक्ष	-	श्री विद्यानन्द देवकरण
‘ ‘	-	श्री विष्णुदेव बिसेसर
पुस्तकाध्यक्ष	-	श्री राजेन्द्र प्रसाद रामजी, एम.एस.के.
सदस्य	-	डॉ. कोमलदत्त शिवगुलास

श्री देव ऋषि बुलेल, ओ.एस.के., आर्य भूषण
श्री सुधीर चन्द्र कन्हाई
श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, एम.एस.के.
श्रीमती विद्यावती कासिया
श्री भरत मंग्रूजी

यज्ञ के बाद ये गीत सर्वत्र गाये जाते हैं

आर्य उपासना

यज्ञ का गीत

यज्ञ रूप प्रभु हमारे
पूजनीय प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए ।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए ।।
वेद की गावें ऋचायें, सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक सागर से तरें ।।
अश्वमेधादिक रचाएँ, यज्ञ पर उपकार को ।
धर्म-मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को ।।
नित्य श्रद्धा-भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें ।
रोग-पीड़ित विश्व के, संताप सब हरते रहें ।।
भावना मिट जाए मनसे, पाप अत्याचार की ।

कामनाएँ पूर्ण होवें, यज्ञ से नर-नारी की ।।
लाभकारी हो हवन हर, जीवधारी के लिए ।
वायु-जल सर्वत्र हों, शुभ-गंध को धारण किए ।।
स्वार्थ-भाव मिटे हमारा, प्रेम-पथ विस्तार हो ।
इदन्न मम का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो ।।
हाथ जोड़ झुकाये मस्तक, वंदना हम कर रहें ।
नाथ करुणा रूप करुणा, आपकी सब पर रहे ।।

भजन

विश्व कल्याण की प्रार्थना

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोई ।
यह अभिलाषा हम सबकी भगवन् पूरी होई ।।
विद्या-बुद्धि तेज बल, सब के भीतर होई ।
दूध-पूत धन-धान्य से, वंचित रहे न कोई ।।
आप की भक्ति-प्रेम से, मन होवे भरपूर ।
राग-द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर ।।
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश ।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश ।।
हमें बचाओ पाप से, करके दया दयाल ।

अपना भक्त बनायकर, हमको करो निहाल ।।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार ।
धैर्य हृदय में वीरता, सब को दो करतार ।।
नारायण तुम आप हो, पाप-विमोचनहार ।
क्षमा करो अपराध सब, करदो भव से पार ।।
हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिए कृपा निधान ।
साधु-संत सुख दीजिए, दया नम्रता दान ।।

आरती

ओं जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनन के संकट, क्षण में दूर करे ।। ओं जय. ।।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का । स्वामी दुख. ।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।। ओं जय. ।।
माता पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किस की । स्वामी शरण. ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ किस की ।। ओं जय. ।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी । स्वामी तुम. ।
परम ब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ।। ओं जय. ।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता । स्वामी तुम. ।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता ।। ओं जय. ।।
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति । स्वामी सब. ।

किस विधि मिलूँ दयामय, ऐसी दो सुमति ।। ओं जय. ।।
दीन बन्धु दुःख-हर्ता, तुम रक्षक मेरे । स्वामी तुम. ।
करुणा-हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे ।। ओं जय. ।।
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा । स्वामी पाप. ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ।। ओं जय. ।।

दो शब्द

पं. धर्मवीर घूरा के जीवन को अनेक दृष्टियों से देखा जा सकता है । हिन्दी के कर्मठ प्रचारक, हिन्दी के विख्यात लेखक, आर्य समाज के समर्पित पुरोहित, मानवता के अनन्य समर्थक आदि रूपों में उनका अंशदान महत्वपूर्ण है ।

आज से चालीस वर्ष पहले मैंने पं. धर्मवीर घूरा को हिन्दी भाषा के अनुरागी एवं कर्मठ समाज-सेवक के रूप में देखा था । लेखक रूप में तो हिन्दी लेखक-संघ की स्थापना (१९६१) के पश्चात् ही उनका परिचय पाया । संघ के अध्यक्ष के रूप में उनकी कार्य-कुशलता मुझे निकट से देखने को मिली है । हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति उनका अनुराग सर्वथा प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है । आज भी हिन्दी जुटावों में कोई आए न आए किन्तु पंडितजी अवश्य अपनी उपस्थिति देकर हमारा हौसला बढ़ाते हैं ।

पं. धर्मवीर घूरा का बचपन अभावों में संघर्ष करते हुए बीता । फिर भी आर्थिक संकटों का सामना करते हुए वे आगे बढ़ते गये । मज़दूर से हिन्दी के शिक्षक बने, फिर हिन्दी के निरीक्षक बने । हिन्दी लेखक-संघ के

अध्यक्ष पद पर रहकर उन्होंने मॉरीशस में न केवल कवि-सम्मेलन की परम्परा को आगे बढ़ाया, बल्कि साहित्य सृजन की दिशा में नये हस्ताक्षरों को भी बढ़ावा दिया । हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में उनका योगदान नहीं भुलाया जा सकता । स्थानीय एवं भारतीय हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में उनके बहुत सारे लेख छप चुके हैं । उनका एक कहानी-संग्रह भी छप चुका है । इतिहास-लेखन में भी उनकी रुचि रही है । कई वर्षों से वे स्थानीय रेडियो से हिन्दी भाषा तथा साहित्य संबंधी (विद्वानों सं साक्षात्कार आदि) रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत करते आ रहे हैं ।

आर्य सभा के पुरोहित होने के नाते पंडितजी ने देश-व्यापी दौरा करके वैदिक धर्म एवं वेद-ज्ञान के प्रचार के साथ ही मानव-एकता पर बल दिया है । यह अपने आप में उन के जीवन की एक महान् उपलब्धि है । मॉरीशस सरकार उनकी समाज-सेवा के लिए उन्हें दो बार सम्मानित कर चुकी है । उन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी विभूषित किया गया है ।

पं. धर्मवीर घूरा ने पत्र-पत्रिकाओं में आर्य-समाज की गतिविधियों पर अनेक लेख प्रकाशित किए हैं । इन्हीं लेखों को उन्होंने प्रस्तुत पुस्तक 'मॉरीशस में आर्य समाज' में संकलित किया है । आशा है कि पाठकगण इस पुस्तक का स्वागत करते हुए पंडितजी के अनुभवों एवं विचारों से लाभ उठायेंगे ।

–डॉ. मुनीश्वरलाल चिन्तामणि
मान्य प्रधान, हिन्दी लेखक संघ
तथा अध्यक्ष हिन्दी संगठन ।
भूतपूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, महात्मा गांधी संस्थान, मोका
१५-७-९८

मॉरीशस हिन्दी लेखक संघ और उसके साहित्यिक कार्य

इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ

मॉरीशस हिन्दी लेखक संघ की स्थापना ९ दिसम्बर १९६१ को नेओ कॉलेज, राजधानी पोर्ट लुई में हुई थी । देश में हिन्दी के प्रचार के लिए अनेक हिन्दी प्रचारक संस्थाएँ जैसे आर्य सभा, हिन्दी प्रचारिणी सभा, हिन्दू महा सभा, गीता मण्डल आदि सक्रिय हो कार्य करते रहे पर एक ऐसी हिन्दी संस्था की आवश्यकता थी जो विशेष कर हिन्दी साहित्य सृजन के लिए पूर्ण रूप से कार्य कर सके । इसी बात को ध्यान में रखकर डॉ. मुनीश्वरलाल चिन्तामणि ने देश के कुछ लेखकों जैसे श्री धर्मवीर घूरा आदि का सहयोग पाकर हिन्दी लेखक-संघ की स्थापना की । वही हिन्दी लेखक-संघ आज ३७ वर्षों से लगातार साहित्य सृजन आंदोलन में कार्यरत है ।

मॉरीशस के हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि में हिन्दी लेखक संघ की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है । संघ के स्थापना-काल से मॉरीशस-हिन्दी-साहित्य के एक काल की शुरुआत माननी चाहिए । भारतीय साहित्यकार डॉ. धर्मेन्द्रनाथ ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है ।

देश के हिन्दी लेखकों को एक मंच पर लाना, नवोदित लेखकों का मार्गदर्शन, सृजनात्मक लेखन के प्रति उनमें अभिरुचि पैदा करना, उनकी रचनाओं को संकलित कर प्रकाशित करना लेखक संघ का मुख्य उद्देश्य रहा है । अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संघ ने कोई कसर नहीं छोड़ी । साहित्य-

गोष्ठी, साहित्य-सम्मेलन, कवि सम्मेलन, निबंध, कविता, कहानी, नाटक प्रतियोगिताओं का आयोजन करता रहा है । पुरस्कार वितरण, पुस्तक प्रकाशन, पुस्तक-विमोचन-समारोहों का आयोजन भी करता रहा है । संघ के सदस्य रेडियो, टी.वी. पर साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लेते रहे हैं । बाल-साहित्य को सम्मुन्नत करने के लिए सन् १९६५ में 'बाल सखा' शीर्षक से बाल पत्रिका का प्रकाशन संघ ने किया था । मॉरीशस में द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन (१९७६) तथा चतुर्थ-विश्व- हिन्दी-सम्मेलन (१९९४) को सफल बनाने के लिए संघ ने सराहनीय कार्य किया था । उस मौके पर "इन्द्रधनुष" तथा "हिन्दी लेखक संघ" तथा "साहित्य सृजन आंदोलन" पुस्तिकाओं का प्रकाशन भी किया था ।

हिन्दी लेखक संघ के ये प्रकाशन हैं :- १९६५ - नये अंकुर कहानी संग्रह, १९७० - गांधी स्मृति निबन्ध 'संग्रह, 'सुरभित उद्यान' १९ - निबंध, कविताएँ, कहानियाँ, 'इन्द्रधनुष' १९७३ - देश के हिन्दी लेखकों, हिन्दी सेवियों की चर्चा आशा-दीप - २२ कवि-कवयित्रियों की रजनाओं का संकलन, हिन्दी लेखक संघ और साहित्य सृजन आंदोलन - १९७३ लेखक - इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, "खिले सुमन" १९९५ - २३ कवि-कवयित्रियों का कविता-संकलन 'रसपुंज कुँडलियाँ' १९९७ संपादन डॉ. मुनीश्वरलाल चिन्तामणि ।

लेखक संघ के तत्वावधान में प्रकाशित अन्य पुस्तकें :- 'हिन्दी के आधार स्तम्भ लेखक डॉ. मुनीश्वरलाल चिन्तामणि, हास्य बाटिका, लेखक विष्णुदत्त मधु १९७३ में, वरदान कविता संग्रह, १९७८ में, लेखक इन्द्रदेव भाला इन्द्रनाथ, शादी से आबादी नहीं बरबादी, १९७४ में, लेखक मोती तोरल, मोरिशस में आर्य समाज, लेखक पं. धर्मवीर घूरा, डॉ. मुनिश्वरलाल चिन्तामणि की ये पुस्तकें - (१) हिन्दी के आधार-स्तम्भ (२) देश के फूल (३) सहमी-

सहमी सी आवाज़, 'सुदेवी भीमा जीवनी' प्रकाशक जीवन भीमा, 'यमराज और नचिकेता' लेखक पं. मणिलाल नौबत, 'आज की हिन्दी' १९७९ लेखक इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, 'मोरिशस की कहानियाँ' लेखक पं. घर्मवीर घूरा, शास्त्री १९९५, 'रसपुंज रचनावली' सम्पादक डॉ. मुनीश्वरलाल चिन्तामणि १९९७ ।

निम्न लोगों ने स्थिर निधियाँ संघ के पास छोड़ी हैं जैसे :- श्रीमती लखावती हरगोबिन, बेल रोज़, पं. धर्मवीर घूरा, वाक्वा, श्री जीयन भीमा, वाक्वा, पण्डिता चम्पावती बुम्मा, सें पियेर, श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, रिव्येर जी रांपार ।

ब्याज से पुस्तक-प्रकाशन और प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान पर आने वाले लोगों को संघ पुरस्कृत करता है ।

भविष्य में और लोग इस फ़ण्ड में सहयोग देंगे तो हम खुशी से स्वीकार करेंगे ।

विशेष

–१९६२ में फरवरी के अन्तिम सप्ताह के शनिवार को हिन्दी भवन में प्रॉ. रामप्रकाश के प्रधानत्व में लेखक संघ के पहले साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ था - 'जयशंकर प्रसाद जयन्ती' ।

–९ सितम्बर १९६२ को हिन्दी भवन में ही संघ द्वारा 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जयंती' श्री दीपचन्द बिहारी के प्रधानत्व में मनाई गई थी ।

–१९६६ में हिन्दी प्रचारिणी सभा ने पहली बार तुलसी जयन्ती के अवसर पर 'हिन्दी दिवस' मॉरीशस कॉलेज, क्युर्पीप में मनाया था । उस अवसर पर एक लेखक ने संघ से एक पुस्तक प्रदर्शिनी में सहयोग करने की

मांग की थी तो संघ ने उसमें अनेक हिन्दी पुस्तकें रखी थीं । प्रदर्शिनी देखने के लिए बहुत से महानुभाव आये थे । तब मुख्य मंत्री के पद पर बैठे शिवसागर रामगुलाम भी आये थे । वे प्रदर्शिनी से प्रभावित हुए थे । प्रचारिणी सभा के उस समय के मंत्री श्री सूर्यमंगर भगत ने चिन्तामणि जी को संघ के सहयोग के लिए धन्यवाद दिया था ।

बड़ी खुशी के साथ हिन्दी लेखक संघ को आर्य सभा के कर्णधार प्रारम्भ से अब तक कमिटियाँ और आवश्यक जुटाव करने के लिए आर्य भवन या डी.ए.वी. कॉलेज देते आ रहे हैं । इस के लिए संघ का हरेक सदस्य आर्य सभा के प्रति आभार प्रगट करता है और धन्यवाद भी कर रहा है ।

गौरव की बात यह भी है कि गत एप्रील मास में संघ के पूर्व मान्य प्रधान पं. बालमुकुन्द द्विवेदी जी भारत से मॉरीशस पधारे थे तो आर्य सभा और संघ ने सामूहिक रूप से उन का आर्य भवन में स्वागत किया था ।

हिन्दी लेखक संघ

कार्यकारिणी समिति १९९८-९९

मान्य प्रधान	-	डॉ. मुनीश्वरलाल चिन्तामणि
प्रधान	-	पं. धर्मवीर घूरा, एम.बी.ई., ओ.एस.के.
उपप्रधान	-	विष्णुदत्त मधु
मन्त्री	-	इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, साहित्यालंकार
उपमन्त्री	-	श्रीमती कल्पना लालजी एम.ए.

कोषाध्यक्ष - कु. चम्पावती बुम्मा

उपकोषाध्यक्ष - सुखलाल रंगू

पड़तालक - मणिलाल नौबत, सुमित्रा बुम्मा

संपर्क-संघ के मन्त्री - श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ से करें ।

पता - शेन्फेल्ड गली, रिव्येर जी रांपार

प्रकाशक - हिन्दी लेखक संघ

१-८-९८

पुस्तक संपादक मण्डल

डॉ. मुनीश्वरलाल चिन्तामणि

पं. धर्मवीर घूरा एम.बी.ई., ओ.एस.के.

इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, साहित्यालंकार

श्रीमती कल्पना लालजी एम.ए.

लालदेव अंचराज एम.एड.

विष्णुदत्त मधु तथा नारायणदत्त बर्नेरुजी

स्थापना ९ दिसम्बर १९६१

कार्यकारिणी समिति १९९८-९९

(संरक्षक मॉरीशस के भूतपूर्व प्रधान मंत्री सर शिवसागर रामगुलाम (१९७६-१९८६)

मान्य प्रधान	-	डॉ. मुनीश्वरलाल चिन्तामणि, २३, आवेन्यू मांग्ये, कात्र बोर्न
प्रधान	-	पं. धर्मवीर घूरा, एम.बी.ई., ओ.एस.के. सोल्फ़ेरिनो, लाकावेर्न, वाक्वा, फ़ोन ६८६६६१३
उपप्रधान	-	विष्णुदत्त मधु - राज मार्ग, त्रिओले
मंत्री	-	इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, साहित्यालंकार, शेनफ़ेल्ड गली, रिव्येर जी रांपार, फ़ोन ४१२७२८२
उपमन्त्री	-	श्रीमती कल्पना लालजी, एम.ए., होलिऊड जॉकशन, वाक्वा
कोषाध्यक्ष	-	कुमारी चम्पावती बुम्मा, पेची वेरज़े, सें पियेर
उपकोषाध्यक्ष	-	सुखलाल रंगू, न्यू बीछ रोड, रोश न्वार
पड़तालक	-	(१) मणिलाल नौबत, विद्यावाचस्पति, महाराज रोड, सुरिनाम (२) कुमारी सुमित्रा बुम्मा, पेची वेरज़े, सें पियेर
सदस्य	-	लालदेव अंचराज, रेधी रूपचन्द, पं. मुनीश्वरलाल घूलेट, सत्यवती बम्मा, सुरेश रामनाथ, विजयसिंह देबी, पं. धर्मवीर रंजीत, कमला सुकू, जगतप्रकाश तोरल, कर्मवीर सोनातन, ज्ञानवीर घूरा, कमला दुजित, जयवन्ती रंगू, रामदत्त हरलोल, कौशल्या लछुमन, रेणु बादल, केशवदत्त चिन्तामणि, रेशमी कुमारी बालक

पण्डित धर्मवीर घूरा, शास्त्री,

एम.बी.ई. वेद भूषण, स्वर्ण पदक विजेता

मॉरीशस हिन्दी लेखक संघ के प्रधान

भारत मॉरीशस मैत्री संघ के उपप्रधान

नशा विरोधी संस्थान के मान्य प्रधान

आर्य सभा के पुरोहित मण्डल के मान्य प्रधान

सन् १९६० ई. में सावान संगीत संघ के संस्थापक और मन्त्री सन् १९६१ ई. में हिन्दी प्रचारिणी सभा के परीक्षक और परीक्षा बोर्ड के मन्त्री ।

गत ५० वर्षों तक सामाजिक और ४० वर्षों तक सरकारी पाठशालाओं में पढ़ाने के बाद और १२ वर्ष सरकारी और सामाजिक पाठशालाओं में इन्सपेक्टर रहे । १९७१ से अवकाश प्राप्त कर चुके हैं।

जन्म १.१०.१९२६ तायाक, रिव्येर-दे-जाँगी । पिता - पण्डित श्री कृष्ण घूरा, भजनोपदेशक, माँ - जामवन्ती दीनू । जब धर्मवीर १० वर्ष के थे तो दोनों की मृत्यु हुई ।

सन् १९५१ से रेडियो पर इन्टर्व्यू का कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं और उसी वर्ष से लेखन प्रारम्भ किया । स्थानीय और विदेशी हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में इन के लेख और कहानियाँ प्रकाशित हैं ।

सन् १९५५ मे ५० देशों की यात्रा की और अनेक देशों के प्रसारण केन्द्रों में कार्यक्रम भी किये ।

१९६६ में बाल सखा, बच्चों की पाक्षिक पत्रिका के सम्पादक रह चुकने के अलावा निम्न पुस्तकों का सम्पादन भी आपने किया ।

(क) १९७६ "नये अंकुर कहानी संग्रह"

(ख) १९६६ "इन्द्र धनुष" लेखकों का परिचय

(ग) १९७० "गांधी स्मृति"

(घ) १९८३ "आकाश दीप" कविता संग्रह

(ङ) १९९५ "खिले सुमन" कविता संग्रह

आप की ये पुस्तकें छपी :

(क) सन् १९७३ ई. "मोरिशस में आर्य समाज"

(ख) सन् १९९५ ई. "मोरिशस की कहानियाँ"

लेखक के रूप में और समाजिक सेवाओं के लिए सरकार और अन्य संस्थाओं ने उन्हें प्रमाण पत्रों और स्वर्ण पदक तथा राजकीय अलंकरणों से सम्मानित किया ।

(क) १९६६ लेखन प्रतियोगिता में प्रथम आने पर स्वर्ण पदक द्वारा

(ख) १९८२ सनातन धर्म टेम्पलस् फेडेरेशन द्वारा

(ग) १९८२ मोरिशस के प्रधान मन्त्री, डा. सर शिवसागर रामगुलाम जी की सलाह पर इंग्लेण्ड की महारानी द्वारा स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ । एम.बी.ई.

(घ) १९८५ हिन्दी प्रचारिणी सभा द्वारा २ जुलाई सन् १९९८ ई. में ओ.एस.के. की पदवी मिली । प्रधान मन्त्री डॉ. नवीनचन्द्र रामगुलाम की सलाह पर गणराज्य के राष्ट्रपति महा महिम श्री कासम उत्तिम ने सम्मानित किया ।

(ङ) १९८९ भारत में आर्य संस्थान द्वारा "वेद भूषण" उपाधि से आप सम्मानित किये गये ।

(च) १९८९ में जापान रेडियो स्टेशन द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त की । प्रथम स्थान । सन् १९७९ में, सन् १९९४ ई. में मोरिशस में और सन् १९९६ ई. में ट्रिनिडाड में होने वाले विश्व हिन्दी सम्मेलनों में और अनेक आर्य महा सम्मेलनों में जैसे २१.१.१९९६, सन् १९७५ भारत में सन् १९८० लन्दन में आप के भाषण हुए ।

१९९० से शिक्षा सलाहकार सांस्कृतिक शिक्षा संस्थान

ज्येष्ठ पुत्र राज प्रधान मन्त्री जी के सलाहकार और पत्रकार हैं, बेटी प्रतिमा माध्यमिक स्कूलों में पढ़ातीं हैं और छोटे बेटे धनेश्वर अमेरिका में बैंक के उप-सलाहकार हैं ।

अभिमान

जीवन की अंधियारी में बहाऊँ आँसू खोकर मान ।
जग ने छोड़ा साथ पर आशाएँ छोड़ी न एक अभिमान ।।
नहीं मालूम कितनों का स्वाहा कराया इस तल पर ।
नहीं मालूम कितने आँसू बहा रहे हैं इस तल पर ।।
नहीं मालूम कितने बलिदान हो रहे हैं इस तल पर ।
छाती से लगाकरके केवल एक अभिशाप अभिमान ।।

कितने महाराजे बरबाद हुए हैं जीवन जगत में ।
कितने वेद पारखी ओझल भये इस बेदर्द जगत में ।।
कितने बेचारों के अरमान लुट गये इस जगत में ।
छाती से लगाकर के केवल एक अभिशाप अभिमान ।।

लंकेश्वर रावण का नामोनिशान भी रहा न बाकी ।
महान प्रतापी कंस का गुणगान भी रहा न बाकी ।।
कौरव भाइयों का बोलबाला आज भी रहा न बाकी ।
छाती से लगाकर के केवल एक अभिशाप अभिमान ।

इस संग्रह में निम्न कवियों की कविताएँ संग्रहीत हैं ।
श्री इन्द्रदेव भोला
श्री पूरणलाल गुरबिन
श्रीमती लखावती हरगोबिन
श्री पूजानन्द नेमा
श्री सूर्यदेव सिबरत (सूरज)
श्री महीदत्त नेमा
कुमारी शोभा रामगुलाम

आभार धन्यवाद

जो संस्थाएँ, नेता गण, प्रकाशक, संपादक, प्रसारक समाज सेवी आदि महानुभावों ने मुझे सहयोग दिया है और जिस ने भी किसी न किसी रूप में समाज सेवा, सांस्कृतिक सेवा, लेखन क्रिया या शिक्षण कार्यों में सहयोग दिया है, उन सब से साभार धन्यवाद पेश कर रहा हूँ ।

इतिहास अधूरा माना जाता है, इस प्रकाशन में जो कमियाँ हैं उन के बारे में भाइयों-बहनों से आग्रह है कि मुझे अपने पत्रों द्वारा संकेत

कीजिएगा । अगले प्रकाशनों में उन्हें दूर करने का प्रयत्न मिल कर करेंगे । गत ४२ वर्षों तक प्रेस के महानुभाव दर्जनों संसार छोड़ कर चले गए, क्या करें हम सब को जाना है न । विदेशों में जितने भी महानुभावों ने सहयोग दिया सब के प्रति विनम्रता के साथ आभारी हूँ । धन्यवाद ।

विनम्र सेवक
धर्मवीर घूरा
सोलफ़ेरिनो, वाक्वा - मॉरीशस
हिन्द महा सागर
जून १९९८

सत्यार्थ प्रकाश से शिक्षा

हम पढ़ें सत्यार्थ प्रकाश ।
ज्ञान है जिस में जैसे, तारों का आकाश ।।

इसे पढ़ जन बने विद्वान ।
सबों को बनावें गुणवान,
रहे कोई न नादान
सब पावें मान, सम्मान ।।

यह वेदों की खान
कह गये कवि महान
इसे लिख गये महर्षि दयानन्द
पढ़ पढ़ पावें, हम सानन्द ।।

लाये यहाँ सैनिक तिवारी
लिया था उन से सेवक बिकारी
अध्ययन कर, भूले दुनियादारी,
आर्य बनाये कितने मांसाहारी ।।

ग्रन्थ कर रहा, जग का प्रकाश
१४ सम्मुलास पढ़ें, पाकर आकाश
कृणवन्तो विश्वं मार्यम
पण्डित-पण्डिताएँ जीवन बनावें भूलें गम ।।

पं. धर्मवीर घूरा, शास्त्री

कॉलेज और निधि

पं. वासुदेव विष्णुदयाल जी ने वेदों, उपनिषदों और महर्षि दयानन्द कृत पुस्तकों में सत्यार्थ प्रकाश की भी बहुत ही व्याख्या की है । उन्होंने हमारे टापू में सर्वत्र जाकर प्रचार कार्य किया था ।

फ्लाक गाँव में इस्टर्न कॉलेज का नाम सन् १९९२ ई. में परिवर्तन करके प्रोफेसर विष्णुदयाल कॉलेज रखा गया । श्री जीता जी ने इस प्रकार इन ऐसे महान आचार्य जी के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की है । यह कॉलेज मोरिशस के श्रेष्ठ कॉलेजों में गिना जाता है । यहाँ पर ३,५०० विद्यार्थी हैं ।

श्री राधाकिसुन जी ने पं. वासुदेव विष्णुदयाल जी के नाम आर्य सभा में एक निधि कायम की है; इस निधि से सभा द्वारा हर वर्ष उनकी स्मृति में यज्ञ के बाद कुछ अन्य कार्यक्रम किये जायेंगे । ऐसी निधि दान दाताओं के सहयोग से रखी गई है । सब को बधाई ।

शिक्षण कार्य-योजना

योगी र. रमन जी ने कॉलेजों में हमारी भाषा और संस्कृति के पठन पाठन के लिए जो योजनाएँ चलाई है इस के लिए उन्हें भी बधाई है ।

हमारी सरकार के प्रति भारतीय भाषाओं के प्रति कार्य करने के लिए भी हम आभारी हैं ।


पं. धर्मवीर घूरा और सावित्री घूरा

ओ३म्

पण्डित धर्मवीर घूरा, एम.बी.ई., ओ.एस.के.

सावित्री घूरा

(भूतपूर्व मन्त्री रिव्येर-दे-जाँगी आर्य समाज की - विवाह अगस्त १९५४)

वेद भूषण, पुरोहित, स्वर्ण पदक विजेता, पत्रकार तथा लेखक, मान्य प्रधान मादक द्रव्य निषेध समिति के और उपदेशक मण्डल आर्य सभा के, प्रधान मोरिशस हिन्दी लेखक संघ, भूतपूर्व स्कूल इन्स्पेक्टर शिक्षा, कला एवं संस्कृति मंत्रालय, भूतपूर्व सम्पादक - बाल सखा पत्रिका लाकावेर्न, वांक्वा - मोरिशस - फोन ८६८ ६६१३

आर्य समाज मोरिशस प्रकाशन सन् १९७३ ई. में
मोरिशस में सम्पन्न हुए १२वें आर्य महासम्मेलन के मौके पर ।

प्रकाशन सन् १९९८ ई. में
मोरिशस में सत्यार्थ प्रकाश आगमन के शताब्दी उत्सव पर ।